इतिहाससंग्रह ॥

सङ्क्षिप्तशब्द ॥

दे० = देखो

क० = कथा

भूमिका ॥

हिन्दी भाषा की पुस्तकों में बहुधा स्थानोंपर इतिहास और वंशावली की आवश्यकता होती है और बहुत से पारिभाषिक शब्द पड़ते हैं जिनके समझाने के हेतु गुरु की आवश्यकता होती है यातो पढ़नेवाला आपही बहुतसी पुस्तकोंका वेत्ताहो तो काम चलसक्ता है इस कारण सुगमता के हेतु इस पुस्तक (इतिहाससंग्रह) की रचना बड़े परिश्रम से कीगई–इस पुस्तक में देवताओं और पौराणिक पुरुषों का सक्षेपवृत्तान्त और वंशावली और बहुतसे पारिभाषिक शब्दों, भूलोक, स्वर्गलोक और अर्थों का वर्णन है और सुगमता यह है कि इसका सूचीपत्र वर्णमालानुसार लिखागया है–

वर्णमालानुसार इतिहाससंग्रह का सूचीपत्र ॥

इतिहाससंग्रह॥

श्रीगणेशजी॥

नाम-गणराज, गजमुख, लम्बोदर, विनायक, द्वैमातुर, एकदन्त, हेरम्ब, विघ्नविनाशक-

भुजा-चार पिता-शिव माता-पार्वती भाई-षण्मुख, कुनमुख-

स्त्री-बुद्धि सिद्धि (विश्वरूप की कन्या)-

पुत्र-क्षेम (सिद्धिमे), लाभ (बुद्धिमे) वाहन-मूषक-

जब गणेशजी का जन्म हुआ तो सर्व देव स्तुत्यर्थ आये उनके साथ शनैश्चर भी था सबने गणपति का दर्शन किया परन्तु शनि अपना मुख पृथ्वी की ओर किये बैठ रहा इसका कारण पार्वतीजी ने पूछा शनिने उत्तर दिया कि जब मैं विष्णुतप करता था तो अपनी स्त्री को भी नहीं देखताथा इसकारण से मेरी भार्याने शाप दिया कि जिनको तुम देखोगे वह शिररहित होकर नष्ट होजायगा-इस को सुनकर श्रीपार्वतीजी ने कहा तुम गणपति प्रस

देखो कुछ हानि नहीं शनिने ज्योंही गणेश मुख देखा त्योंही उनका शिर कट कर गिरपड़ा-पार्वती जी विलाप करने लगीं देवगण पुष्पभद्रा नदी के तट पर गये और सोते हुये हाथी का शिर लाकर गणेश के धड़ पर जोड़दिया तभी से गजमुख कहलाये-और शनि पार्वती के शापसे लङ्गड़े होगये-

एक समय गणेश जी पौरि पर बैठे थे परशुराम शिवशिष्य इनके दर्शनार्थ अन्तःपुर में जाना चाहते थे गणेशने उनको जानेसे रोका इसकारण दोनों में युद्ध हुआ और गणेशजी का एक दांत इसी युद्ध में टूटा और एकदन्त कहाये-

एक समय श्रीशिवने स्वामिकार्तिक और गणेशजी से कहा कि जो पृथ्वी की परिक्रमा करके प्रथम मेरे पास पहुँचेगा वह प्रथम पूज्य होगा तब अपने अपने वाहन पर आरूढ़ होकर पृथिवी परिक्रमा के अर्थ चले गणेशजी पीछे रहकर मलीन हुये और पश्चात् नारदके उपदेश से रामनाम लिखकर और उसका परिक्रमा करके शिवनिकट प्रथम पहुँचे और प्रथम पूज्य हुये और स्वामिकार्तिक जिनके पश्चात् पहुँचे और निराश होकर क्रौञ्चपर्वत को अपना निवासस्थान नियत किया-

विष्णु ॥

नाम-हरि, कमलापति, चक्रधर, चक्री, गदाधर, शार्ङ्गधर, गरुडध्वज, भगवान्, पद्मनाभ, विश्वम्भर, श्रीश, नारायण आदि सहस्रनाम-

मूर्त्ति-रूप चिह्न-भृगुपद (भृगुका लात) वर्ण-श्याम

शस्त्र-चक्र आसन-शेषनाग स्त्री-लक्ष्मी

स्थान-क्षीरसागर, वैकुण्ठ- वाहन-गरुड़, रथ (चार घोड़ोंका जिनके नाम यह हैं शैव्य, सुग्रीव, मेघपुष्प, बलाहक और सारथी दारुक है)

अस्त्र-सुदर्शनचक्र शार्ङ्गधनुष, कौमोदकी गदा, नन्दक खड्ग-

वर्णित है कि जब भगवान् की इच्छा सृष्टि उत्पन्न करने की हुई तो शयन कालमें उनकी नाभि से कमल उत्पन्न हुआ और उससे सृष्टिकर्त्ता ब्रह्माहुये- और कर्णमल अर्थात् खूंट से मधु और कैटभ दैत्य हुये और हरिकरसे वध हुये और इसीमे मधुसूदन और कैटभजित् नाम हुआ-

अवतार-२४ जिनमें १० मुख्य है और जिनमें यह (*) चिह्न है-

१ सनक, सनन्दन, सनत्कुमार, सनातन जिनकी अवस्था उनके पिता ब्रह्मा के वरसे सदा ५ वर्षकी रहतीहै और ब्रह्मचर्यपूर्वक सदा योगाभ्यासी रहते हैं-

२ * वाराह-इस रूपसे पाताल से पृथ्वी को लाये (वाराहकथा देखो)

३ यज्ञपुरुष-यह रूप धरकर राजाओं को यज्ञमार्ग (यज्ञविधि) दिखलाया-

४ हयग्रीव-(शरीर मनुष्यवत् और मुख अश्ववत्) यह अवतार ब्रह्माको वेद पढाने के अर्थ हुआ था-

५ * नरनारायण-यह अवतार तपमार्ग दिखाने के अर्थ बद्रिकाश्रममें हुआ (रुचि-पिता, आकूती-माता)

६ कपिलदेव-सांख्यशास्त्र का उपदेश अपनी माताको लोक हितार्थ किया (कपिलकथा देखो)

७ दत्तात्रेय (अत्रिसुत)-राजा अलर्क और प्रह्लाद को वैराग्य पढाने के अर्थ हुआ-

८ ऋषभदेव (इनकी कथा निजदेवोंसे)-यह रूपधर जड सृष्टिका वृत्तान्त वर्णन किया-

९ पृथु-गऊरूप पृथ्वीसे ओषधी और अन्नादि दुहा-(पृथुकथा देखो)

१०*मत्स्य-राजा सत्यव्रत और सप्तऋषियोंको नौकापर बिठलाकर ज्ञानोपदेश किया-(मत्स्यकथा दे०)

११ * कच्छप–समुद्र मथते समय मन्दराचल निज पृष्ठपर धारण किया– (कच्छप क० दे०)

१२ धन्वन्तरि–(देववैद्य)–एक घट अमृतसे पूर्ण लियेहुये समुद्र से निकले (कच्छप क० दे०)

१३ मोहिनी–इस रूपसे असुरों से अमृत ले देवों को दिया–और उनको म दिरा पिलाया–(क० दे०)

१४ * नृसिंह–हिरण्यकशिपु को वध प्रह्लाद की रक्षाकिया (क० दे०)

१५ * वामन–राजाबलि को छला (क० दे०)

१६ हंस–सनत्कुमार को ज्ञानोपदेश किया–

१७ नारद–पंचरात्र की रचनाकी जिसमें वैष्णव धर्म वर्णित है–(क० दे०)

१८ हरि–गजको ग्राहसे बचाया–

१९ * परशुराम–दुष्ट क्षत्रियों के वधार्थ (क० दे०)

२० * रामचन्द्र–रावणवधार्थ (क० दे०)

२१ वेदव्यास–१८ पुराण और महाभारतादि रचनार्थ (क० दे०)

२२ * कृष्ण–कंसवधार्थ (क० दे०)

२३ बौद्ध–जीवहिंसानिषेधार्थ (क० दे०)

२४ * कल्की–म्लेच्छवधार्थ होगा (क० दे०)

ब्रह्मा ॥

नाम–विधि, चतुरानन, धाता, परमेष्ठी, हिरण्यगर्भ, आत्मभूत, स्वयम्भू, आदिकवि, सावित्रीपति, कमलज (विष्णु नाभि कमलसे उत्पन्नहुये)

भुजा–चार–

मुख–चार–४ वेदके कथनार्थ हुआ–ब्रह्माके प्रथम एक शीशथा जब सावित्री

को उत्पन्न करके उसमे भोगकी इच्छाकी तो द्विशिर हुये जब उसके पीछे दौड़े तो त्रिशिरहुये-इसी भांति चतुरानन और पचानन भी हुये अर्थात् जितनीवार कुदृष्टि की उतनेही मुखहुये-पांचवें शिरको भैरवरूप शिवने अपने अंगुष्ठ से काट डाला (भैरव क० दे०)

वाहन-हंस स्त्री-सरस्वती-जिसके नाम-शारदा,गिरा,विधात्री,सावित्री,ब्राह्मी आदिहैं-और वाहन इनका हंसिनी है जिससे वाक्शुद्धिकी उत्पत्ति है-

पुत्री-सरयू नदी (जिसको वशिष्ठ याचनपर उत्पन्न किया) गंगा नदी (भगीरथ के प्रार्थना से भूतल में आई)

महादेव ॥

नाम-हर, महेश, भव, त्रिपुरारि, शूली, चन्द्रमौलि, गंगाधर, पंचानन, रुद्र, गिरीश, नीलकंठ आदि सहस्र नाम हैं-

पिता-ब्रह्मा-जब ब्रह्माके कहनेपर सनकादि पुत्रोंने सृष्टि रचना अंगीकार नहीं किया तो क्रोधयुक्त होकर उनके एक पुरुष अपनी भृकुटी से उत्पन्न किया और वह उत्पन्न होतेही रुदन करनेलगा-इस कारण इनका नाम रुद्र हुआ और सृष्टिके उत्पत्ति की आज्ञा पाया-और भूत प्रेतादि सृष्टि उत्पन्न किया परन्तु उनसे अप्रसन्नहो ब्रह्माके निकटगये और कहा कि मेरी सन्तान दुष्ट होतीहै ब्रह्माने आज्ञा दिया कि तपके पश्चात् सृष्टि करो तो सन्तान उत्तम होगी-

रुद्र ११ हैं-पशुपति, भैरव, रुद्र, गिरिश, त्रिशेष, अघोर, भव, शंकर, कपर्दी, शूली, ईशान इन अवतारों को शिवने दैत्यवधार्थ धारणकिया जब देवता उनसे परास्त होगये थे-

रुद्राणी ११ हैं-धी, धृति, उष्णा, उमा, पूना, श्रुति, इला, अम्बा, इरावती, सिद्धा, दीक्षा-

नाम- कारणनाम-

त्रिपुरारि-त्रिपुरके दैत्योंका वध करना-(त्रिपुर व० दे०)

कपाली-एक समय पार्वतीजीने नारद के कहनेपर शिवजी से पूछा कि आपके कण्ठमें मुंडमाला क्योंहै शिवजीने उत्तरदिया कि तुम मेरी भक्ताहो जब २ तुम्हारा देहान्त होता है तब २ प्रेमवश तुम्हारे मुण्डों को पहिनता जाताहूं-पार्वतीजीने विनय किया कि तुम्हारा शरीर क्यों नहीं छूटता उत्तर दिया कि मैं बीजमन्त्र जानताहूं पार्वती

जी भी उस मन्त्रको विनयपूर्वक सीखकर अमर हुई और इसी मन्त्रको श्रीशुकदेवजी शुकशरीर में सुनकर अमर हुये–

गंगाधर–जब भगीरथ गंगाजी को भूतल में लाये तो उसके धार के वेग रोकने के हेतु अपने शिरपर शिवने धारण किया–

नीलकंठ–जब समुद्र मथने से हलाहल उत्पन्न हुआ तो देवगण को विकल देख शिवजी ने रा अमर कहकर पीलिया और मकार कहकर परमानन्द को प्राप्तहुये और वह कालकूट राम नाम प्रभाव से कण्ठ में स्थितरहा और शिवकंठ नीलाहुआ–

चन्द्रमौलि–चन्द्रमा तिलक में है इससे यह नाम हुआ–

मुख–चार–

नयन–प्रतिशिर तीन–परन्तु तीसरा नेत्र जो ललाट में है क्रोधसमय खुलता है जिसका तेज सूर्य समान है–

जनेउ–सर्प तिलक–चन्द्रमा वाहन–नन्दी नाम वृष

अस्त्र–त्रिशूल, वज्र, धनुष, परशु, नागपाश–

स्त्री–पार्वती (पार्वती व० दे०)

पुत्र–गणेश, स्वामिकार्तिक, कृतसुत (सती से) महावीर (अंजनी से)

लिंगपूजनका कारण यह है–सती के देहान्त पश्चात् मुनिवनों में नग्न विचरतेथे मुनियों की स्त्रियां कामातुर हो उनसे लिपटगई इस कारण मुनियों के शापसे लिंग गिरपड़ा जगत्पूज्य होनेके कारण उनके लिङ्गकी भी पूजा होने लगी–

*१२ ज्योतिर्लिंङ्गोंकेनाम– प्रतिष्ठा कारण–

१ सोमनाथ–सौराष्ट्र नगर (काठियावार) में जब चन्द्रमा का तेज दक्ष शापसे न्यून होगया तब इस लिङ्गको स्थापितकर चन्द्रकुण्ड भी बनाया–

भाडेश्वर, गुप्तेश्वर, मध्यमेश्वर, भूमीश्वर, धुंधेश्वर, शुभ्रेश्वर, तटेश्वर, धन्वेश्वर, त्रिसंधेश्वर, कपीश्वर, ध्रुवेश्वर, महादेवेश्वर, कपर्दश्वर, भील्लेश्वर, शरेश्वर, ललितेश्वर, त्रिपुरेश्वर, हरेश्वर, बाणेश्वर, श्रीश्वर, रामेश्वर—

प्रयाग में लिंग—ब्रह्मेश्वर, सोमेश्वर, भारद्वाजेश्वर, माधवेश, नागेश्वर, सर्वठेश्वर—

पत्तनमें—मृगेश्वर, दूरेश्वर, वैजनाथ, नागेश्वर,सिद्धेश्वर, कामेश्वर विमलेश्वर,व्यासेश्वर, भाडेश्वर, हुंकारेश्वर, कुमारेश्वर, शुक्रेश्वर, चंडेश्वर, सूर्येश्वर, भूमेश्वर,भूतेश्वर, ज्ञानेश्वर, पुरेश्वर,कोटेश्वर, रामेश्वर, कर्दमेश्वर, अचलेश्वर

पुरुषोत्तमपुरी में—भुवनेश्वर—

दक्षिण में ॥

चित्रकूट मे मदाकिनी पर—मत्तगयन्द, अत्रीश्वरनाथ—
सकर्षण पर्वतपर—कोटेश्वर— गोदावरीपर—पशुपति—
कालींजरपर्वतपर—नीलकण्ठ—

नर्मदातटपर—अमरतारेश्वर, परमेश्वर, सुरेश्वर, ब्रह्मेश्वर, रमेश्वर, विमलेश्वर, मदोरेश्वर, कुमारेश्वर, पुंडरीकपति, मंडपेश्वर, तीक्ष्णेश्वर, धनुर्द्धरेश्वर, शूलेश्वर, कुम्भेश्वर, कुबेरेश्वर, भीमेश्वर, सूर्येश्वर, नागेश्वर, रामेश्वर, नन्देश्वर, कन्तेश्वर, चन्द्रेश्वर, धूमकेश, मुरतेश्वर, वरचलेश्वर, सोमेश्वर, मगलेश्वर, हरेश्वर, इन्द्रेश्वर, दयेश्वर, नटिकेश्वर, कपीश्वर (पर्वतेश्वर)—

पश्चिम मे ॥

द्रुपदपुरी मे—रायेश्वर, कालेश्वर— मथुरा मे—गोपेश्वर, रंगेश्वर—
कान्यकुब्ज अर्थात् कनौज के निकट—मरोरेश्वर—

द्वारका में-द्वारकेश्वर-
पश्चिम समुद्र तटपर-गोकरण अर्थात् महाबल-

उत्तरमे ॥

नैमिषक्षेत्रमें-ललितेश्वर- गोकर्णक्षेत्रमें-दधीचेश्वर-चन्द्रभाल-
सुरप्रयागमें-ललितेश्वर, देवेश्वर- सुरप्रयाग के उत्तर-रुद्रेश्वर-
कनखल क्षेत्र में-दक्षेश्वर, बिल्वेश्वर-
[illegible] पर-नीलेश्वर-त्रिमूर्तेश्वर, नन्दीश्वर, भैरवेश्वर, शालिहोत्रेश्वर,
चन्द्रेश्वर, सोमेश्वर, पवनेश्वर, लक्ष्मणनाथ-
नैपाल में-पशुपति नाथ, मुक्तनाथ-

शिवके दश मुख्य अवतारो के नाम-

नाम अवतार-	नाम शक्ति-
१ महाकाल-	महाकाली-
२ तार-	तारा-
३ बालि-	भुवनेश्वरी-
४ विद्येश-	विद्या-
५ भैरव-	भैरवी-
६ छिन्नमस्तक-	छिन्नमस्तका-
७ धूमावन-	धूमावती-
८ बगलामुख-	बगलामुखी-
९ मातग-	मातगी-
१० कमल-	कमला-

अवतारों के नाम ॥

नाम- कारण वा सन्तोपदत्तान्-

१ रुद्र- देवगण दुःखनाशार्थ-

२ स्कन्द- तारक, थंरक और त्रिपुरनाशार्थ-

३ सद्योजात-(बालरूप) ब्रह्माको सृष्टि करने की आज्ञादी और उनो चारपुत्र-सनन्दन, नन्दन, विश्वनन्द, उपनन्द थे-

४ श्यामरूप-ब्रह्माजी के दर्शनार्थ-

५ रुद्र-
६ ईशान
७ शर्व
८ भव
९ उग्र
१० भीम
११ पशुपति
१२ महादेव-

यह अष्ट अवतार पृथ्वी, अग्नि, आकाश, यज्ञ, वायु, चन्द्रमा, सूर्य और जल रूपमें स्थित हैं-

१३ वैवस्वतमनु- ब्रह्मारक्षार्थ वाराह कल्प में-

१४ सारभ- जीवसुखाय

१५ ऋषभ- तथा

१६ दधिवाहन- तथा

१७ सोमसुरमा- तथा

१८ लोकाक्षा- तथा

१९ नन्दीश्वर- इ० दि०

नाम–	कारण–या कथाकोष दृष्टान्त–
२० भैरव–	क० दे०
२१ वीरभद्र–	क० दे०
२२ शरभरूप–	क० दे०
२३ यक्षरूप–	क० दे०
२४ प्रह्लादमुनि–	विष्णुमत शास्त्रार्थ–
२५ महावीर अथवा कपीश–	क० दे०
२६ मत्स्येन्द्र–	क० दे०
२७ वैद्यरूप–	क० दे०
२८ कृष्णदर्शन–	क० दे०

२९ ब्राह्मणरूप–ऋषभ मुनिके शिष्य महापुरुष के दर्शनार्थ–

३० हंसरूप–आहुक और आहुकी भीलके वरदानार्थ (जो दूसरे जन्म में नल वा दमयन्ती हुये–)

३१ भिक्षुक–जब विदर्भ देशके राजा सत्यरथ को शत्रुने मारडाला तो उसकी गर्भवती रानी वनको भागगई वहां पर उसके पुत्र उत्पन्न हुआ और जलपीते समय ग्राहने रानीको खालिया तिस बालकके रक्षार्थ यह रूप धारणकर एक बालक युक्त ब्राह्मणीसे पालन करावर और उसका नाम धिनगुप्तरख विदर्भ का राजा बनाया और उस ब्राह्मणीकापुत्र शुचिव्रत उसका मन्त्रीहुआ–

३२ इन्द्र (सुरजेश्वर)–व्याघ्रपाद के पुत्रने अपनी माता से गोदुग्ध मांगा परन्तु दरिद्रता के कारण जब न दे सकी तो वह बालक दूधार्थ शिवतप करने लगा और इन्द्रशिवने उसका मनोरथ पूर्ण किया–

३३ जटिलअर्थात् जटाधारी–गिरिजाको तप करते समय परीक्षाके पश्चात् विवाहार्थ वरदिया–

३४ नाटक (नर्त्तकनाथ)–हिमाचल और मैनाको इसरूप मे नाच गा प्रसन्न कर गिरिजा को निज विवाहार्थ काचा किया–

३५ किरात–अर्जुनने कौरवों को परास्त करने के हेतु शिव तप किया किरात शिवनेतप परीक्षा ले उनको पशुपति धनुष दिया जिससे उनका मनोरथ पूर्णहुआ–

३६ गोरक्षनाथ–यह अवतार योगशास्त्रके प्रचारार्थ हुआ उनके शिष्यों में गोपीचन्द्र मुख्य था–

३७ शङ्कर–अद्वैत अर्थात् संन्यास मत के उपदेश वा प्रचारार्थ–

३८ वामदेव–चारशिष्य–विरज, विवाह, विशोक, विश्वभावन उत्पन्न कर योगशिक्षा दी–

३९ तत्पुरुष–पीतवास २१ वें कल्प में यह रूप धार कर अपने चारपुत्रों को योग शास्त्रका उपदेश किया–(योगप्रचारार्थ)–

४० अघोर–शरिव्रत २२ वें कल्प में सृष्टयोत्पत्ति अर्थ ब्रह्मा को आज्ञादिया–

४१ ईशान–विश्वरूप २३ वें कल्पमें ब्रह्माको अपने चारपुत्रों (जटी, मुंडी, शिखंडी, अर्द्धमुंडी) सहित दर्शन दे उनको बुद्धि वा विद्या वर दिया–

४२ व्यास–इसरूपसे वेदरचना की–

४३ श्वेत–कलियुगके आदि में अपने ४ शिष्यों श्वेत श्वेत, श्वेतश्व, श्वेत, लोहित के द्वारा संसारमें योग प्रकटकिया–

४४ सुतार–अपने ४ शिष्यों–दुन्दुभि, सत्यरूप, ऋचीक, केतुमान द्वारा व्यासमें प्रचार किया–

४४ मदयन–गुरु व्यासने पुराणों के प्रचार हेतु शिवजी का ध्यान किया तो यह रूप धार कर शिवने अपने शिष्यों–विशोक, विकेश, व्यास, सुनवाश के द्वारा पुराण मतका प्रचार किया–

४६ सुहोत्र–शिवजीने यह रूपधारकर बृहस्पति–व्यास वाक्यानुसार अपने चार शिष्यों सुमुख, दुर्मुख, दुर्मद, दुरतिक्रम को योगमार्ग दिखाया–

४७ कनक–सूर्यकी प्रार्थना से यह रूपधारकर व्यास मतको अपने शिष्यों सनक, सनातन, सनन्दन, सनत्कुमार द्वारा प्रचलित किया–

४८ लोकाक्ष–मनु व्यासकी प्रार्थनासे यह रूपधारण कर अपने चार शिष्यों सुधामा, विरज, शंख, अम्बुज द्वारा द्वापरमें योगशास्त्र प्रकट किया–

४९ जैगीषव्य–इसरूपमें चारशिष्यों वराहन, सारस्वत, मेघनाद, सुवाहनको उपदेश दिया–

५० दधिवाहन–आठवें द्वारपर में वशिष्ठ व्यास की प्रार्थना से यहरूप धार कर पौराणिक मतको अपने चारशिष्यों आसुरि, पञ्चशिख, शाल्वल, कपिल द्वारा प्रकट किया–

५१ ऋषभ–नवें द्वापरमें सारस्वत व्यासने वेदका विभाग कर पुराणों को बना ना चाहा परन्तु उसकी सिद्धता न देखकर व्यासने शिवकी प्रार्थनाकी तब यह रूप शिवने धारण कर सहायता की–इनके चार शिष्य पराशर, गर्ग, भार्गव, अंगिरस थे–

५२ भृगु–त्रिधाराव्यास की प्रार्थनासे यह रूप धारणकर व्यास की कामना पूर्णकी उनके चारपुत्र–निरामित्र,तपोधन,गुप्त, भृग और तपोधनथे–

५३ तप–ग्यारहवें द्वापर में त्रिवृत्त व्यासके ध्यानसे यह अवतार लेकर उनकी

ताना पूर्णकी–उनके चार पुत्र–लम्बोदर, लम्बाक्ष, लम्बकेश, प्रलम्ब नामीथे–

५२ अत्रि–बारहवें द्वापर में भरद्वाज व्यासकी कामना पूर्णकी उनके चारपुत्र–सर्वज्ञ, समबुद्धि, साध्य, शर्व–थे–

५० वालि–तेरहवें द्वापरमें धर्मनारायण व्यासकी इच्छा पूर्णकी–

५३ गौतम–१४ वें द्वापरमें त्रिधीव्यासका मनोरथ सिद्ध किया–इनके चार पुत्र अत्रि, देवसद, श्रवण, सहिष्णु–

५७ वेदशिर–१५वें द्वापर में यह रूप धरकर अपने चार पुत्रों–कुणि, कुणबाहु, कुशरीर, कुनेत्रद्वारा व्यासकी सहायतार्थ निवृत्त मार्ग दृढ़किया–

५८ गोकर्ण–१६ वें द्वापर में धनंजय व्यासके सहायतार्थ गोकर्ण वन (अब हरक्षेत्र) में यह अवतार लिया जिनके चार पुत्र–कश्यप, उशना, च्यवन, बृहस्पति थे–

६० गुहावासी–१७ व द्वापरमें कृतजय व्यासकी कामना पूर्णकी उनके चार पुत्र–उतथ्य, वामदेव, महायोग, महाबल–थे–

६० शिखण्डी–१८ वें द्वापर में ऋतजय व्यासकी इच्छापूर्ण की उनके चारपुत्र–वाचश्रवा, ऋचीक, श्यावाश्व और सजनीश्वर थे–

६१ जगमाली–१९ वें द्वापरमें भरद्वाजव्यासकी इच्छानुसार अपने पुत्रों–रवय, यौवन, लोकाक्षा, कुम द्वारा उनकी वाञ्छा सिद्ध किया–

६२ अट्टहास–२० वें द्वापर में गौतम व्यासकी कामना अपने शिष्यों सीमन्त वरवरी, बुध, श्रावसु, किपिकधरा द्वारा पूर्णकिया–

६३ दारुक–२१ वें द्वापर में व्यास की इच्छानुसार यह रूप धारणकिया उनके पुत्र–प्लक्ष, दार्भायन, केतुमान–गौतम–थे–

६४ लांगली–२२ वें द्वापर में व्यास ध्यानानुसार अपने चार पुत्रों–भल्लवि,

मधुपुग, श्वेन, गुप्तवात—सहित यह रूप धारणकिया—

६५ श्वेत-लुणविन्दु व्यास की प्रार्थना से कालिंजर पर्वतपर अपने चार पुत्रों–औपधि, बृहदत्त, देवल, कव्य–सहित अवतारलिया–

६६ शूली–२४ वें द्वापर में कुश अर्थात् वाल्मीक व्यास की इच्छानुसार नैमिषारण्य में अपने पुत्रों सद्यहोत्र, युवनाश्व, शालिहोत्र, अहिर्बुध्न–सहित अवतारलिया–

६७ दण्डीमुण्डी–२५ वें द्वापर में ब्रह्मसत्त्व के पुत्र उपमन्य के मत प्रचलित करने के हेतु व्यास ध्यानानुसार अपने चार पुत्रों–चहूल, कुंडकर्ण, कुम्भाद और प्रावाहत–सहित सहायक हुये–

६८सहिष्णु–२६ वें द्वापर में पराशर व्यासके ध्यानानुसार अपने शिष्यों उलूक, विद्युतसम्बल, अश्वलायनसहित भद्रनाट नगरमें अवतरितहुये–

६९शवम्य–२७ वें द्वापरमें ज्ञानकर्ण व्यासके ध्यानानुसार–अपने चार शिष्यों अक्षपाद, सुमुनिकुमार, उलूक और वतस्य द्वारा योगशास्त्र प्रकटकिया–

७०लाकुलीश–२८ वें द्वापर में विष्णु व्यासके ध्यानानुसार सिद्धिक्षेत्र में अपने चार शिष्य–उशिक, गर्ग, मित्र और रूप सहित यह अवतारहुआ–

७१ वृषेश्वर–कथा देखो– ७२ पिप्पलाद–क० दे०–

७३ अवधूतपति–क० दे०–

७४ द्विजावतार–जब नाटक रूप धर हिमाचल से गिरिजा के साथ विवाहार्थ घरमागा तो शिवने दूसरारूप ब्राह्मण का धारणकर राजाको बहकाया वे मानगये परन्तु मुनियों के समझानेसे नहीं बहके–

७५ अश्वत्थामा–यह शिवका अवतार द्रोणाचार्य के तप करने से हुआ–द्रोणाचार्य की क० दे०—

तनय मनुष्य होगा-(मनुष्य क० दे०) और तुझको मलम्र केयहां आसहोगा-

वाल्मीकिजी ॥

नाम-अग्निदेव-

पिता-वरुण, वल्मीक (थेमॉर) इसीसे नाम वाल्मीकि- माता-चर्षणी-

जन्मतः तो इनका ब्राह्मण से था परन्तु इनका पालन किरातगृह हुआ और वहांपर एक किरातिनसे विवाहकर निज कुटुम्ब पालनार्थ बटमारी (चोरी) उद्यम किया करते थे-भाग्यवश एक समय इनको सप्तऋषि मिले उनके उपदेश से उल्टा राम नाम (मरा) जप कर ऐसे तप स्थितहुये कि इनके ऊपर थेमॉर लगगया बहुत दिन पश्चात् जब सप्तर्षि निज प्रतिज्ञानुसार आकर उन को वल्मीक से निकाल वाल्मीक नामरक्खा-और नाम के जाप प्रभाव से सर्वज्ञ हो रामकथा के प्रथमही रामायण (रामचरित्र) बनाई-जिसको वाल्मीकजीने सीतापुत्र लव, कुश को जिनका जन्म, पालन और विद्यालाभ इन्हीं के आश्रम में हुआ था पढ़ाया जो इस रामायण को रागपूर्वक गाया करते थे-

नारदमुनि ॥

नाम-देवऋषि- पिता-ब्रह्मा-

जब वेदव्यास १८ पुराण और महाभारत बनाचुके और इस चिन्ता में थे कि कुछ और करें इतने में नारदमुनि आय और कहा जबतक तुम रामचरित्र न कहोगे तबतक तुम चित्त शान्तिको न प्राप्तहोगे क्योंकि देखिये मैं एक दासी का पुत्र था जो एक साधुसेवक ब्राह्मण के यहां रहकर साधुसेवा किया करती थी और मैं सब साधु जन जाना और उनके मुखारविन्द से रामकथा सुना करताथा-पाचवर्ष की अवस्था में जब मेरी माता का देहान्त हुआ तो मैं उसी उद्देग और रामकथा श्रवण के प्रभाव से बनमें तपकरने लगा जिससे श्रीहरि

प्रसन्न हो निजदर्शन देकर एकवीणा दिया जिस में मैं हरिगुण गाया करताहूं और यहभी वरदान दिया कि जब तुम्हारा दूसरा जन्म ब्रह्माके अगूठेसे होगा तो हम तुम को फिर दर्शन देंगे जब मैं ब्रह्मसुत हुआ तब फिर तप करनेलगा जिससे भगवान् प्रसन्नहो निजदर्शनपूर्वक यह वरदिया कि तुम्हारा गमन सब लोकमें होगा और जब चाहोगे तब तुमको दर्शन देंगे-इस श्रवणानुसार वेदव्यासने बदरिकाश्रम में जा श्रीमद्भागवत विरचा-

एक समय नारदजी गंगोत्तरी पर्वतपर ऐसे तपस्य हुये कि इन्द्रको यह भय हुआ कि नारद मेरे राज्यार्थ तप कररहा है इस कारण से कामदेव को नारद तप विघ्नार्थ भेजा परन्तु नारद तप भंग करने में मन्मथ अपने को असमर्थ देख कर नारदजी के चरणोंपर निज अपराध क्षमार्थ गिरा और इन्द्रलोक को गया इस पश्चात् नारद अभिमान युक्त शिव और ब्रह्मा के रोकनेपर भी श्रीविष्णुजी से वर्णनकिया भक्तोपकारी विष्णुने नारद अभिमान नाशार्थ शीलनिधि राजाकी कन्या का स्वयम्वर अपनी मायासे विरचा उस कन्या के प्राप्तार्थ विष्णुसे उन्हका रूप मांगा परन्तु हरिने कपि मुख देदिया जिससे उस कन्याने इनको न बरा जब नारदने शिवगण के कहनेपर अपना मुख देखा तो क्रोधितहो शिवगण को राक्षस होने और विष्णुको रामावतार में सीता वियोग होनेका शापदिया-

अगस्त्यमुनि ॥

नाम-घटज, कुम्भज, घटयोनि- पिता-मित्रावरुण-

माता-उर्वशी अप्सरा- भाई-वशिष्ठजी, अग्निजिह्वा- स्त्री-लोपा-

जन्म-मित्रावरुण के तपस्थान में आकाशमार्ग से उर्वशी अप्सरा जातीथी उसको देख मित्रावरुणका वीर्य स्खलित हुआ जिसको उन्होंने एक घट में रखदिया जिससे अगस्त्य और वशिष्ठजी उत्पन्न हुये-

विंध्याचल को अपनी उंचाईपर अतिअभिमान था उसके दूर करने हेतु नारद ने सुमेरुगिरि की उचाई की प्रशंसा की जिससे विंध्याचल लज्जितहो ओंकारनाथ को स्थापितकर शिव तप करनेलगे और वर पाकर इतना बढ़े कि सूर्यकारथ रुक गया-जिससे देवता और मुनि शिवकी आज्ञानुसार काशी में जा अगस्त्य की प्रार्थना की अगस्त्यजी संसार को दु:खित देख अपने शिष्य विंध्यके निकटगये तो विंध्यने साष्टांग प्रणाम किया मुनिने कहा कि हम दक्षिण को जातेहैं जबतक यहा से न लौटें तबतक ऐसेही रहना और आजतक मुनिने विंध्यको दर्शन नहीं दिया-

जब समुद्रने टिटिहा के अण्डेको हरलिया तब विष्णुने पक्षी का दु:ख और समुद्र के अभिमान नाशार्थ अगस्त्य को आज्ञादी कि समुद्र को पीलो तब अगस्त्यने समुद्र को पीलिया पुन: समुद्र की प्रार्थना से उसके जलको छोड़दिया-

चन्द्रमा ॥

नाम-राकेश, सुधाकर, शशि, द्विजराज, सोम, उडपति आदि-

गुरु-बृहस्पति- स्त्री-रोहिणी आदि २७ नक्षत्र-(दक्ष क० दे०)-

वाहन-मृग- मूर्त्ति-अर्द्धचन्द्र- बलि-पलाश-

कलंक-एक समय चन्द्रमा कामवशहो अपने गुरुपत्नी से भोग किया (जिससे बुधकी उत्पत्ति है) इस कारण बृहस्पतिने क्रोधकर शापदिया जिस का श्याम चिह्न आजतक चन्द्रमा में दीख पड़ताहै-

रोग-क्षयी-(अपनी रोहिणी स्त्री को बहुत चाहतेथे इससे इनकी और स्त्रियोंने अपने पिता दक्षसे गिला किया तो चन्द्रमाने दक्षसे प्रतिज्ञाकी कि आजसे अपनी सब स्त्रियोंको तुल्य मानूंगा-परन्तु यह प्रतिज्ञा पूर्ण न होनेके कारण दक्षने शापदिया जिससे यह रोग हुआ-

दोष नीति विरुद्ध है इस कारण मैं तुमको शाप देताहूं कि मर्त्यलोक में १०० वर्षतक दासी पुत्रहो (यह विदुर नाम से प्रसिद्ध हुये) इस सौ वर्षतक सूर्यने धर्मराज का कार्य्य किया–

नाम चौदह यमों के–यम, धर्मराज, मृत्यु, अन्तक, वैवस्वत, काल, सर्वभूतक्षय, औदुम्बर, दध्न, नील, परमेष्ठी, वृकोदर, चित्र, चित्रगुप्त,–

शुक्र ॥

नाम-शुक्राचार्य, दैत्यगुरु, एकनयन, भार्गव (भृगुसुत)—

वाहन-मेढक- पिता-भृगुमुनि माता-ख्याति- स्त्री-जयन्ती-

कन्या-देवयानी(ययाति की स्त्री) जिसने बृहस्पतिके पुत्र कचसे विवाहकी इच्छाकी परन्तु कचने अंगीकार न किया तो इस कन्याने उसको एक राक्षससे मरवाडाला और शुक्रने सञ्जीवनमन्त्र (जिसको कच सीखने गया था) से उसको जिलादिया और यह विद्या शुक्रने शिरसे सीखाथा–

जब राजा बलि वामनजी को पृथ्वीदान करनेलगे तो शुक्रने दान देनेको रोका परन्तु बलिने न माना तब शुक्र गडुये के टोंटी में सङ्कल्प विघ्नार्थ सूक्ष्मरूप से पैठगये सर्वज्ञ वामनने कुशाग्र उस टोंटीमें डालदिया जिससे शुक्र एक नयन हुये–

कुबेर ॥

नाम–धनेश, धनपति, धनद, गुह्यकेश्वर, मनुष्यधर्म्मा, राजराज्य, पौलस्त्य, नरवाहन, वैश्रवण (पुलस्त्यकी कथा दे०)–

पिता–विश्रवा (पौलस्त्य) माता–भरद्वाजकी कन्या–

वाहन–पुष्पक विमान, नर पालकी–

राज्य—लंका (प्रथम)—अलकापुरी (पश्चात्) वाटिकाकानाम—चैत्ररथ—
अस्त्र—(सूर्य द० दे०) स्त्री—सर्वसम्पत्ति, चर्वीयत्ती—
पुत्र—नलकूवर और मणिग्रीव जिनको शिवतपसे धनलाभ हुआ जब यह दोनों एक समय अपनी स्त्रियों सहित जलविहार कररहे थे नारदमुनि वहा पर जा निकले परन्तु यह दोनों विहारासक्त उनको प्रणाम न किया इस कारण मुनिके शापसे गोकुलमें यमलार्जुन नामी आंवला के वृक्षहुये जिनको श्रीकृष्ण ने उद्धार किया और अपने पूर्वरूपको प्राप्तहुये—

जब तपबल से कुबेर को पुष्पक विमान और धनपतिपद मिला तो विश्रवा (पिता) के पास वासस्थान की वाञ्छा से गये और अपना वरदान लाभ उन से वर्णन किया यह सुनकर विश्रवाने कुबेर से कहा कि लंकामें (जिसको दैत्य विष्णुभय से त्यागकर पाताल में जारहे थे) जा गमन करो—

एक समय सुमाली दैत्य पाताल लोकसे घूमताहुआ लंकामें अपनी कन्या कैकसी सहित पहुँचा और ऐश्वर्ययुक्त कुबेरको देखकर उसने अपने मनमें विचार किया कि यदि मैं अपनी कन्या कैकसी को विश्रवा को दूं तो अवश्य ऐसाही प्रतापवान् पुत्र इस कन्या के होगा तदनन्तर विवाह करदिया—जिससे रावण उत्पन्न हुआ और ब्रह्माके वरसे प्रतापयुक्त हो लंकाको कुबेर से छीनलिया और यही इसके नानाकी इच्छाथी—तब कुबेरने निरंतर का अलकापुरीका राज्य पाया—

शेषनाग॥

नाम—सहस्रमुख, धरणीधर, फणीश, अहिराज—
मुख—१००० जासे निरन्तर भजन हुई—
राज्य—पाताल जहां नागकन्यायें इनकी सेवा करती है—
अवतार—लक्ष्मण बलराम और संकर्षण नाम रुद्र—

चौदह भुवन इन्हीं के मस्तकपर हैं और महाप्रलय में सकर्षण रुद्रके मुखमे अग्नि निकलकर सर्वलोक को नाश करतीहै–

पृथु ॥

जन्म–जब महापापी राजावेन ऋषियों के शापसे मरगया तो पृथ्वी को विना राजा देख वेनकी दाहिनी भुजा मथकर राजा पृथुको उत्पन्न किया–

स्त्री–अर्चि– पुत्र–विजिताश्व आदि पांचपुत्र–

कन्या–पृथ्वी, एक समय बड़ा अकाल पड़ा कि भूमि निर्बीज होगई तो राजाने भूमिको नाश करना चाहा भूमिने राजा से डरकर कहा कि जब तुम मेरे ऊंच खालको सम करदो तो सर्वअन्न और औषधि आदि उपजेंगे राजाने ऐसाही किया इस कारण भूमि का नाम पृथ्वी हुआ–

इस राजा ने १०० अश्वमेधयज्ञ करने का सङ्कल्प किया और हर यज्ञमें राजाइन्द्र अपने राज्य छीन जाने के भयसे यज्ञ अश्वको चुराले जाता था परन्तु विजिताश्व उसको छीन लाता था इस प्रकारसे ९९ यज्ञ पूर्णहुई जब सवायज्ञ करनेका समय आया तो नारद और ब्रह्माने इन्द्रराज्यरक्षार्थ पृथुको रोक दिया कि तुम सवा यज्ञ न करो नारदप्रार्थनानुसार नारायण ने इनको दर्शन दिया और सप्तऋषियों के उपदेशसे वन में योगाभ्यास करके परमधामको गये और इनकी स्त्री सती होगई–इनके पीछे विजिताश्व राजा हुआ–

तुलसीवृक्ष ॥

नाम (प्रथम)–वृन्दा– पति–जालधर (जालधर क० दे०)

वृन्दा ऐसी सती थी कि उसके सतके प्रभाव से उसका पति किसीसे नहीं मारा जासक्ता था तो विष्णुने उसका सत भगकर उसके पतिको शिवसे वध कराया–जब नारायणका छल वृन्दाको ज्ञान हुआ तो उनको अपना पति बनाने

हेतु वर मागा तब लक्ष्मीने वृन्दाको शाप दिया कि तू वृक्षहोना और थीना रावणने प्रसन्न हो शालिग्राम मूर्ति धारण कर उसको अंगीकार किया कि यह अवतक उनके शीशपर चढ़ाई जाती है–

कालनेमि ॥

जब हनुमान्जी लक्ष्मणजी के लिये सजीवनमूल लेनेजाते थे तो हनुमान्जी के मार्गविघ्नके हेतु रावण आज्ञासे मकरीकुंड (जो विजयुवा ग्राम तहसील षादीपुर जिला सुल्तानपुरमें है) के निकट एक मुनि आश्रम अपनी मायासे बनाकर मुनिवेष से बैठा–हनुमान्जी पियासे हो मुनिनिकट गये उसने मकरी कुंडमें जल धनन्मादिया जलपीते समय मकरी अर्थात् मगरने पकड़लिया हनुमद् कर से वधहो मकरीने अपना पूर्वरूप अप्सराका धर हनुमान्जी से कहा कि यह मुनि रावणका भेजा हुआ राक्षसहै यह सुन हनुमान्जीने उसकोभी वधकिया– इस आश्रम में हर मासमें बड़े मगलके दिन महावीरका बड़ा मेला लगता है–

रावण ॥

जन्म–कुबेर क० दे०   पूर्वजन्म–जय विजय क० दे०

मुख–दश–   भुजा–बीस–   पिता–विश्रवा अर्थात् पौलस्त्य–

माता–कैकसी (सुमाली की कन्या)

स्त्री–मन्दोदरी (मयकी कन्या जो पचकन्यामें से है)

मंत्री–मालवन्त (सुमाली)

वरदान–रावणने १०००० वष पर्यन्त तप करने का नियम किया जब १००० वर्ष पूर्णहोते थे तभी एक अपना शिर हवन करदेता था जब एक शिर रहगया और उसको भी हवन करने लगा तो ब्रह्माजीने आकर उससे कहा कि तू नर वानर छोड़ और किसीके करसे वध न

होगा–और जब तू तेरे सिर कटेंगे तब तब फिर नये होजायेंगे–

रावण वरपाकर धीरों को जीतने के लिये यत्न करनेलगा–

अलकापुरी में जा कुबेर का पुष्पकविमान छीनलाया और यमराज को जीतकर इन्द्रलोक को गया वहांपर इन्द्र को उसके पुत्र ने बांधलिया तब मेघनाद गया और अपने पिताको छुड़ाकर इन्द्र को बांध लंकाको लाया परन्तु ब्रह्मा से वर पाकर छोड़दिया–

तदनन्तर रावणने उत्तर में जाकर कैलास को उठालिया नन्दीश्वर जिनने उसका अभिमान देख शापदिया कि तेरा नाश नर और वानर के करसे होगा–

जब सहस्रार्जुन के निकट (जिसने कि नर्मदा में जलक्रीडा करते समय धार को रोकदिया था) पहुँचा तो युद्ध वादविवाद होने उपरान्त सहस्रार्जुनने उसको पकड कारागृह में बांध रक्खा परन्तु पुलस्त्यमुनिने छुड़वा दिया–

इसी प्रकार जब बालिसे लडा तो बालिने उसे छ मासतक अपनी कांख म दबा रक्खा था–

पाताल में गया तो बालकोंने पकड अपना सेवक बनाया तो बलिने छोडाया–

जब चन्द्रमा को जीतने जाताथा तो राह में एक स्त्रियों के झुंड को कुदृष्टि से देखा उसमें से एक वृद्धा स्त्री ने उसको उठाकर समुद्र में फेंकदिया–

रावण एक समय कैलास पर्वतपर गया और नलकूवर की स्त्री (कुबेर की पतोहू जिससे रावण की भी पतोहू हुई) से भोगकिया उसने जा अपने पतिसे कहा जिसने उसको शापदिया कि तू फिर कभी परस्त्रीप्रसंग करजोरी करेगा तो तेरा शिर गिरपडेगा इसी कारण उसने हरते समय जानकीजीको स्पर्श भी नहीं किया किंतु पृथ्वीको खोदकर सीताको उठाया था–

जब रामचन्द्र वनवास समय पंचवटी में निवास करते थे तो शूर्पणखा (रावणभगिनी) सुन्दर स्त्रीरूप धारण कर श्रीरामचन्द्रजी के निकट विवाहार्थ

गई और लक्ष्मणजी ने रामकी आज्ञासे उसका कर्ण और नासा काटा इसका रण उसके भाई खर, त्रिशिरा और दूषण रामचन्द्र से युद्धकर मारेगये-जब यह वृत्तान्त रावणने सुना तो मारीच कपट मृगद्वारा छलकर सीताजी को हर लेगया जिससे रावण परिवारसहित रामकरसे वध हुआ और लंकाका राज्य विभीषण को मिला-

वंशावली ॥

पुलस्त्य

विश्रवा

कुबेर (भरद्वाजकी कन्यासे) | रावण वा कुम्भकर्ण शूर्पणखा वा खर (कैकसीसे) (राकासे) | विभीषण (मालिनीसे)

मेघनाद महरम्न अतिकाय महोदर अक्षयकुमार आदि

मेघनाद ॥

नाम-इन्द्रजीत, घननाद, पिता-रावण माता-मन्दोदरी

स्त्री-सुलोचना (पचकन्या में से है)

एक समय युद्धमें इन्द्रने रावणको बांध लिया था मेघनाद ने जाकर अपने पिताको छोड़ाया और इन्द्रको बांध लंकामें लाया तब ब्रह्माने आकर उससे इन्द्रको छोड़ाया-

वरदान-ब्रह्माने कहा कि जो कोई १४ वर्ष पर्यन्त नींद, नारि और भोजन परित्याग करेगा उसके करसे तेरा वध होगा-

जब महावीर सीताकी खोज में लङ्काको गये थे तो इनको मेघनादही बांध कर अपने पिताके निकट लेगया—रावण और कुम्भकर्ण के वधके पहिले इसने प्रथम युद्ध में लक्ष्मण को शक्ति मारकर अचेत किया परन्तु सुषेणवैद्यकी औषधसे चेतको प्राप्तहो द्वितीय युद्धकर लक्ष्मण ने मेघनादको मारडाला और सुलोचना जिसके सतीहोगई—

कुम्भकर्ण ॥

पशापत्नी-रावण व० दे०   स्त्री-वृत्रज्वाला (बलिकी दोहती)—

कुम्भकर्णने भी अपने भाई रावण के साथ महातप कर ब्रह्माको प्रसन्न किया और सरस्वती की प्रेरणा से छःमास सोने और एक दिन जागने का वरपाया यह महाकाय अतिभक्षी था यदि प्रतिदिन भोजन करता तो सृष्टि को खालेता—यहभी रामकरसे वधहो परमपद को प्राप्तहुआ

विभीषण ॥

जन्म-रावण कथा देखो—   स्त्री-सरमा (शैलूष गंधर्वकी कन्या)—

अपने भ्राता रावण सम सतोगुण तपसे ब्रह्माको प्रसन्न कर भागवत और अमरत्व का वर पाया और रावण करके निकाले जानेपर यह श्रीरामचन्द्र जी से मिलकर रावण वधमें परमसहायक हुआ और रावण के पश्चात् लंका का राज्य पाया—

जाम्बवन्त ॥

नाम-ऋक्षराज (ऋक्षोंका राजा)—   कन्या-जाम्बवती—

यह ऋक्षदल लेकर रावणवधमें रामचन्द्रजीका परमसहायक और मंत्रीथा—किसी समय इसको श्रीरामचन्द्रजी से युद्धकी कामनाहुई तो रामचन्द्रने कहा कि यह कामना द्वापरान्त में पूर्णहोगी—कृष्णावतार में जब यो स्यमन्तकमणिहेतु वनमें लगे (कृष्ण क० दे०) तब मणि ढूंढते हुये जाम्बवन्त के आश्रम में

पहुँचे घोर युद्ध पश्चात् जाम्बवन्त परास्त हुआ और अपनी कन्या जाम्बवतीको कृष्णार्पण कर वह मणिभी देदिया–

महावीर ॥

नाम–हनुमान्, पवनकुमार, शंकरसुवन, केशरीनन्दन, अंजनीसुत–

पिता–केशरी कपि–

माता–अंजनी (यह पूर्वजन्ममें पंजिकस्थला नामी अप्सराथी परन्तु शापवश वानरीहो सुमेरुपर्व्वत पर आई और अंजनीनाम से प्रसिद्धहो केशरी पतिपाया)–

पुत्र–मकरध्वज–

जन्म–एक समय मरुतदेव सुमेरुपर्वत पर आये और अंजनीपर मोहित हुये जिससे हनुमान्जी ने अवतार लिया और नाम पवनसुत हुआ और यह अवतार शिवजीने रामसहायार्थ लिया इसी से शंकरसुवन भी नाम हुआ–जन्मलेतेही इन्होंने सूर्यको निगल लिया तब इन्द्रने वज्र मार कर सूर्यको बचाया और वह वज्र महावीर के मुखपर लगा इससे हनुमान् (फैला जबड़ेवाले) नाम हुआ तब मरुतदेवने पुत्र प्रेम से क्रोधितहो वायुको रोकदिया–सब दुःखी जान ब्रह्माजी ने आ हनुमान्जी को अजय और अमरता वरदे और इन्द्रने वज्रागकर मरुतदेवको प्रसन्न किया और वायु चलनेलगी–हनुमान्जी ने नीचे लिखेहुये अद्भुत कार्य किये जिससे श्रीरामसीताने प्रसन्न होकर भुक्ति वा मुक्ति वरदिया–

(१) रामचन्द्र और सुग्रीव से मित्रता कराई–

(२) समुद्र लांघ और लंका को जला और अक्षयकुमार को वधि सीता जी का पता रामचन्द्रजी को दिया–

(३) देवीकी मूर्तिमें प्रवेशकर महिरावणको जो श्रीराम और लक्ष्मणको गव णके कहने पर देवी वलि हेतु हर लेगया था-परिवार सहित उसकिया- महिरावणकी देवढी पर मकरध्वज ने यह कहा कि मैं हनुमान् सुत, अपने स्वामी महिरावणके पुरमें न जाने गा हनुमान्जी ने पूछा कि तुम मेरे पुत्र क्योंकर हुये उसने उत्तरदिया कि जब आप लंका दग्ध उपरान्त अपनी लांगूल को समुद्र में बुझाई उस समय में आपका वीर्य आपके अजानते स्खलित हुआ जिसको एक मकरा (मगर) ने निगल लिया जिससे उत्पन्नहो महिरावणका द्वारपाल हुआ यह सुन महिरावणका राज्य मकरध्वजको दे राम लक्ष्मणको रणभूमि में लाये-

(४) लक्ष्मणजीकी शक्तिमुच्छानिवारण । द्रोणगिरको उसके वृद्ध सहित और सञ्जीवनमूरि धौलागिरि सहित उठालाये मार्ग में कालनेमि को वधकिया (कालनेमि प० दे०)-

(५) श्रीराम विजयके पीछे श्रीअयोध्यासे साथ साथ आये और लक्ष्मण रह कर तदनु उत्तराखण्डको चले गये-उनसे और अर्जुन से युद्ध हुआ (अर्जुन प० दे०)-

गृध्रराज अथवा जटायु ॥

पिता-गरुड- भाई-सम्पाति-

जब रावण जानकीजीको हरे लिये जाता था तो मार्ग में जटायु ने रावणसे महायुद्ध किया परन्तु रावण ने कृपाण से उसका पक्ष काटकर उसे गिरादिया जब रामचन्द्र जानकी की खोजमें आ निकले तो उसको देखकर महादुःख को प्राप्तहुये जटायु रामचन्द्रका दर्शनपा स्वर्गको गया और रामचन्द्र ने उसकीक्रिया पितावत अपने करसे की-

अजामिल ॥

यह ब्राह्मण कनौज का रहनेवाला था इसने एक भिल्लिनि स्त्रीपर मोहित हो और अपना धर्म नष्टकर उस स्त्रीसे दशपुत्र उत्पन्न किया एकपुत्र का नाम नारायण रक्खा अट्ठासी वर्षकी अवस्थामें इसको यमदूत लेने आये परन्तु प्राणान्त समय उसने अपने पुत्रको नारायण नाम से पुकारा इस कारण नारायण के दूतोंने इसको यमदूतों से छुडा वैकुण्ठमें भेजदिया—

व्यासजी ॥

नाम—द्वैपायन—   पिता—पराशर—

माता—सत्यवती (इसका नाम योजनगन्धा और मत्स्योदरीभी है इसकी माता अद्रिका नामी अप्सरा शापवश भूमिपर मत्स्य हो आई जिससे सत्यवती उत्पन्नहुई—एक समय यमुनातटपर पराशरजी से भेंटहुई और उन्हींके प्रसाद से व्यासजी की उत्पत्तिहुई—इसकेपीछे यही सत्यवती राजा शान्तनुको बिवाही गई—(शान्तनु न० ६०)—

शिष्य—सूतजी (लोमहर्षण सूत)—

जब व्यासजी का जन्म हुआ तो माता सहित यमुनाद्वीप पर वासकरते थे इसीसे नाम द्वैपायन भी हुआ—यह भगवान् के अवतार हैं इन्होंने ४ वेद और १८ पुराण निर्माण किया इससे सन्तुष्ट न होकर श्रीमद्भागवतको लिखा (नारद न० ३०) वेदोंके नाम—ऋग्वेद, यजुर्वेद, अथर्वणवेद, सामवेद, वेदकाण्ड—कर्मकाण्ड, उपासना और ज्ञानकाण्ड वेदके अङ्ग—शिक्षा, ज्योतिष, कल्प, निरुक्ति, छन्द और व्याकरण—

पुराणोंकेनाम—ब्रह्मपु०, पद्मपु०, विष्णुपु०, शिवपु० भागवत नारदपु० मार्कण्डेयपु०, अग्निपु० भविष्यपु० ब्रह्मवैवर्त लिङ्गपु०, वराहपु०,

स्कंदपु०, वामनपु०, कूर्मपु०, मत्स्यपु०, गरुड़पु०, ब्रह्माण्डपु०—
व्यासावतारों के नाम जो विष्णुजीने प्रत्येक द्वापरमें वेद पुराणादि निरचने हेतु धारण किया—

ब्रह्मा, प्रजापति, शुक्र, बृहस्पति, सविता, मृत्यु, मघवा, वशिष्ठ, सारस्वत, त्रिधामा, त्रिवृष, भरद्वाज, अन्तरिक्ष, धर्म, त्रय्यारुणि, धनंजय, मेधातिथि, व्रती, अत्रि, गौतम, उत्तमहर्यात्मा, वेनीवाजश्रवा, सोमशुष्मायण, तृणबिन्दु, भार्गव, शक्ति, जातुकर्ण्य, द्वैपायन— वंशावली

ब्रह्माकी श्वाससे अथवा मैत्रवरुण से
वशिष्ठ
शक्ति
पराशर
व्यास

शुकदेव — वैशम्पायन

कश्यप, गौर, प्रभासूरि, देवश्रुत, कीर्ति (कन्या)

सुदर्शन विद्याधर ॥

यह विद्याधर था एक समय आंगिराऋषिको कुबड़ा देख अभिमान युक्त हँसा इस कारण ऋषिके शापसे अजगर हुआ और व्रजमें रहनेलगा एक समय इसने नन्दजी को निगल लिया इस कारण श्रीकृष्ण परम पवित्रता निजरूप को प्राप्त हुआ—

शंखचूड़दैत्य ॥

गर्दे यको श्रीकृष्णने पकड़कर उसके मस्तककी मणि निकाल बलरामजीकोदिया

कडूमुनि ॥

गोमती तीरपर-यह मुनि तप में प्रवृत्त थे ये देख इन्द्रने प्रेमलोचा अप्सरा को इनके तप भंग हेतु भेजा वह मुनि आश्रम में आ बहुत दिनतक रही ९१० वर्ष पश्चात् यह कपट ऋषिको ज्ञात हुआ तब इन्होंने इस अप्सरा से कहा कि तू यहां से निकलजा-ऋषि की भयसे उसके पसीना निकला जिसको उसने वृक्षों में लगादिया और उसीसे शीत उत्पन्न हुई इसको चन्द्रमाने और बढ़ाया-उसी शीतसे मरिषा उत्पन्न हुई जिसका विवाह दक्षके पुत्र प्रचेता के सगहुआ-

पराशर मुनि ॥

वंशावली-व्यास व० दे०-

जन्म-एक समय शक्ति (वशिष्ठ पुत्र) और राजा कल्मापपाद से किसी सकीर्ण मार्गमें भेंटहुई राजाने शक्तिको मार्ग से हटने को कहा परन्तु यह न हटे और राजाने इनको मारा इस कारण राजा मुनिशाप से राक्षस हुआ और मुनिको खालिया-उस समय मुनि की स्त्री गर्भिणी थी उस गर्भसे पराशर उत्पन्न हुये जिन्होंने यज्ञ करके राक्षसों का नाश करदिया जो थोड़े रहगये उनको वशिष्ठ और पुलस्त्यजी के कहने से छोड़दिया-

पुलह ऋषि ॥

पिता-ब्रह्मा (नाभि से)-

स्त्री-पहिली-क्षमा (दक्ष की कन्या) जिससे तीन पुत्र हुये-दूसरी स्त्री गती (कर्दम की कन्या)-

क्रतु ऋषि ॥

पिता-ब्रह्मा (कर से)-

स्त्री-प्रथम सर्याति (दक्षकी कन्या जिसमे ६०००० बालखिल्य (वामने) उत्पन्न हुये जिनके शरीर अंगुष्ठ प्रमाण थे-दूसरी योग्य (कर्दमकी कन्या)—

अंगिरा ऋषि ॥

पिता-ब्रह्मा (मुख से)—
स्त्री-१ स्मृति (जिससे ४ कन्याहुईं) २ स्वधा ३ सती यह तीनों दक्षकी कन्या हैं-और चौथी स्त्री श्रद्धा (कर्दम की कन्या) है-
पुत्र-अग्नि (कहीं २ लिखा है)-

भरद्वाजमुनि ॥

आश्रम-प्रयागजी-
पुत्र-पारक्रिष्ठ, भोजन, उदित, हसप, सुनक, विसर्प, पितवर्ती-यही दूसरे जन्म में विश्वामित्र के पुत्रहुये (विश्वामित्र क० दे०)-

च्यवन ॥

इनके शरीर में झिल्ली पड़गई (एक प्रकार का कुष्ठ) इस कारण अपने गृह से निकलगये और राजा सर्याति के राज्य में गये वहांपर राजपुत्रों ने मुनिकी हँसीकी मुनिने उनको ऐसा शापदिया कि उनमें कलह होनेलगी इस शाप को सुन सर्यातिने अपनी सुकन्या (पुत्री) को मुनि को समर्पिया इस कन्या के पातिव्रत को देख अश्विनीकुमारने च्यवन का कुष्ठ अच्छा करदिया-

चित्रकेतु ॥

इस राजाके कोटि रानिया थींपरन्तु पुत्र किसीके न होताथा तदनन्तर पश्चात् अंगिरा के आशिष से बड़ीरानी के कृतद्युत नामी पुत्रहुआ जिसको और रानि योंने मारडाला-राजाने बड़ा विलापकिया तो नारदमुनिने राजाको ज्ञानसे उस पुत्रका जिलादिया,-तब वह बालक बोला कि हे राजा मैं पूर्व जन्म में राजाथा

परन्तु राज्य त्यागकर तपको चलागया भिक्षा मांगने समय एक स्त्रीने मुझे गोला गोइन्दादिया जिसमें चींटियाँ थी वे जलकर मरगई वेई चींटिया यह तुम्हारी रानियां हैं और वह स्त्री जिसने गोइन्द दियाथा मेरी माता है उन चींटियों ने आजमुझ से बदलालिया इतना कह यह बालक फिरमरगया–तदनन्तर चित्र केतु नारदोपदेश से तपकर विद्याधरोंका राजा हुआ और उसने एक विमान पाया जिसपर चढ़ एक समय कैलासपर्वतपर गया और वहां पर पार्वतीजी को शिव अंगपर देख हँसा और शापको प्राप्तहो विश्वकर्मा के यहां वृत्रासुर नामी राक्षस हुआ जिसको इन्द्रने दधीचि की अस्थि से वज्रबनाकर मारा–(विश्वरूप वा विश्वकर्मा व० दे०)–

भानुप्रताप राजा ॥

पिता–सत्यकेतु– अनुज–अरिमर्दन– मन्त्री–धर्मरुचि–
राज्य–केकयदेश (कश्मीर)—

किसी समय राजाने कालकेतु का राज्य छीन लिया कुछदिन उपरान्त वह छल पूर्वक राजाका पाचक हुआ और ब्राह्मणों को नरआमिष राजाकी रसोई में बनाकर खिलादिया ब्राह्मणों ने राजा भानुप्रताप को ऐसा शाप दिया कि वह राक्षस योनिमें उत्पन्नहो रावण नामसे प्रसिद्ध हुआ–

शृंगीऋषि ॥

पिता–शमीक अर्थात् विभाण्डक ऋषि (जो हरि ध्यानमें कौशकीनदीपर थे और जब राजा परीक्षित ने मरासर्प उनके गले में डालदिया तो शृंगी ऋषिने राजाको शापदिया)—
स्त्री–शान्ता (दशरथ पुत्री)–

मारतण्ड ॥

पिता-कश्यप- माता-अदिति-

मारतण्ड अदिति का आठवा पुत्र महाकुरूप उत्पन्न हुआ अदितिने इस बालक को पृथ्वीपर छोड़ दिया और अपने प्रथम सातपुत्रोंको ले देवलोक को चली गई परन्तु उन पुत्रोंने अपने आठवें भ्राताको भी बहुत यत्नकर रूपवान् किया और अपने साथ लेगये-और जो मांस उसके शरीर से काटागया था उससे हाथी बनायागया-

अग्नि ॥

नाम-वाहिनी, वीतिहोत्र, धनजय, जिवलन, धूम्रकेतु, छागरथ, सप्तजिह्वा-

पिता-माता-कहीं पुत्र और पृथ्वी, कहीं ब्रह्मा और कहीं अंगिरा, कहीं कश्यप और अदिति लिखे हैं-

वर्ण-रक्त, पद-तीन- भुजा-सात- नेत्र-श्याम- मुख-सात-

वाहन-अज और सुआ- भूषण-जनेऊ और फूलोंकी माला-

स्त्री-स्वाहा (दक्षकी कन्या)-

पुत्र-नील (पकादर मातासे-यह रामसंग लंकाको गये और सेतुबंध में बड़े सहायक हुये) पावक, पवमान और शुचि यह तीन (स्वाहासे) देवता अमर हैं और बहुधा अग्निपूजक (पारसी) धनवान् होते हैं-

वायु ॥

नाम-वात, पवन, मारुत, मरुत, अनिल, स्पर्शन, गधवह-

पिता-रुद्र (वेदमें लिखाहै -कश्यप (पुराणमें है)- माता-अदिति-

जन्म-निर्सीमसय अदितिने अपने पतिसे इन्द्रजीत पुत्र मागा तब मुनिने कहा कि ऐसाही होगा परन्तु उस बालकको १०० वर्ष पर्यन्त गर्भ में पवित्रता

पूर्वोक्त रवनो अदितिने ऐसाही किया परन्तु ९९ वर्ष पश्चात् अपवित्रता से सोगई इस प्रकार इन्द्र यातश उनके गर्भ में प्रवेशकर उस बालकके ४९ खंड करडाले और उस बालकको मारते समय इन्द्र कहताथा कि मारूं अर्थात् मनरोवो इस कारण मारुत नाम हुआ और इन्हींको ४९ पवनभी कहते हैं—

स्त्री-सप्तगति (विश्वकर्मा की कन्या)— वर्ण-श्वेत,
अस्त्र-श्वेतध्वजा, वाहन-दो लालघोड़े का रथ और मृगा-
पुत्र-हनुमान्जी (अंजनीसे-महावीर क०दे०) और भीम (कुन्तीसे पांडु क०दे०)
कन्या-सुयशा (नन्दीश्वरकी स्त्री)—
तीन प्रकारकी वायु-शीतल, मन्द, सुगन्ध—
शारीरिक १० प्रकारकी वायु-प्राण (चित्त में), अपान (गुदामें), समान (नाभिमें), उदान (कंठमें), व्यान (शरीरमें), नाग ( ), कूर्म ( ), कृकल ( ), देवदत्त ( ), धनंजय, ( )-

नृसिंह अवतार ॥

यह अवतार नारायण ने सत्ययुग में हिरण्यकशिपु वधार्थ धारण किया- जब हिरण्य कशिपु के भाई हिरण्याक्षको विष्णु ने वाराह रूप (वाराह क० दे०) धर वधकिया तभी से हिरण्यकशिपु नारायण से वैरकर हरिभक्तों को दुःख देनेलगा और अपने पुत्र प्रह्लाद को रामनाम छुड़ाने हेतु महादुःखदिया इसकारण भगवान्ने नृसिंहतन धरकर हिरण्यकशिपुको खंभसे निकल(जिसमें प्रह्लाद बंधेथे) संध्या समय अपने नखसे गोद में रख मारडाला-इसका हेतु यहहै कि उसको वरदान था कि न तौ किसी पशु, न मनुष्य, न अस्त्र से और न रात, न दिनमें और न पृथ्वी में और न आकाशमें माराजावे—

नाम तीनों जन्मों के-१ हिरण्याक्ष और हिरण्यकशिपु, २ रावण और कुम्भकर्ण और ३ शिशुपाल और दन्तवक्र-

रामचन्द्र ॥

नाम-राम, अवधेश, रघुवर, जानकीश, साकेतविहारी आदि-
पिता-दशरथ, माता-कौशल्या (सौतेली माता, केकयी, सुमित्रा)
अनुज-भरत (केकयी से), लक्ष्मण और शत्रुघ्न (सुमित्रा से)
बहिन-शान्ता (शृंगीऋषि की स्त्री) स्त्री-सीता (जनक क० दे०)
पुत्र-लव और कुश (व० दे०) वंशावली-सूर्यवंशकी वंशावली में देखो-

इस अवतार लेनेका कारण यहहै-कि जब त्रेतायुग में राक्षसों के पापका भार पृथ्वी न सहकर गोरूप धारणकर देवसहित ब्रह्माके निकटगई तो ब्रह्माजी पृथ्वी और देवगण को विकल देख राक्षसों के वधार्थ विष्णुस्तुति की जिससे विष्णु भगवान् भूमिभार उतारने और दशरथ और कौशल्या के पूर्वजन्म (मनु और शतरूपा) के वरानुसार अपने अंशोंसहित अयोध्याजी में अवतरित हुये और नीचे लिखेहुये चरित्रों को किये-

१ बाल्यावस्था में काकभुशुण्डि को अपने उदर में अपना विराट्‌रूप दिखाया-

२ विश्वामित्र के यज्ञ की रक्षाके अर्थ जाते समय मार्ग में अहल्या को शाप (गौतम क० दे०) से उद्धारकर ताडका और सुबाहु को वध और मारीच को बाणद्वारा समुद्र पार फेंक दिया-और मुनियज्ञ पूर्ण हुई-

३ विश्वामित्र सहित जनकपुरजा शिवधनु भञ्जनकर और परशुराम का मान तोड़ उनसे विष्णु धनुष ले जानकी संग विवाहकर (जनक क० दे०) अयोध्या जी आये-

४ केकयी और दशरथ आज्ञानुसार वनवास अंगीकार कर मुनिवेष से भरद्वाज

सार दधीचि की अस्थि से वज्र बनाया तब उस वज्रसे वह राक्षस मारागया–और राजा दधीचि इसप्रकार अपनी अस्थि दे स्वर्ग को गया–

दुंदुभि दैत्य ॥

दुंदुभि एक राक्षस था जिसको बालिने वध कियाथा और उसकी हड्डिया पर्वताकार पडीथीं–सुग्रीवने रामचन्द्र से कहा कि बालि ऐसा बलीथा कि उसने ऐसे बली राक्षस को मारा–यह सुन रघुनाथजीने अपने बायें चरण के अगूठेसे उस हड्डी के ढेरको फेंकदिया–

एक दूसरा दुंदुभि नामी दैत्य हुआ जो दितिका भाईथा जब हिरण्याक्ष और हिरण्यकशिपु मारेगये और उनकी माता दितिको अतिदुःख हुआ तब दितिका भाई दुंदुभि महाउपद्रव करनेपर उपस्थित हुआ और काशी में जा ज्योंही चाहा कि एक शिवभक्तको (जो शिवपूजनमें प्रवृत्त था) भक्षणकरैं त्योंही शिव प्रकट हुये और दुंदुभि को वधकिया अब उस स्थानपर हरव्याघ्र शिवका पूजन होताहै–

मथरा ॥

यह केकयी (दशरथ की रानी) की चेरीथी इसने सरस्वती प्रेरित केकयीकी मति भ्रमकर रामचन्द्र को वनवास दिलाया–जब भरतजी अपने ननिहाल से आये तो इसको शृंगार युक्त देख क्रोधित हुये और शत्रुघ्नजीने इसका दांत तोड़डाला और उसकी चोटी पकड़कर घसीटने लगे तो भरत दयानिधिने छुड़ादिया–

शिविराजा ॥

राजा शिवि ९९ यज्ञ करने उपरान्त फिर यज्ञमें प्रवृत्त हुआ तो इन्द्र डरगया और अग्नि को कपोत बनाया और आप श्येन (बाज) बन उसका पीछाकिया वह कपोत भागता २ राजाकी गोदमें गया उस श्येनने कपोत हेतु राजासे अति

थी पड़गया और रातभर जागरण किया और वृक्षके हिलने से पत्तियां गिर
मूर्तिपर गिरती था श्रीभोलानाथने प्रसन्नहो उसको बरदिया कि तू दूसरे जन्मो
निषाद (मल्लाह) होगा और रामचन्द्र का दर्शन पावेगा–

इस प्रकार निषादहो शृंगवेरपुर (रामचौरा–नागातरदर) में रहनेलगा और
बन जातेहुये रामचन्द्र की उसने बड़ी सेवाकी और चित्रकूटतक उनको पहुँचा
लौटआया–और इसी प्रकार जब भरतजी रामचन्द्र को मनाने जातेथे तो उनके
सगभी चित्रकूट तक गया था–

रन्तिदेव ॥

पुत्र–गर्ग आदि ५ पुत्र–

यह राजा वितथ (चन्द्रवंश वर्णी २०) के वंशमें हुआ–कुछदिन उपरा
गर्गको राज्य दे अपने छोटे बालक और रानी सहित विरक्तहो बनको चलागया
और तपमें प्रवृत्त रह भोजन हेतु उद्योग नहीं करता था यदि कोई भोजन देजाता
तो खालेता नहीं तो भूखे पड़ा रहता एक समय बहुत दिन पश्चात् भोजन
पाया परन्तु एक भूखा आपड़ा उसी को दे डाला और इसी प्रकार कई बार
भोजन मिला परन्तु ऐसमयागमे इसके भूखे आतेगये और उनको राजा अपना
भोजन दे डालता था जब राजा अपनी रानी और बालक सहित भूखसे बहुत
पीड़ित हुआ तब भगवानने उन तीनोंको दर्शन दिया और निज लोकको लेगये–

राजाके पुत्र गर्ग (जो राजगद्दीपर था) के वंशमें सब अपने क्रियासे ब्रा
ह्मण होगये–

गङ्गाजी (नदी)

नाम सुरसरि, गिरिनन्दिनी, देवनदि, जाह्नवी, भागीरथी–
पिता–हिमालय और ब्रह्माका कमण्डलु और भगीरथ—
माता–मैना (सुमेरकी कन्या)

पुत्र भीष्मपितामह (राजाशन्तनु से), जलचर (समुद्र से)
गङ्गा तीन हैं—आकाश, पाताल और मर्त्यलोक—

एक समय इक्ष्वाकु वंशीराजा महाभिष अपने तपोबलसे ब्रह्मलोकको प्राप्त हुआ वहां गंगाजी पर जो ब्रह्माकी सेवामें थी मोहित हुआ इस कारण ब्रह्माके शाप से दोनों मर्त्यलोकको प्राप्तहुये और महाभिष इस जन्म में राजा शन्तनु हुआ—जिससे गंगाजी को भीष्मपितामह (अर्थात् गंगात्मज, गांगेय क० दे०) नामीपुत्र उत्पन्न हुआ यह पूर्वजन्ममें एक वसु था (वसु क० दे०) और इसीके वश और ७ वसुओंने भी जन्मलिया परन्तु उनको गंगाजीने जन्मते फेंक दिया—

जब राजा सगर के सब पुत्र कपिल मुनि के शाप (सगर क० दे०) से भस्म होगये थे उनके तारने हेतु उनकी सन्तानने बड़ी तपस्या की निष्फल हुई परन्तु भगीरथने ऐसी तपस्या की कि ब्रह्माजीने कहा कि जो शिव गंगा का भार सभालें तो हम तुमको गंगा देवें उसके उपरान्त तपकर शिवको प्रसन्नकिया तब ब्रह्माने निज कमण्डलु से गंगाधार छोड़कर कहा कि यह तुम्हारी पुत्री होकर प्रसिद्ध होगी—यह जल तीनधार होकर बहा—उसमें से एक आकाश में एक पाताल को गई और एक मर्त्यलोक में आई मार्ग में गंगाको अभिमान हुआ कि शिव मेरा भार क्योंकर सहसकेंगे इसकारण शिवने गंगाको अपनी जटामें बहुत दिनतक भरमाया—जब भगीरथ की बड़ी प्रार्थना से छोड़ दिया तब आगे आगे भगीरथ और पीछे पीछे गंगाजी चली मार्ग में जह्नु ऋषिने पान करलिया जब भगीरथ ने बड़ी विनय किया तब मुनिने गंगाको छोड़ा और तभी से गंगा का नाम जाह्नवी भी हुआ इसी प्रकार भगीरथ गंगासागर समुद्र तक जहां सगर के ६०००० पुत्र भस्म हुये जिनकी मुक्ति केवल गंगाजलके स्पर्श से निश्चित थी—गंगाको लेगये वहां पर भागीरथी नाम से प्रसिद्ध हुई—

मलम्त्र को निकालदिया यह जाबालि ऋषिके आश्रमपर जारहनेलगा इक्ष्वाकु के देहान्त उपरान्त वशिष्ठजीने उसीको राजा बनाया—

शशाद के पीछे उसका पुत्र पुरञ्जय गद्दीपर बैठा यह महाप्रतापी राजा हुआ और इन्द्र के हेतु दैत्यों से लड़ाई कर विजय पाई—

पुरञ्जय के वंशमें सावस्त राजाहुआ जिसने सावस्तीपुरी बसाई उसके पौत्र कुवलयाश्वने उत्तंगऋषि हेतु धुंधराक्षस को वधकिया उसके मुखसे एक ज्वाला निकली जिससे कुवलयाश्व के २१०० पुत्र भस्म होगये केवल दृढ़हास आदि तीन पुत्र बचे

दृढ़हास का पुत्र निकुंभ था जिसके वंशमें युवनाश्व हुआ इसके कोई सन्तान न थी परन्तु ऋषियों की आशिष से राजाही के गर्भरहा ऋषियोंने राजाका पेट फाड़ बालक को निकाला और इन्द्रने उसको अपना अमृतयुक्त अंगुष्ठ चखाया और उसका नाम मांधाता (अर्थात् त्रसदस्यु जिसकी स्त्री बिन्दुमती शशिबिन्दुकी पुत्री थी) हुआ जिससे मुचुकुन्दादि तीनपुत्र और ५० कन्या (सौभरिऋषिकी स्त्री—सौभरि ऋ० प०) हुई—

सौभरिऋषि ॥

सौभरिऋषि यमुनाजलपर तप करते थे नदी में मछलियों को क्रीडा करते देख इनको भी भोगविलास की इच्छा हुई और मांधाता के निकट जा उनकी कन्या मांगी—राजाने कहा कि मेरी जो कन्या आपको चाहे उसको विवाह दूंगा—इस के उपरान्त मुनि युवावस्था को धारणकर राजाकी ५० कन्याओं के निकटगये कन्याओं देख सब मोहित होगईं और राजाने सबों को विवाहदिया—जिनसे ५० सहस्र पुत्र होने उपरान्त ऋषि और स्त्रिया विरक्त होगईं कुछ दिन उपरान्त ऋषि के देहान्त के पीछे वे स्त्रिया सती होगईं—सौभरिने गरुडजी को शाप दिया था क्योंकि इसने उस आश्रममें मछली खायाथा जिसको कालीदह कहते हैं (कालीनाग व० दे०)

पुरूरवा ॥

वंशावली–चन्द्रवंशावली दे०　　पिता–बुध–(बुध क० दे०)

माता–इला–यह वैवस्वत मनुकी कन्या थी (पूर्वजन्म में यह मैत्रावरुण
यहा उत्पनहो इड़ा नामसे प्रसिद्ध थी) इसको वशिष्ठने पुत्र बनादि
या परन्तु मुनियों के शापसे फिर स्त्री होगया और बुध के संयोग
पुरुरवा उत्पन्न हुआ (सुद्युम्न क० दे०)

स्त्री–एक समय उर्वशी अप्सरा मैत्रावरुण के स्थान पर आई उसको दे
मैत्रावरुण का वीर्य स्खलित हुआ (जिससे वशिष्ठ और अगस्त्य उत्प
हुये अगस्त्य क० दे०) तो उन्होंने शापदिया कि तुमको मृत्युलो
जातहो–यह मृत्युलोक में आ अपने दो मेढ़ों सहित राजा पुरूरवा के य
रहनेलगी परन्तु वचनबद्ध करालियाथा कि जो तुम इन मेढ़ोंको नग्नहो
देखोगे तो मैं चलीजाऊंगी–कुछ दिन उपरान्त गन्धर्व उन मेढ़ों को चुरा
जातेथे उस रात्रि समय में राजा नंगे दौड़े और ज्योंही मेढ़ों के निकट
गये त्योंही वह अप्सरा चलीगई इस विरह में राजाने तपकिया और गन्ध
योनि में उत्पन्नहो उसी उर्वशी संग रहनेलगे–

पुत्र–(उर्वशी से) आयु आदि छः पुत्र–

पौत्र– हु (आयुसुत) इन्होंने गङ्गाजी को पान करलियाथा और अप
जंघासे निकाला था इसीसे गङ्गाका नाम जाह्नवी हुआ (गङ्गा क० दे

दुष्यन्त अर्थात् दुःकन्त ॥

वंशावली–चन्द्रवंशावली में पुरुवंश दे०

स्त्री–शकुन्तला–यह विश्वामित्र की कन्या मेनका अप्सरा से है इसको मेन
भूमिपर छोड़ स्वर्गको चलीगई तो कण्वऋषिने इसका पालन किय

एक समय राजा दुष्यन्त मृगया को मुनि आश्रम में गये वहांपर शकुन्तला को देख मोहित हुआ और गधर्वविवाह उसके साथ किया जिससे भरत पुत्रहुआ–

पुत्र–भरत–इसने विदर्भदेशके राजाकी तीन कन्याओं से विवाहकिया जिनमे कुरूप सन्तान हुई–तब देवताओंने भरद्वाज (बृहस्पति क० दे०) नामी बालकको लाकर भरत को दिया जिसका दूसरा नाम वितथ रक्खागया और गद्दीपर बैठालागया–

द्रुपद राजा ॥

वंशावली

मुद्गल (भ० व० दे०)
दिवोदास
द्रुपद
द्रौपदी — धृष्टद्युम्न आदि कई पुत्र–

राज्य–पांचालदेश–

इस राजाने अपनी कन्या के विवाह हेतु एक खौलते हुये कड़ाह के ऊपर एक मत्स्य टांगदिया था और प्रणकिया था कि जो इस मत्स्य को बेधेगा उसके साथ इस कन्या का विवाह करदेंगे–अर्जुनने उसको बेधा और द्रौपदी को लेगये और पांचों भाइयोंने इसके संग विवाहकिया (अर्जुन क० दे०)

पुत्र–धृष्टद्युम्न–इसने महाभारत में द्रोणाचार्य का मस्तक काटाथा–

पुत्री–द्रौपदी–तप करते समय शिवने इस कन्यासे पूछा तू क्या चाहती है इसके मुखमे भर्तार शब्द पांचवार निकला इसीसे शिव वरसे पांच पांडव इसके पति हुये–अथवा एक समय एक गऊके पीछे पांच सांड़ लगेथे उस गऊ को देख द्रौपदी हँसी–जिस गऊ के शाप से उसको पांच पति प्राप्तहुये–

दिवोदास कैरव ॥

वंशावली-(शन्तनु क०दे०) दादा-शन्तनु, पिता-सन, पुत्र-दिलीप

राजा दिवोदास कैरव को कोढ़ होगया था अकस्मात् अहेर खेलते २ एक कुइपर पहुँचा और उसी के जलसे स्नान किया तिससे राजाका कोढ़ जातारहा— तब राजाने उस क्षेत्रके सब कूपों और तडागों को खनवादिया और उस स्थलका नाम कुरुक्षेत्र रक्खा—

पुत्र-दिलीप-इसने दिल्ली नगर बसाया—

अक्रूर ॥

वंशावली— वृष्णी (यदुवंशी)

शशिबिन्दु की दशलाख स्त्रियों से

विदुमती (मा गतार्थ स्त्री) पुरुजित (बड़ा) और ज्यामघ (छोटा) आदि १० करोड़ पुत्रहुये—

विदर्भ

पृथुमान सात्वती कुश वृष रोमपाद

श्वफल्क दन्तवक्र विदूरथ जयद्रथ(चन्देलीकाराजा)

अक्रूर आदि १२ पुत्र शिशुपाल

देवाट्टहा विभु

सत्राजित प्रसेन

सत्यभामा (कृष्णपत्नी)

पिता-श्वफल्क, माता-गान्दिनी (काशीनरेश की कन्या)

और सातवां गर्भ रोहिणी के गर्भमें देवीने करदिया और आठवें गर्भमें श्रीकृष्ण जी (क० दे०) उत्पन्न हुये और नंद यशोदा के यहां रहनेलगे—इस बालकके बदले वसुदेवजी ने एक कन्या जो यशोदा केयहां उत्पन्न हुई थी लाकर कंसको दिया ज्योंही चाहा कि घुमाकर पटकें त्योंही वह कन्या (जो देवीथी) हाथसे छूट आकाश को गई और कहगई कि तेरा वैरी उत्पन्न होचुका है तब कंस सब के बालकों को ढूंढ ढूंढ मरवाने लगा—और पूतना राक्षसी, शकटासुर और बकासुर, अघासुर, वत्सासुर आदिकको कृष्णवधार्थ भेजा परन्तु सब मारेगये—तब कालीदह का पुष्प नन्दजी से मांगा उसको श्रीकृष्णजी ने लाकर दिया (कालीनाग क० दे०)—अनेक उपायों के पीछे अक्रूर द्वारा बलराम और कृष्ण को रंगभूमि देखनेको बुलाभेजा—दोनों भाई वहां पर जा रजक, चाणूर मल्ल, मुष्टिकमल्ल और कुवलय गजादिको मार कंसको भी मारा—बाहुक कंसका सूपकार था और सुदामा माली था—

कालयवन ॥

पिता—गर्गमुनि, और कालजंघ भी
माता—कालजंघ राजाकी स्त्री— राजधानी—काबुल

एक समय गौड ब्राह्मण (गर्गका साला) ने गर्गजीको नपुंसक कहा यह सुन सर्व यदुवंशी भी यही कहनेलगे तब मुनिने क्रोधकिया और शिव तपकर मांगा कि मेरे ऐसा पुत्रहो कि उसको देख सर्व यदुवंशी भागजावें—दैवसंयोग से राजा कालजंघ के सन्तान न होती थी गर्गने जा उसकी रानीको वीर्यदानदिया जिससे कालयवन नामी बालक हुआ—

एक समय कालयवन जरासंध के साथ श्रीकृष्णजी से युद्ध करनेगया तब सब यदुवंशी द्वारका को भागगये और श्रीकृष्ण और बलराम भी इसका वध

अपने करमें उत्तम न समझ (क्योंकि ब्राह्मण के वीर्य से था) भागकर एक गुफा में गये जहांपर मुचुकुन्द राजा सोतेथे और राजाकी दृष्टि पड़तेही कालय वन भस्म होगया (मुचुकुन्द क॰ दे॰)—

भीष्मक राजा ॥

राजधानी—कुंदिनपुर— पुत्र—रुक्माग्रज और रुक्मकेश आदि ५ पुत्र—
कन्या—रुक्मिणी जो शिशुपाल को मांगीथी परन्तु विवाह समय रुक्मिणीने श्रीकृष्ण को बुला भेजा वे रुक्मिणी को हरलेगये मार्ग में रुक्माग्रजसे युद्ध हुआ परन्तुहार मानकर लौटआया और लज्जितहो राज्यस्थान को छोड़ भोजकट नाम नगर बसाकर रहनेलगा—कुछ दिन उपरान्त रुक्मने अपनी कन्या रुक्मावतीका विवाह रुक्मिणीकेपुत्र प्रद्युम्नकेसाथ करदिया—और अपनी पौत्रीका विवाह रुक्मिणी के पौत्रके सग किया—

प्रद्युम्न ॥

पिता—श्रीकृष्ण जी— माता—रुक्मिणी (भीष्मक की कन्या)—
स्त्री—मायावती (रतिका अवतार) और रुक्मवती (रुक्माग्रज की कन्या)—
पुत्र—अनिरुद्ध—जिसका विवाह बाणासुर की कन्या ऊषाके साथ हुआ (बाणासुर की क॰ दे॰)—

एक समय शिवजी हरि ध्यान में कैलास पर्वत पर थे तो इन्द्राज्ञानुसार काम देवने पुष्पबाण चलाकर शिवका ध्यान छोड़ाया—तब शिवने क्रोध से देखकर उस को भस्म करडाला और कामदेवकी स्त्री रतिके विलाप से उसको वरदिया कि सेनापति अनङ्गहो सबको व्यापेगा और तू मायावती नामसे राजा शम्बर की रसोई में रहना तेरापति तुझको मत्स्य के पेटसे निकला प्राप्तहोगा—

जब प्रद्युम्नजी (कामावतार) का जन्म श्रीकृष्ण के गृह में हुआ तो यह सुन

राजा शम्बर ने इनको उठा समुद्र में डालदिया (क्योंकि ज्योतिषियों ने कहाया कि तेरा वध श्रीकृष्ण सुतके करसे है-) और वहा एक मछलीने निगललिया दैवसयोग से यह मछली एक मछुआ के हाथ लगी और वह उसको राजाशम्बर के यहालाया पाकभवन में उस मछली के पेटसे प्रद्युम्न निकले रति (मायावती) ने उसका पालनकिया जब बड़ेहुये तो शम्बर को मार और मायावती को ले श्रीकृष्ण को प्राप्त हुये और अतिमगल हुआ-

सत्राजित ॥

यशावली- (अक्रूर क० दे०) पिता-विभु (शिशुपाल सुत)—
भाई-प्रसेन— कन्या-सत्यभामा (भूमिका अवतार और कृष्णपत्नी)

सत्राजित के तप से प्रसन्नहो सूर्यने उसको स्यमतक मणिदिया जिसका प्रकाश सूर्यवत् था उस मणिको पहिन वह उग्रसेन की सभा में आया करता था एक दिन श्रीकृष्णने कहा कि यह मणि उग्रसेन राजाको देदव उस दिनसे फिर उनकी सभामें न गया-एक दिवस यही मणि पहिन प्रसेन अहेर को गया वहा उसको सिंहने मारडाला और उससिंहको जाम्बवतने मारा और वह मणि ले अपनी कन्याके पालने में बांध दिया-जब प्रसेन न लौटा तो लोगोंने कहा कि श्रीकृष्णहीने प्रसेनको माराहोगा इस कलङ्कसे लज्जितहो प्रसेनकी खोजमें निकले और वन में जा पता पाकर और जाम्बवत से युद्धकर (जाम्बवत क० दे०) मणिलेलिया और लाकर सत्राजितको दिया-इसके उपरात सत्राजितने अपनी कन्या सत्यभामा को श्रीकृष्णजी के समर्पण किया—

एक समय शतधन्वाने अक्रूर और कृतवर्मा के कहने से सत्राजित का शिरकाट डाला इस कारण श्रीकृष्णने शतधन्वा को मारा और अक्रूर काशी को और कृतवर्मा दक्षिण को भागगये (अक्रूर क० दे०)—

भौमासुर अर्थात् नरकासुर ॥

माता-पृथ्वी- पुत्र-भगदत्त-

एक समय पृथ्वीने पुत्र हेतु तप किया तो विष्णु आदि देवताओंने प्रसन्न हो उसे वरदिया कि तुझको महाबली पुत्र भौमासुर (नरकासुर) नामीहोगा और जबतक तू अपने मुख से उसके मारेजाने को न कहेगी तब तक वह मारा भी नहीं जायगा-

भौमासुर उत्पन्न होतेही उपद्रव करने लगा यहां तक कि इन्द्रका छत्र और अदितिका कुण्डल छीन लाया और १६१०० राजकन्याओं को जीत लाया और अपने यहां रखकर उनसे बड़ी सेवा करता था इन उपद्रवों को सुन श्री कृष्णजी सत्यभामा सहित भौमासुर के यहां गये और युद्ध हुआ और मुरदैत्य (मंत्री इसके पहरेपर थे) और उसके सातपुत्रोंको मार भौमासुरको सत्यभामा (जो पृथ्वी का अवतार हैं) के कहनेसे मारा और उसके पुत्र भगदत्तको राज्य दिया और १६१०० राजकन्याओंको रानी बनाया और छत्र और कुण्डल लौटे-इन्द्र और अदितिको दिया-

नृगराजा ॥

पिता-वैवस्वतमनु (पूर्व प० दे०)—

इस राजाने अनन्त गोदान किया परन्तु एकदिन किसी ब्राह्मण को दी हुई गऊ जो भाग आई थी उसने दूसरे ब्राह्मण को दान किया तब प्रथम ब्राह्मण राजा के निकट आया राजाने उसको एक लक्ष गऊ देनेको कहा परन्तु उस ब्राह्मण ने न अंगीकार कर क्रोधयुक्तहो चलागया इसी पापसे ऐसे प्रतापी और दानी राजाको गिरगिट तन पाकर एक कूप में रहना पड़ा-किसी समय कृष्णजी के बालक खेलने निकले तो इसको देख कूप निकालन लगे परन्तु

यह न निकला तब श्रीकृष्णने आकर उसको निकाला और यह दर्शन पाक
इसतनमें निकलहुआ-

शाम्ब (साम्ब)

पिता-कृष्ण- माता-जाम्बवती (जाम्बवन्तकी कन्या)-
स्त्री-लक्ष्मणा-(दुर्योधनसुता)-

स्वयम्वर के बीचसे शाम्ब लक्ष्मणाको ऐंचले तो दुर्योधन ने विचारा कि
यादवों की कन्या हमारे यहां बिवाही जाती है और यह यादव हमारी कन्या
लिये जाताहै इस कारण युद्ध हुआ परन्तु दुर्योधनने परास्तहो उनके साथ उस
कन्याका विवाह करदिया-

शिशुपाल राजा ॥

पिता-दमघोष (जन्म क० दे०) माता-महादेवी (सूरसेनकी कन्या)
राज्य-चन्देली- नेत्र-तीन- भुजा-चार- भाई-दन्तवक्र और विदूरथ-

शिशुपाल और दन्तवक्र जय और विजय का तीसरा अवतार है-

इसको रुक्मिणी मांगीथी परन्तु श्रीकृष्णजी हरलेगये (भीष्मक राजा क० दे०)-

एक समय द्रुपदी के स्वयम्वर में गया था परन्तु निराश लौटा और द्रुपदी
को अर्जुन लेगये-

जब राजा युधिष्ठिरने राजसूययज्ञ करना चाहा था उससमयमें यहराजा नहीं
परास्त हुआथा इस कारण श्रीकृष्णजी पाण्डव सहित उसपर चढ़गये और
युद्ध समय उसके सौ दुर्वचन † सहने उपरान्त उसको बधकिया-

शिशुपाल के मारेजाने उपरान्त शाल्वराजा (शिशुपालकामित्र) उसका

---

† इन सौ दुर्वचनोंके सहनेका कारण यह था कि जब शिशुपालका जन्म हुआ तो ज्योतिषियोंने
कहा कि इसका वध श्रीकृष्णके करसे है यह सुन उसकी माता जो था (कृष्णकी फूफी) श्रीकृष्ण
के निकट जा विनय किया कि मेरे पुत्रका मृत्यु तुम्हारे करसे है सो इसको न मारना तब श्रीकृष्ण
ने कहा कि अच्छा इस इसके सौ कुवचन सहलूंगा तब इसके उपरान्त मारडालूंगा—

बदला लेनेको द्वारकाजी पर चढ़आया और प्रद्युम्नजी से युद्धहोने उपरान्त श्रीकृष्णने उसको मारा—

तदनन्तर दन्तवक्र और विदूरथ चढ़आये परन्तु ये भी मारेगये—

सुदामा पाण्डे (ब्राह्मण)

स्त्री-सुशीला-विद्यागुरु-सन्दीपन-मित्र अर्थात् गुरुभाई श्रीकृष्ण—

यह परमदरिद्र और हरिभक्त ब्राह्मण विदर्भनगर में रहते थे और भिक्षा से भोजन करते थे एक दिन अपनी स्त्रीके कहने से श्रीकृष्ण के यहां गये श्रीकृष्णने बहुत आदर किया अपने करसे उनके चरणोंको धोया और भोजन कराने उपरान्त श्रीकृष्ण ने सुदामा से कहा कि भो तन्दुल हमारी भाभी (तुम्हारीस्त्री) ने हमारे हेतु दियाथा वह क्यों नहीं देते पहिले बाल्यावस्था में गुरुपत्नी ने हमारे हेतु तुम्हारे हाथ वनको चना भेजा था उसको तुमने चबालिये थे वैसेही इस चावलको भी किया ऐसा कह उनकी कांखसे चावल की पोटली को खींचलिया जीर्णवस्त्र फटकर चावल बिखर गया तब श्रीकृष्णने दो मूठी उठा अपने मुखमें डाल लिया तीसरी मूठी लेते रुक्मिणी ने हाथ पकड़ लिया (इसका कारण यह है कि जितनी मूठी चावल चबाते उतनेही लोक उनको देते) इस प्रकार सातदिनतक प्रति दिन आदरपूर्वकरहे और पश्चात् अपने नगर आये तो अपनी पुरी द्वारका सम देख अचंभित हुये और कुछ दिन रहने उपरान्त श्रीकृष्णजी उनके यहां आये और सुदामाने आदरपूर्वक प्रार्थना किया कि महाराज अपने धनको लेजाइये क्योंकि यह मेरी भक्ति का बड़ा बाधक हुआ—

वृकासुर अथवा भस्मासुर ॥

भस्मासुर ने तपसे महादेवको रिझाने उनसे यह वर लिया कि जिसके मस्तकपर तू हाथ

रखलेगा वह भस्म हो जायगा—यह वर पाय उसने विचार किया कि इसीप्रकार शिवको भस्मकर पार्वती को लेआऊं और शिवके ऊपर हाथ रखनेको दौड़ा और शिवजी भागे जब बहुत थकितहुये तो हरिका ध्यान किया विष्णुने स्त्री रूपधर उससे कहा कि शिवके वर अब मृषाहोते हैं क्योंवृथा दौड़तेहो न मानो तो अपने मस्तकपर हाथ रखकर देखलो ज्योंहीं निज हाथ निज मस्तकपर रक्खा त्योंहीं भस्म होगया—

सूर्पणखा ॥

वंशावली—रावण क० दे०—

भाई—रावण, कुम्भकर्ण, खरदूषण, त्रिशिरादि—

पति—विद्युज्जिह्व राक्षस (कालकंज के वंशमें)—

यह वन जाते समय पचवटी में रामनिकट आई और उनके साथ विवाह की इच्छा किया परन्तु लक्ष्मणजीने रामकी आज्ञानुसार उसका कर्ण और नासा काटा और यहभी राम रावण समर का कारण हुआ (राम क० दे०)

श्रीकृष्णचन्द्र ॥

नाम—कृष्ण, वासुदेव देवकीनन्दन, यशोदासुत, गोपीश, गोपाल, गिरिधर, कंसारि, व्रजेश, यदुपति, द्वारकानाथआदि सहस्र नाम—

पिता—वसुदेव— माता—देवकी (उग्रसेन के भाई देवक की कन्या)—

पटरानी और उनमें उत्पन्न पुत्र और कन्या १—रुक्मिणी (भीष्मककी कन्या, लक्ष्मी का अवतार)—(भीष्मक क०दे०) जिससे प्रद्युम्नादि १० पुत्र और एक कन्या उत्पन्न हुई—

२ जाम्बवती—(जाम्बवान की कन्या—जाम्बवन्त क० दे०) जिससे—साम्ब आदि १० पुत्र और एक कन्या हुई—

३ सत्यभामा–(सत्राजितकी कन्या–सत्राजित क० दे०) जिससे भान आदि १० पुत्र और एक कन्या–

४ कालिन्दी–(सूर्यकी कन्या–जो यमुना किनारे कृष्ण वरहेतु तप करतीथी) जिससे सूरति आदि १० पुत्र और १ कन्या हुई–

५ मित्रविन्दा–(जयसेन उज्जैन राजाकी कन्या और माता उसकी राजादेवी श्रीकृष्णकी फूफी) जिससे वृष्क आदि १०पुत्र और १ कन्याहुई–

६ सत्या–(अयोध्या के राजा नग्नजितकी कन्या जिसको स्वयम्बर में श्री कृष्णने सात बैलोंको एकही बेरमें नाथकर विवाहा) जिससे श्रीमान् आदि १० पुत्र और १ कन्या हुई–

७भद्रा–(गयादेश के राजा ऋतुसुकृत की कन्या) जिससे सग्रामजित आदि १० पुत्र और १ कन्या हुई–

८लक्ष्मणा–(मद्रेशके राजाकी कन्या)जिससे वसुगोपादि १०पुत्र व १कन्या–

रानी–१६१०० (भौमासुर क० दे०) इन हरएक रानियों से दश २ पुत्र और एक २ कन्या हुई–

सारथी–दारुक– वंशावली–इसी क० के अन्त में दे०–

जन्म–जब पृथ्वी कंसादि राक्षसों के पाप भार से अतिविकल हुई तो उसने ब्रह्म और शिवद्वारा विष्णु स्तुति की और विष्णुने वसुदेव और देवकी (जिन्होंने पूर्वजन्म में पुत्र हेतु तप कियाथा) के गृह में अपने अंशों बलराम (लक्ष्मण)प्रद्युम्न (भरत), अनिरुद्ध (शत्रुघ्न) सहित अवतार लिया–और वेदकी ऋचायें गोपी और देवगण गोपरूप धारण करतेभये–

बाल्यावस्था–अवतार लेतेही कृष्णने चतुर्भुजरूपसे वसुदेव देवकी को दर्शन देकर कहा कि हमको इसी समय नन्दयशोदा (जिन्होंने कृष्ण बालरलीला देखने हेतु तप कियाथा) के गृह पहुंचादो और उनकी

इसके उपरान्त इनके श्वशुरसे जरासन्धने १८ बेर कृष्णसे युद्ध किया और १९ वीं बेर शिशुपाल के साथ चढ़ाई की और पराजय हुआ परन्तु अन्त में श्री कृष्णने भीमसेन के करसे वध कराया (जरासन्ध क० ३०)

जब कालयवन मथुरापर चढ़आया तो मथुरानामी कृष्ण की आज्ञासे द्वारका जा बसे और कृष्णजी भागते २ गन्धमादन की कन्दरा में जा मुचुकुन्दकी दृष्टि से उसको भस्म कराया (मुचुकुन्द क० ८०)-तत्पश्चात् भौमासुर को वधकर, युधिष्ठिर की यज्ञ पूर्णकरी और महाभारत में अर्जुन के सहायकहो दुष्ट क्षत्रियोंको वध कराया और दुर्वासाद्वारा यदुवंशियों को शाप दिला उनको निजलोक भेजदिया (दुर्वासा क० ८०) केवल वज्रनाभ (अनिरुद्ध सुत) इस वंशमें बच रहा-पूर्वोक्त रीति से भूमि भार उतार जड़नामी व्याध (बालिका अवतार) के बाण लगने के मिस से बलराम सहित निजधाम पधारे—

वंशावली-शूरसेन (स्त्री मरिष्या)

- वसुदेव स्त्री देवकी आदि १८
  - बलराम (रोहिणी से)
    - सारणेतु
    - दलमान
  - कृष्णजी ० (देवकी से)
    - प्रद्युम्न
      - अनिरुद्ध
        - वाराय
        - वज्रनाभ (यदुवंशियों का नाश होने पश्चात् यह राज्य करता रहा)
    - रानियाँ १६११० ० पुत्र कन्या ११०००
  - सुभद्रा (अर्जुन पत्नी)
- पृथा पति पाण्डु क० ३०
  - युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, नकुल, सहदेव
- श्रुतदेवी पति वृद्धशर्म शिशुपाल क० ३०
  - दन्तवक्त्र
- श्रुतकीर्ति पति धृष्टकेतु
  - सन्तर्दनादि
- राजाधिदेवी पति जयसेन
  - मित्रविन्दा (कृष्णपत्नी) विन्दन विन्दमन शिशुपालपक्ष
- श्रुतश्रवा पति दमघोष शिशुपाल क० ३०

स्वयप्रभा ॥

यह स्त्री विंध्याचल के एक गुफा में रहती थी और विश्वकर्मा की पुत्री हेमाकी सखी और दिव्यगन्धर्व की कन्या थी और वनजाते समय रामचन्द्र का दर्शन पा वन्दीपुर को गई और वहां रामनाम जप मुक्त हुई-

जयन्त ॥

पिता-इन्द्र- माता-शची-

- जबरामचन्द्रजी वनजाते समय चित्रकूट पर स्थित थे तो जयन्तने काकरूपमे जानकीजी के चरणों में चोंचमारा इस कारण रामचन्द्र ने एक तृण के बाणसे उसको मारा वह बाण उसके पीछे चला सर्वस्थान पर वह गया परन्तु राम विमुख होने के कारण किसीने उसको न रक्खा तो रामही के शरण आया रामचन्द्रने उसको एकनयन कर छोड़दिया-

शुकराक्षस ॥

यह पूर्व जन्ममें एक ब्राह्मण था तपकरने समय वज्रदंष्ट्र से वैरहोगया एक समय इसने अगस्त्य मुनिको निमन्त्रण किया वज्रदंष्ट्रने उसब्राह्मणकी स्त्रीका रूपधार मुनिको मनुष्यका मांस परोसदिया इस कारण मुनिने उस ब्राह्मणको शापदिया कि तू राक्षस हो रावणकी सहायता करै-

इसीशुक को रावणने रामचन्द्रका भेदलेने समुद्र पर भेजा था उसने लौट कर रामचन्द्रकी बड़ाई रावण से की तब रावणने उसको निकाल दिया और वह रामचन्द्र का दर्शन पाकर शापसे मुक्तहो फिर ब्राह्मण का मासहुआ-

गुणनिधि ब्राह्मण ॥

यह जगदत्त नामा ब्राह्मण का पुत्र था जो प्रथम बड़ा धनाढ्य था परन्तु

गुणनिधि ऐसा दुष्ट उत्पन्नहुआ कि यह नष्टकर्म्मों मेंधन व्ययकरने लगा अन्तको जगदत्तने उसको गृहसे निकाल दिया एकसमय शिवरात्रि का दिनथा जब कि वह भयसे व्याकुलहो गिरपड़ा परन्तु शिवके भक्त पूजनकी सामग्री लियेहुये शिवालयमें जानेथे उन वस्तुओंकी सुगन्धको पा गुणनिधि सचेतहो उनके पीछे पीछे गया और इसघातमें कि भक्त लोग जायँ तो मैं लेकरभागूं—रातिभर जागता रहा थोड़ीनिशि रहेपर शिवभक्त सोगये और गुणनिधि ने चाहा चाहा कि सामग्रीलेजावें त्योंहीं एकभक्त जागपड़ा और उसको बाणसे मारडाला देहान्तहोने उपरान्त उस शिवरात्रि के जागरण के प्रभावसे इसको शिवपुरी प्राप्तहुई और दूसरे जन्ममें कलिङ्ग देशके राजा इन्द्रमुनिका पुत्रहुआ और इसने राज्य पाकर स्वदेश में शिवपूजन का विस्तार किया—

पितर ॥

इन पितरोंका मुख्य काम यहहै कि मनुष्योंको दुष्कृतिसे रोकाकरते हैं—नाम पितरों के—सोमप, कालीयुप, अजय और हविष्मन्त—इन चारों का स्त्री स्वधाय (दक्षकीकन्या) थी जिससे तीनकन्या उत्पन्नहुईं—उनके नाम यहहैं—मैना, धन्या, कलावती—सनत्कुमारके शापसे इनतीनों को वंशावलीमें लिखेहुये पतिमिले—

वंशावली—

ब्रह्मा

मनु	वशिष्ठ	पुलस्त्य	अंगिरा
सोमप	कालीयुप	अजय	हविष्मन्त

सबकीस्त्री स्वधाय (दक्षसुता)

मैना (हिमाचलपत्नी)	धन्या धायार सुनैना (जनकपत्नी)	कलावती (वृषभानपत्नी)
पार्वती (शिवपत्नी)	जानकी (रामपत्नी)	राधा (कृष्णपत्नी)

ज्वालामुखीदेवी ॥

इसदेवी की उत्पत्ति इस प्रकार है कि जब सतीजी दक्षके यज्ञमें भस्महोगई तो उसमें से एक ज्वाला निकली और पश्चिम देशको गई वहा पर ज्वाला मुखी के नामसे प्रसिद्धहुई यह स्थान जालधरके पासहै–

हिमाचल ॥

नाम–हिमगिरि, हिमालय, तुहिनाचल, स्त्री–मैना (पितरोंकी कन्या)
पुत्र–मैनाक, क्रौंचादि १०० पुत्र– कन्या–पार्वती (जोश्रीशिवजीकी स्त्री)हुई
पुरोहित–गर्गमुनि–

तारकअसुर ॥

दशारथी– दिति (कश्यपपत्नी)

मय — वज्रांग (वरांगीपति)

मन्दोदरी — तारक

तारक के पुत्र: विद्युन्माली, कमलाक्ष, तारकाक्ष

तारक महाबली था और इसने इन्द्रलोक को जीतलिया पश्चात् स्वामिकार्तिकके हाथ मारागया–तत्पश्चात् तारकके तीनों पुत्र (स० दे०) ने ब्रह्मा से वर पाकर सौ सौ योजनके तीननगर बसाये जिनकानाम त्रिपुर रक्खा–इसनगर में शिवकी भक्तिपूर्वक सज्जन निर्भय रहनेलगे तब शिवने उनतीनों को अजय करके कहा कि जो इस त्रिपुर नगरको एक बाणमें भस्मकरेगा उसी के हाथसे तुम्हारा मरणहोगा–कुछदिन उपरान्त जब वर्लीहुये तीनों उपद्रव करने लगे तो विष्णुने अपन अगम अहरग (मुर्दा) को उत्पन्नकर उस नगरमें गिरकी

पूजा छुड़ाय आर्हण (नास्तिक) मतका प्रचार कराया जिससे शिवजीने क्रोधित हो उसनगर को भस्मकर सबदानवों को वधकिया केवल मयदानव बचा-तत्पश्चात् विष्णुजीने अर्हणको उसके चारशिष्यों सहित मरुस्थल (मारवाड़) में रहने और कलियुग में नास्तिक मत चलाने की आज्ञादी-

मुचुकुंद राजा ॥

वंशावली-सू० वं० दे०

पिता-मांधाता, माता-विंदुमती (शशिविंदु की कन्या)

एक समय देवासुर संग्राम में मुचुकुन्द इन्द्र की सहायता को गये बहुत दिवस तक युद्धहुआ तत्पश्चात् युद्धमें विजय पाकर और श्रमितहो देवताओं से सोनेके हेतु एकान्त स्थान पूछा तो उन्होंने गंधमादन पर्वत बतलादिया और यह भी कहदिया कि जो कोई तुमको जगावेगा वह तुम्हारी दृष्टि से भस्म होजायगा-जब कृष्णजी कालयवनके भयसे भागे तो उसी पर्वतम गये और अपना पीतम्बर राजाको ओढ़ाय छिपरहे कालयवन आतेही राजाको कृष्ण जान पीताम्बर खींच लिया-राजा जागपड़े और ज्योंहीं काल्यवन को देखा त्योंहीं वह भस्म होगया तिसके पीछे राजा बदरीकेदार में तप करके मुक्तहुये-

मय दानव ॥

पिता-कश्यप, माता-दिति कन्या-मन्दोदरी (रावणपत्नी)

वंशावली-तारक क० दे०

इसने शिवका तपकर वर पाया कि तुझको कोई न मारसकेगा इसीसे जब शिवजीने त्रिपुर (तारक क० दे०) को भस्मकिया तो यह बचगया था और तभीसे तलातल में रहनेकी आज्ञा पाई तभी से दानवों का आचार्य और शिल्पकार नियत कियागया-

शंखचूड दैत्य ॥

वंशावली- कश्यप
|
विप्रचित्ति
|
दम्भ
|
शंखचूड

स्त्री-तुलसी (धर्म ध्वज की कन्या - इसने ब्रह्मा के वरसे शंखचूड़ पतिपाया-) पूर्व जन्म में शंखचूड सुदामा नामी गोप और श्रीकृष्ण का सखाथा परन्तु राधाजी के शाप से दानव का जन्मपाया-

तुलसी ऐसी पतिव्रताथी कि उसके सतमें उसका पति नहीं माराजाताथा जब शिवजीने विष्णुका ध्यानकिया तो विष्णुने ब्राह्मण का रूप धारणकर उसका सतभंग किया तो शिवने शंखचूड को मारपाया और उसीकी हड्डियों से शंख उत्पन्न हुआ-और तुलसी के शाप से विष्णुजी पत्थर होकर शालग्राम नामसे प्रसिद्ध हुये और तुलसी दूसरे जन्म में गंडकी नदी हुई जिसमें शालग्राम की मूर्ति पाईजाती है और फिर वृक्ष हुई जिसके पत्ते शालग्राम को चढायेजाते है-

अन्धकासुर ॥

पिता-कश्यप, माता-दिति-शिर-१०००कर-२०००-

जब यह बड़ा उपद्रव करनेलगा तो शिवजीने बड़ा युद्धकिया और दुर्गाने धानुषधी रूपधारणकर उसको नष्टकिया और उसके साथियों-चंड, मुंड, जम्भासुर, कुम्भासुर, कालनेमन, पाकहारीन, मदन, मयन आदि ७ योधा नन्दीने वधकिया-

नागासुर (गजासुर) ॥

पिता-महिषासुर (जिसको दुर्गाने वधकिया दुर्गा क० दे०)

शरीर-सौ सहस्र योजन लम्बा और इतनाही चौड़ाथा-

गजासुर के तप से प्रसन्नहो ब्रह्माने वरदिया कि तू कामजित् पुरुष के हाथ माराजायगा-ऐसा वरपाकर अपने पिताका बैरलेने हेतु देवतों को महादुःखदेने लगा तो शिवजी (जो कामजित् हैं) ने उसको मारा और मरती समय उसने शिवजी से वर मांगलिया कि आप नित्य मेरे चर्मको स्पर्श किया कीजिये और कृत्तिवासेश्वररूप से काशीजी में मुझे दर्शन दिया कीजिये-

उत्पल और विदल दैत्य ॥

यह दोनों दैत्य ब्रह्मा से वरपा महाबली हुये और नारद से पार्वती की सुन्दरता सुन उनके हरने की इच्छा से कैलासपर गये तो शिवजी आज्ञानुसार पार्वती (जो गेंद खेल रहीथीं) ने गेंद से उन दोनोंको मारडाला-यह दशा ज्येष्ठेश्वर लिंगके निकट हुईथी-तब देवताओंने हर्षितहो वहींपर कुन्दुकेश अर्थात् गंधुकेश लिंग स्थापितकिया-

हरिकेश ॥

वंशावली	
	रत्नभद्र (यक्षपति)
	पूर्णभद्र (स्त्री-कनककुन्दला)
	हरिकेश

यह और इसके पुरुषा सब बड़े शिवभक्त थे शिवने हरिकेश को काशीमें दर्शन दे दण्डपाणि नामसे प्रसिद्ध किया और उसको ऐसा मान्यकिया कि एक समय वीरभद्र व अगस्त्यमुनि उसका सन्मान न करनेके कारण काशीसे निकालेगये

महानन्द ब्राह्मण ॥

यह ब्राह्मण द्वापर में हुआ और अपने धर्म को त्याग इसने परस्त्री के राग

विदा किया और काशी में एक चाण्डाल का दान लेने से यह भी चाण्डाल प्रसिद्ध हुआ इस लज्जासे यह काशी से भागा और मार्ग में चार चोरोंने उसको मारडाला यह। चारों चोर मुक्तमंडप स्थानपर शिवकथा सुन मुक्त हुये-

नन्दीश्वर शिव ॥

पिता शिलादमुनि अथवा शिवजी-
नेत्र-तीन, भुजा-चार, स्थान-कैलास,- स्त्री-सुयशा (मरुद्की कन्या)

शिलादमुनिने पुत्र हेतु यज्ञ किया तो शिवजी यज्ञकी अग्निकुण्डसे उत्पन्नहुये मुनिने उनका नाम नन्दीश्वर रक्खा-और शिवजीने गङ्गाजल नन्दीश्वरके ऊपर डाला जिससे-जटोदक, त्रिस्रोत, वृषध्वनि, स्वर्णोदक, जम्बू पांच नदियां उत्पन्नहुई-नन्दीश्वरने २६,८२ पुत्रेश्वर लिंग स्थापित किया जिसके निकट सुगन्ध तीर्थहै-

भैरव (शिवअवतार) ॥

नाम-कालभैरव, कालराज, पापभक्षण--

एक समय ब्रह्माने अपने को और विष्णुने अपने को देवताओं में सर्वाधिक कहा तो शिवने भैरवको उत्पन्न करके आज्ञादी सो उसने ब्रह्माका पांचवा शिर काट लिया तबसे ब्रह्मा चतुरानन होगये-इस ब्रह्महत्याके शान्त करने हेतु भैरव वह शिर लिये हुये तीनोंलोक में भ्रमणकरके काशी में आये और वहीं पर शिर गिरादिया इससे उसस्थान का नाम कपालमोचन हुआ-

जब भैरव भ्रमण करते थे तो शिवने एक ब्रह्महत्या नामी स्त्री भैरवके उनके पीछे पीछे करदीथी जिसका स्वरूप यह था-रक्तवर्ण, रक्तनेत्र, शिर आकाशतक, जिह्वा मुखसे बाहर निकली हुई-

वीरभद्र (शिवअवतार) ॥

पिता-शिव भुजा-चार, नेत्र-तीन-

नाम पीठ	स्थान	नाम पीठ	स्थान
सुगंधा	माधववन	वरारोहा	सोमेश्वर—
त्रिसंध्या	गोदावरी	पुष्करावती	प्रभास
रतिप्रिया	गंगाद्वार	देवमाता	सरस्वती नदी
शुभानन्दा	शिवकुण्ड	पारावारा	समुद्रतट
नन्दिनी	देविका तट	महाभागा	महालय
रुक्मिणी	द्वारावती	पिंगलेश्वरी	पयोष्णी
राधा	वृन्दावन	सिंहिका	कृतशौच
देवकी	मथुरा	अतिशांकरी	कार्तिक
परमेश्वरी	पाताल	लोला	उत्पलावर्तक
सीता	चित्रकूट	सुभद्रा	शोणसंगम
विन्ध्यनिवासिनि	विन्ध्याचल	माता	सिद्धवन
महालक्ष्मी	करवीर	अनंगालक्ष्मी	भरताश्रम
उमादेवी	विनायक तीर्थ	विश्वमुखी	जालन्धर
आरोग्या	वैद्यनाथ	तारा	किष्किन्धागिरि
महेश्वरी	महाकाल	पुष्टि	देवदारुवन
अभया	उष्णतीर्थ	मेधा	काश्मीरमण्डल
नितम्बाभी	विन्ध्याचल	भीमा	हिमाद्रि
माण्डवी	माण्डव्य	तुष्टि	विश्वेश्वरक्षेत्र
स्वाहा	महेश्वरीपुर	शुद्धि	कपालमोचन
प्रचण्डा	छगलण्ड—	ध्वनि	शंखोद्धार
चण्डिका	अमरकण्टक	धृति	पिंडारक

नाम पीठि	स्थान	नाम पीठि	स्थान
कला	चन्द्रभागातट	निधि	कुबेरालय
शिवधारिणी	मत्स्योदरी	गायत्री	वेदवदन
अमृता	वेणा	पार्वती	शिवसन्निधि
उर्वशी	बदरिकाश्रम	इन्द्राणी	देवलोक
औषधि	उत्तरकुरु	सरस्वती	ब्रह्मामुख
कुशोदका	कुशद्वीप	प्रभा	सूर्यबिम्ब
मन्मथा	हेमकूटगिरि	वैष्णवी	माताओं में
सत्यवादिनी	कुमुद	अरुन्धती	सतियों में
वन्दनीया	अश्वत्थ	तिलोत्तमा	रमाओं में

ग्रहपति (शिवअवतार)

बहुत दिनों तक विश्वामित्रके कोई पुत्र न हुआ तो अपनी स्त्री के कहने से काशीजी में १२ वर्षपर्यन्त शिवतप किया शिवने प्रसन्न हो दर्शन दिया और विश्वामित्र को पुत्रवरदान दिया और शिवके वरसे विश्वामित्रकी स्त्री सरस्वतीसे ग्रहपति नाम पुत्र हुआ जो शिवअवतार है–

वृषेश्वर (शिवअवतार)

समुद्र मथन उपरान्त जब विष्णुजी ने अमृत देवतों को पिलाया तब देव-सुर संग्राम होते होते दैत्य परास्त होकर पातालको भागे विष्णुने उनका पीछा किया वहां पर स्त्रियोंको देख विष्णु मोहित हो गये और उनसे बहुत सन्तान हुई परन्तु शिवजी वृषेश्वर अवतार धर विष्णुजी को देवलोक को लिवालाये और उन सन्तानको जो देवतों के दुःखदायी हुए थे शिवने नष्टकिया–

पिप्पलाद (शिवअवतार)

पिता-दधीचिऋषि माता-सुवर्चा
स्त्री-पद्मा (यह अनरण्य राजाकी कन्या गिरिजाका अवतार है)

जब देवगण वृत्रासुर से परास्त होकर दधीचि की अस्थि मांगलेगये और इस कारण मुनिका देह नष्ट हुआ तब उनकी स्त्रीने देवताओं को शापदिया कि तुमलोग निरसंतान होजाव-ऐसा कहकर सती होनेजाती थी परन्तु आकाश वाणी के रोकने से सती नहीं हुई और एक पिप्पल के नीचे बैठगई वहीं पर शिवके अंशसे एक बालक उत्पन्न हुआ उसका नाम पिप्पलाद रख वह ही सती होगई और पिप्पलाद अपनी माताकी आज्ञानुसार तप करने लगे-

एकसमय धर्मराजने पिप्पलादकी श्री का भंग करना चाहा तो इन्होंने शापदिया कि तेरे चरण त्रेतामें तीन, द्वापरमें दो, और कलियुगमें एकही रह जायगा इसके उपरान्त धर्मराजने पिप्पलाद को आशिष दिया कि तुम फिर युवावस्था को प्राप्तहो-

महेश (शिवअवतार)

एक समय शिव और गिरिजा अन्त पुर में विहार करते थे और द्वारपर भैरवको बैठाल दियाथा-जब पार्वतीजी अन्त पुरसे निकलीं तो भैरवने कुदृष्टि पूर्वक उनको देखा इस कारण गिरिजाने भैरवको और भैरवने गिरिजाको शापदिया जिससे दोनों मनुष्य तन पाकर पृथ्वीतल में आये और महेश और शारदा नामसे प्रसिद्ध हुये-

अवधूतपति (शिवअवतार)

किसी समय इन्द्र अभिमानयुक्त देवताओंसहित कैलाशको जाता था शिवने उसका अभिमान तोड़ने हेतु उसको अवधूतरूप धर मार्ग में मिले-इन्द्रने उनसे

जाकेर पूछा कि शिवस्थान कहां है परन्तु वह न बोले तब इन्द्रने उनपर वज्र चलाया इससे तब शिवजीने एक ज्वाला उत्पन्नकी जिससे सब देवगण भस्म होनेलगे परन्तु बृहस्पति ने शिवकी स्तुति कर उनको बचाया-

वेश्यारूप (शिवअवतार)

नन्दिग्राम में एक नन्दा नामी वेश्या रहती थी वह अपने कुत्ते और बन्दर को ले नित्य शिवालय में नृत्य और गान करती थी शिवजी प्रसन्न हो उसको एक कंकण दिया और उसकी इच्छानुसार वेश्यारूपधार उसके संग तीनदिवस रहे अन्तकाल में वह वेश्या उनकी चितापर बैठ भस्महोगई और शिवकृपासे बैकुण्ठ सिधारी-

द्विजेश (शिवअवतार)

एक समय भद्रायुष राजा अपनी स्त्री मालिनी (चित्रांगद की कन्या) सहित वनविहारको गया यह शिवका महाभक्त था इसकी परीक्षाहेतु उसी वनमें शिवजीने एक ब्राह्मण और ब्राह्मणी का रूप धारण किया उस स्त्री को एक मायाके सिंहने खालिया तब वह ब्राह्मण (शिव) राजा के निकट आकर कहा कि मेरी स्त्री को सिंहने खालिया इस कारण तू अपनी स्त्री दे राजा स्त्रीको दे चिता बनाया और शिव २ कहकर ज्योंही उस चितापर बैठा त्योंही शिवने द्विजेश अवतार लेकर राजा और रानीको शिवलोक भेजदिया-

नल (राजा)

पूर्वजन्म-आहुकभिल्ल स्त्री-दमयन्ती (जो पूर्वजन्म में आहुकी भिल्लिन थी)

अर्बुदाचल पर एक भील आहुक नामी अपनी स्त्री आहुकी सहित रहताथा एक समय शिवजी यतीका वेषधर उसके पासगये रात्रि होगई भीलने शिव को अपने घरमें वासदिया और आप बाहर रहा दैवयोग से उसको किसी जन्तुने

मारडाला भीउनी जब सती होनेलगी तो शिवने जितनाथरूपसे उसको वर दिया कि तेरापति राजानल होगा और तू दमयन्ती नाम से प्रसिद्धहो उसको विवाही जायगी-

मित्रसह ॥

यह इक्ष्वाकुवंशी राजा बडा धर्मात्मा था वन में अहेर खेलते समय किसी राक्षस को इसने मारडाला उस राक्षस का भाई छलकर ब्राह्मण बन राजा के यहा गया राजाने उसको अपना पाककर्त्ता बनाया एक समय वशिष्ठमुनीको इसने मनुष्य मांस खिलादिया इससे मुनिने राजाको शापदिया कि तू कल्मापपाद नामी राक्षस होकर मनुष्य भक्षण करै इस प्रकार राजा राक्षसहो मनुष्यों को मार खानेलगा एक समय उनमें एक मुनिको स्त्रीप्रसंग समय मारखाया तो मुनिपत्नी शापदिया कि तू भी जो अपनी स्त्रीसे भोग करेगा तो मरजायगा एक इस शापको भूलकर अपनी स्त्री से भोगकर मृत्यु को प्राप्त हुआ तब वशिष्ठजीने सोचा कि अब सूर्यवंश में कोई न रहगया तो उस स्त्रीसे एक बालक उत्पन्न किया और उसका नाम अशुक रक्खा तत्पश्चात् मित्रसह पुत्रको राज्य सौंप तप हेतु उत्तराखंड को गया और मिथिलापुरी में पहुंच गौतम ऋषिके उपदेश से महाबल शिवलिंग का दर्शनकर ब्रह्महत्या से मुक्तहुआ-

रुद्राक्ष की उत्पत्ति ॥

जब श्रीमहादेवजी एक दिव्य सहस्र वर्ष तपस्या के पश्चात् अपने नेत्रों को खोला तो दो बिंदुजल अर्थात् आंसू उनके नेत्रोंसे गिरे और उसी आंसू से रुद्राक्ष उत्पन्न हुआ उनके कई भेद होतेहैं यथा-एकमुखी, द्विमुखी, त्रिमुखी, चतुर्मुखी पंचमुखी, षट्मुखी, सप्तमुखी, अष्टमुखी, नवमुखी, दशमुखी, एकादश मुखी, द्वादशमुखी, त्रयोदशमुखी और चतुर्दशमुखी-

भीमदैत्य ॥

पिता-कुम्भकर्ण, माता-एक विधवा राक्षसी-

एक समय भीमने अपनी मातासे पूछा कि मेरा पिता कौनहै और कहाहै उसने उत्तर दिया कि तेरा पिता कुम्भकर्ण है और रामचन्द्रसे मारेगये स्वर्गवासी हुआ तब मैं अपने पिताके घर चलीआई मुनियोंने मेरे पिता को मारडाला तो मैं तुझको लेके इस वनको भागआई हूं यह भीम महाक्रोधकर देवतोंसे लडा और देवगण पराजितहो भागगये तब उसने सोचा कि जो शिवजी रामचन्द्र को अपना बाण न देते तो मेरा पिता न माराजाता इस कारण वह शिवभक्तों को दुःख देनेलगा और कामरूप देशमें जा शिवमन्दिरों को तोड़ वहा के राजा प्रियधर्म और उसकी रानी दक्षाको ज्योंही खड्गसे मारनेलगा त्योंही शिवजी प्रकट होकर उसको भस्म करदिया-तभीसे वहांपर भीम पत्थर होकर पूजनेका नाम रो और शिवजी भीमशंकर नाम से प्रसिद्धहुये-

इन्द्रसेन राजा ॥

यह राजा कलियुग में महादुष्ट होकर ब्राह्मणों और मुनियों को दुःख देने लगा तो शिवने सिंहरूप धरणकर उसको वधकिया मृत्यु समय उसके मुख से आहर हरहर शब्द निकला जिससे वह शिवगणों में होगया-

दाशार्ह राजा ॥

इस यदुवंशी राजाने काशीके राजाकी कन्या कलावती के संग विवाहकर उसके निकट गया तो उसका तेज अग्निसम देख उसने पूछा कि कमला कारण क्याहै उसने कहा कि तुम पराशरजी जपो तो हमारे निकट आसकतेहो राजा ने ऐसाही किया तो उस स्त्रीका अंग चन्दन सम शीतलहोगया-

सुमति ब्राह्मणी ॥

इसका विवाह एक ब्राह्मण के साथ हुआथा परन्तु जब उस ब्राह्मण का देहान्त होगया तो वह दुष्कर्म करनेलगी और एक शूद्रके साथ रहकर मदिरा पिया करती थी एकदिन एक गऊशाला में जा एक बछड़े को मारडाला-कुछदिन उपरान्त उसका देहान्त होगया तो वह एक चाण्डाल के गृह उत्पन्न हुई और अंधी होने के कारण महाकष्टको प्राप्त होती भई एकदिन भूखसे विकलहो गो कर्ण तीर्थमें माघकृष्ण चतुर्दशी को गई और भोजन मिलने की आशा में रात भर जागी परन्तु भोजन न मिला इस कारण उसका देहान्त है गया और उसदिन के जागरण करने के कारण शिवलोक को प्राप्तहुई-

स्त्री-दारुका-

दारुकराक्षस ॥

दारुका के तपसे गिरिजाने प्रसन्नहो उसको वरदिया कि तेरे साथ दारुक वन भी फिराकरेगा इस कारण वह जहां २ जातीथी तहां २ उसके साथ वह वन भी घूमताथा और दारुक उसका पति चारोंओर उपद्रव करनेलगा तो और्वमुनिने शापदिया कि जोतू किसीको कष्टदेगा तो तू नष्ट होजायगा इस कारण वह पश्चिम समुद्रमें एक नगर (अरब) १६ योजनका बसाया और जो नाव उधरसे निकलती थी उसको पकड़कर उसमें के मनुष्यों को बन्दीगृह में डालदेताथा एकदिन एक नावको जिसमें वैश्यपति नामी शिवभक्तभी था पकड़लिया वैश्यपतिके सहायार्थ शिवजीने आकर सब दैत्योंको मारडाला केवल दारुक अपनी स्त्रीसहित गिरिजा के बचाने से बचरहे और वहींपर वैश्यपतिने नागेश्वरनाथ लिंगस्थापित किया-

एक समय नैषध देशका राजा उस देशमें नागेश्वरनाथ के दर्शनार्थ गया और वहांपर पहुँच दैत्यों को वशकिया और केवल दारुक को छोड़कर गिरिजा की आज्ञानुसार फिर राज्य करनेलगा-

हैहय राजा ॥

पिता-विष्णु (हयरूप में), माता-लक्ष्मी (घोड़ीरूप में)

जन्म-एक समय सूर्यका पुत्र रेवन्त अश्वारूढ़हो विष्णु के दर्शन को गया वहां पर लक्ष्मीजी उस घोड़ेकारूप एकटक देखनेलगी तब विष्णुने लक्ष्मीको शापदिया कि तू घोड़ी होजाय इस प्रकार घोड़ीरूपहो वन में तप करने लगी कुछदिन उपरान्त शिवके कहने से घोड़ाका रूपधर विष्णुने उस घोड़ी से प्रसंग किया जिससे एक बालक उत्पन्न हुआ उसको तुर्वसु (ययाति सुत) को दे आप वैकुण्ठ को चलेगये राजाने उस बालकका नाम हैहय अथवा एकवीररक्खा और कुछदिन उपरान्त उस बालकको राज्यदे रानीसहित मैनाक पर्वतपर तप कर तन त्याग किया-

स्त्री-एकावली (जिसके पिताका नाम रम्य और माताका नाम रुक्मरेखा था यह कन्या यज्ञके अग्निकुण्डसे निकली थी) और दूसरी स्त्री यशोवती थी जो राजारम्यके मन्त्रीकी कन्या थी-जब एकावली सयानीहुई तो उसको कालकेतु दानव हरलेगया तब यशोवती राजा हैहयको अहेर खेलतेसे लिवा लेगई और राजाने कालकेतुको मारकर उस कन्याको उसके पिताको सौंप दिया तत्पश्चात् उसके पिताने उस कन्याका विवाह हैहयके साथ करदिया-

वंशावली- विष्णु (अश्वरूप में अथवा तुर्वसु)

हैहय (एकवीर)
|
कृतवीर्य
|
कार्तवीर्य (सहस्रबाहु)
|
जयध्वजादि १००० पुत्र
|
तालजंघ
|
पुत्र

दान (४)

चारमुख्य दानहैं-१ रोगी को औषधदेना, २ शरणागतको बचाना, ३ विद्यार्थी को विद्यापढ़ाना, ४ भूखोंको खिलाना-

षोड़शदान १६ हैं-१ धरती २ आसन ३ पानी ४ कपड़ा ५ दीपक ६ अनाज ७ पान ८ छत्र ९ सुगन्धित चीज़ १० फूलों की माला ११ फल १२ सेज १३ खड़ाऊ १४ गाय १५ सोना १६ रुपयाचांदी-

ऋण (३)

ऋण तीन हैं-१ देवऋण, २ पितृऋण, ३ ऋषिऋण-

शस्त्र अर्थात् हथियार (५)

शस्त्र पांचप्रकारके होतेहैं-द्रावण, शोषण, रोदन, मोहन, मारण-

नाम २०-खड्ग, सग, चर्म,पाश,अंकुश,त्रिशूल,शूल, चाप, बाण, गदा, शक्ति, भिन्दिपाल, तोमर, मुशल, मुद्गर, पट्टिश, परिघ, भुशुण्डि, चक्र आदि-

उपचार ॥

पूजनके उपचार १६ हैं-विधाना, आवाहन, आसन, पाद्य, अर्घ, आचमन, स्नान, यज्ञोपवीत, चन्दन सुगन्धित, पुष्प, धूप, दीप, नैवद्य, प्रणाम, प्रदक्षिणा, विसर्जन-

तिलक-(२)

त्रिपुण्ड्रतिलक-भालपर दोनों भौंहों के बीच में खड़ी दो लकीरें तो एक अनामिका और दूसरी मध्यमा अगुली से बनावे और इन दोनों लकीरों के बीचमें एक लकीर अंगुष्ठ से बनावे-

आभूषण (१२)

आभूषण १२ हैं–१ नूपुर २ किंकिणी ३ चूड़ी ४ मुँदरी ५ कंकण ६ बाजूबन्द ७ हार ८ कण्ठश्री ९ वेसर १० बिछिया ११ टीका १२ शीशफूल–

व्यसन (१८)

१८ व्यसन यह हैं–अहेर, दिन में सोना, निर्लज्ज वचन, स्त्री आधीन होना, मैथुनादिकी वार्ता, मद्यपान, जुआ, गान, नृत्यदेखना, बाजा बजाना, व्यभिचार, [illegible], ईर्षा, विपरीत वाक्य, कठोरवचन, शीघ्रमारना, गाली, अपने स्वामी का अहित चाहना–

षट्कर्म (६)

षट्कर्म के नाम–वेद पढ़ना, वेद पढ़ाना, दान देना, दान लेना, जप करना, जप कराना यह छः कर्म ब्राह्मण के हैं–

योनि ॥

८४ लाख योनि हैं–जिसमें वृक्ष २० लाख, जलसे उत्पन्न ९ लाख, कृमिआदि ११ लाख, पक्षी १० लाख, चतुष्पद ३० लाख, मनुष्य ४ लाख हैं–

पञ्चकन्या ॥

पञ्चकन्याओं के नाम और उनके पति के नाम नीचे लिखे जाते हैं–

नाम कन्या	नाम पति	नाम कन्या	नाम पति
अहल्या	गौतम	कुन्ती	पाण्डु
द्रौपदी	पञ्चपाण्डव	मन्दोदरी	रावण
तारा	बालि		

आकर ॥

चारों आकरके नाम उदाहरण सहित-

	आकर	अर्थ	दृष्टान्त
१	अंडज	अंडेसे उत्पन्न	पक्षी, कीड़े आदि
२	पिंडज	देहसहित उत्पन्न	मनुष्य, पशु
३	स्वेदज	पसीना से अथवा जलसे	जुआ
४	स्थावर	पृथ्वीसे उत्पन्न	वृक्ष आदि-

नाड़ी ॥

३ नाड़ी के नाम अर्थ सहित-

	नाम	अर्थ	
१	पिंगला	नासिकाका	दहिना श्वास चलना
२	इड़ा		बाया श्वास चलना
३	सुषुम्णा		दोनोंश्वास बराबर चलना

रस ॥

छ रसोंके नाम-मधुर, कषारी, खटाई, कडुवा, तिक्त, लवण-

धातु ॥

पृथ्वी से उत्पन्न ७ धातों के नाम-सोना, चांदी, तांबा, रांगा, सीसा, लोहा, जस्ता-

शारीरिक ७ धातु येहैं-चर्म, रुधिर, मांस, मेद, अस्थि, मज्जा, वीर्य-

फल अथवा पदार्थ ॥

चारफल अथवा पदार्थ के नाम–अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष–

मुक्ति ॥

चार प्रकार के भक्तियों के नाम अर्थ सहित ॥

नाम	अर्थ
१ सालोक्य	परमात्मा के लोक में रहना–
२ सारूप्य–	परमात्मा सदृश रूप धारकर रहना–
३ सामीप्य–	परमात्मा के समीप रहना–
४ सायुज्य–	परमात्मा में मिलजाना–
५ सार्ष्टि–	

विद्या ॥

चौदह विद्याओं के नाम ॥

१ ब्रह्मज्ञान, २ गायन, ३ रसायन, ४ ज्योतिष, ५ वैद्यक, ६ शस्त्रविद्या ७ पैरना, ८ व्याकरण, ९ छन्द, १० कोक, ११ काव्य, १२ घोड़ेकी सवा... १३ नटविद्या, १४ चातुरीविद्या–

राजश्री ॥

राजाओं को ७ वस्तु अवश्य हैं उन्हीं को राजश्री कहते हैं–
१ मंत्री, २ शस्त्र, ३ घोड़ा, ४ हाथी, ५ देश, ६ कोष, ७ गढ़–

बाजा ॥

बाजा ३॥ प्रकारके होतेहैं–

१ खाल–जैसे–नगारा, ढोल, पखावज आदि–

२ तार–जैसे–तम्बूर, सारंगी, वीणा, सितार आदि–

३ फूंक–जैसे–नफीरी, बांसुरी, सहनाई आदि–

३॥ आधे बाजेमें मजीरा, झांझआदि–

युग (४)

नाम युग	प्रमाण वर्ष में	नाम युग	प्रमाण वर्ष में
१ सत्ययुग–	१७२८०००	२ त्रेतायुग–	१२९६०००
३ द्वापर–	८६४०००	४ कलियुग–	४३२०००

अन्त करण (४)

१ मन, २ चित्त, ३ बुद्धि, ४ अहंकार–

उपनिषद् (५२)

१ माण्डूक्य, २ बृहदारण्य, ३ ईशावास्य, ४ प्रश्नी, ५ मुण्डक, ६ सर्व, ७ अश, ८ नारायण, ९ प्रणव, १० अथर्व, ११ सरहंस, १२ अमृत, १३ कौशीतकि, १४ गर्भ, १५ आसुर, १६ वेद, १७ महात्मा, १८ प्रबोध, १९ पैंगल, २० शतरुद्रीय, २१ योग, २२ अथर्वशिरसा, २३ योगतत्त्वानन्द, २४ शिवसरल, २५ आत्मा, २६ ब्रह्मविद्या, २७ अमृतनाद, २८ तेजबिन्दु, २९ गर्भ, ३० जाबालि, ३१ महानारायण, ३२ ब्राह्मण, ३३ शुक्ल, ३४ क्षुरिका, ३५ परमहंस, ३६ अर्थित, ३७ केनरेश्वरी, ३८ आनन्दवल्ली, ३९ भृगुवल्ली, ४० भृगुरूक, ४१ योगशिखा, ४२ मूलनागूल, ४३ अमृतनाद, ४४ ध्यानबिन्दु,

८५ मात्कलतारक, ४६ अरक्नी, ८७ मणव, ८८ सुमर, ८६ नृसिंह, ५० अमरमाध्वी–

अनहद शब्द वा नाद ॥

१० नादों के नाम–धग, शख, वीणा, ताल, बासुरी, मृदंग, नफीरी, बादल के गरज सदृश आदि—

स्वर (५ वा ७)

१ षड्ज, २ ऋषभ, ३ गाधार, ४ मध्यम, ५ पचम, ६ धैवत, ७ निषाद–और कोई पाचवें और छटवेंको छोड़कर पाचही स्वर बतलाते हैं–

शास्त्र (६)

नाम–निर्माणिक	नाम–निर्माणिक
१ मीमासा–जैमिनि	२ पातजलि–शेष
३ साख्य–कपिलमुनि	४ न्याय–वशिष्ठ
५ वैशेषिक–गौतम	६ वेदान्त–वशिष्ठ

राग (६) और रागिनी (३६)

राग– उनकी रागिनी–

१ भैरव–भैरवी, रामकली, गुजरी, टोडी, वैराटी–
२ मालकौंस–गोन्दरी, कुकुभा, अगिता, सोहनी, खमावती–
३ हिंडोल–बसन्ती, पचमी, बिलावली, ललिता, देशाटुशनी–
४ दीपक–धनाश्री, नट, जयत, भीमपलासी, कामोदा,
५ श्री–मालवी, त्रिवनी, गौरी, पूर्वी, जगनहुला–
६ मेघ–सोरठी, मलारी, शारगी, हरिवरा, मधुमाधवी

गुण (१४)

गुण १४ हैं—१ बुद्धि, २ सुख, दुःख, ४ इच्छा, ५ द्वेष, ६ यत्न, ७ संख्या, ८ प्रमाण ९ पृथ, १० संयोग, ११ विभाग, १२ भावना, १३ धर्म, १४ अधर्म—

मायासे उत्पन्नगुण—सत, रज, तम, तीनहैं—

अंग (८ योगके)

१ यम—अर्थात् किसी जीवको दुःख न देना, सचाइ चोरी न करना ब्रह्मचर्यरहना, किसीसे कुछ न मांगना—

२ नियम—अर्थात् तपस्याकरना जप शौच ईश्वरपूजन-

३ आसन—

४ प्राणायाम—अर्थात् श्वास रोकना

५ प्रत्याहार—अर्थात् इन्द्रियों के विषयकम न करना

६ धारणा—

७ ध्यान—

८ समाधि—

विकार (६)

जन्मलेना १ स्थितरहना २ बढ़ना ३ विपरिणाम ४ अपक्षीण ५ विनाश ६

उपपुराण (१८)

१ काली, २ शाम्ब, ३ सनत्कुमार, ४ वरुण, ५ मारीचि, ६ नन्दी, ७ शिव, ८ दुर्वासा, ९ मुनि, १० नारदीय, ११ कपिल, १२ सौरि, १३ माहेश्वरी, १४ शुक्र १५ भार्गव १६ आंगिर, १७ भ्रम, १८ पाराशर—

स्मृति (१८)

१ मनु, २ याज्ञवल्क्य, ३ मिताक्षरा, ४ हारीति, ५ पाराशर, ६ भृगु, ७ सामपिति, ८ कात्यायन, ९ वशिष्ठ, १० भरद्वाज, ११ कौशिक, १२ वार्हसाति, १३ गौतम, १४ कश्यप, १५ आसुर, १६ जमदग्नि, १७ अस, १८ यम—

षट्प्रयोग (६)

१ शान्ति २ वशीकरण ३ स्तम्भन ४ विद्वेषण ५ उच्चाटन ६ मारण—

जनक राजा ॥

नाम—विदेह (यह नाम इस कारण हुआ कि ईश्वर भजन में ऐसे लीन रहतेथे कि अपनी देहकी भी सुधि न रखतेथे)

स्त्री—सुनैना (इनकी उत्पत्ति पितर क० दे०)

पुत्र—लक्ष्मीनिधि (जिसकी स्त्रीका नाम सिद्धिकुँवरि था)

भाई—कुशकेतु (जिसकी कन्या श्रुतिकीर्ति शत्रुहन को विवाहीगई) और कुशकेतु (जिसकी कन्या माण्डवी भरतजी को विवाहीगई)

कन्या—उर्मिला (सुनैना से उत्पन्न हुई और लक्ष्मणजी को विवाहीगई) और सीताजी (पृथ्वी से उत्पन्न हुई और श्रीरामचन्द्रको विवाहीगई)

वंश—निमिवंश—(निमि क० दे०)

गुरु—शतानन्द (गौतम के पुत्र इनकी वंशावली चन्द्र व० ऐ०)

जब जनकपुर में अकाल पड़ाथा तो उसके निरृत्यर्थ राजा जनक निजकरसे सुवर्णका हल लेकर जोतनेलगे और हलके सीत (फाल) के लगनेसे पृथ्वीसे एक घड़ा निकला (यह वह घड़ाथा जिसको मुनियोंने अपने २ जघाके रक्तसे भरकर रावण के दूतोंको जो मुनियों से करलेने आयेथे देकर कहा कि इसघट के खुलतेही रावण का नाश होगा—यह वृत्तान्त दूतों के मुखसे सुनकर रावणने

आरोग्यपरिवाव्रत–चैत्रसुदी १ को सूर्यकी पूजा करने से आरोग्यता और सुख प्राप्त होताहै–

विद्याव्रत–चैत्रसुदी १ को इस व्रतको रक्खै और चित्रविचित्र की पूजाकरै तो विद्यालाभ हो–

तिलकव्रत–चैत्रसुदी १ को व्रत रक्खै और वत्सर की मूर्तिवना पूजन करै तो भूत प्रेत आदि नाशहों–कथा इसकी इसप्रकारहै कि राजा शत्रुजी की स्त्री चित्रलेखा जो बड़ी पतिव्रताथी इस व्रतको करके जब अपने भालपर तिलक करतीथी तो सब भूत प्रेतादि शान्त होजातेथे एक समय रानी तिलक कियेहुये राजाके निकट बैठीथी उसी समय में मृत्युआई परन्तु रानीको तिलक युक्त देख लौटगई–इस व्रतको युधिष्ठिरने श्रीकृष्ण उपदेशसे कियाथा—

रोटकव्रत–श्रावण सुदी १ से ३१ मासतक इस व्रतको रखकर श्रीमहादेव की पूजाकरै तो सम्पत्ति प्राप्तिहो–कथा इस प्रकारहै कि सोमपुर नगरके सोम शर्म्मा नामी महादरिद्री ब्राह्मणने सोमेश्वर नाथकी आज्ञानुसार इस व्रतको किया और धनवान् होगया—

यमद्वितीयाअर्थात् भैयादुइज– } कार्तिक सुदी २ में स्त्री इस व्रतको रक्खे और यमराज की पूजाकरै और अपने भाईको बुलाकर यथाशक्ति सुन्दर २ भोजन बनाकर जिमावै और भाई यथा शक्ति बहिनको कुछ देवे तो यश, आयु और सम्पत्ति प्राप्तहो जैसा कि यमराजकी बहिन यमुना ने किया था और इन्हीं से इस व्रत की उत्पत्ति हुई–

सौभाग्यसुन्दरव्रत–स्त्री अथवा कन्या इस व्रतको चैत्रसुदी ३ को करै और गिर

पार्वती की पूजाकरै तो सन्तान, देहसुख, सौंदर्य, यश, भूषण, वस्त्र वा धनआदि प्राप्तिहो–

अरुधतीव्रत–चैत्रसुदी ३ को कोई स्त्री इसव्रतको रक्खे और अरुधती की पूजा करै तो उसको सुख और सुहागमिले–एक समय एक ब्राह्मणकी कन्याने विधवा होकर इस व्रतको किया–

अक्षय तृतीया–वैशाख सुदी ३ को जो मनुष्य व्रत रखकर नारायण की पूजा करै और जो कुछ दान इस दिनकरै वह अक्षय होताहै–यह तिथि सत्ययुग का आदि दिनहै–महोदय नामी महादरिद्री वणिक इस व्रत को करता और यथा शक्ति दान करता था इस कारण उसका धन बढ़ता जाताथा–

स्वर्ण गौरीव्रत–श्रावण सुदी ३ को इसव्रतको रक्खै और शिव पार्वती का पूजन करै तो कामना पूर्णहो–कथा–सरस्वती नदी के किनारे विमला नगर का राजा चन्द्रप्रभा बड़ाप्रतापी था एक समय अहेर खेलने २ कैलासपर्वत पर गया वहा अप्सरों को इस व्रत में मग्न देखकर यहव्रत करने का प्रणकरके एकडोरा अपने करमें बाँधलिया यह देख उसकी बड़ीरानी ने उसडोरे को तोड़ किसी सूखे वृक्षपर फेंकदिया वह वृक्ष हरा होगया और उसी डोरे को छोटी रानीने अपने हाथमें धारलिया इससे वह राजाकी परमप्रियाहुई और बड़ीरानी निकालीगई जब इसने गौरीका ध्यान किया तो फिर राजाको मिली और राजाको इसव्रतके करने से शिवपुरी प्राप्तिहुई—

हरतालिकाव्रत–इस व्रतको भाद्रपदसुदी ३ को करने और शिव पार्वती का पूजन करने से स्त्रीको सुहाग और सायुज्य मुक्ति मिलती

पाप स्पवान् हों-अगले समयमें इस व्रतको चेत्रवती नामीस्त्रीने किया जिससे वह निषादराज गृहमें उत्पन्न होकर महासुन्दरी भई-

संकष्टचतुर्थीव्रत यह व्रत श्रावण वदी ४ को होताहै और इसमें गणेशजी की पूजा कीजाती है-इससे कठिन काम सहज होताहै और मनुष्य शत्रुसे बचताहै-जब पार्वतीजी का कठिन तप करने पर भी शिवजी न प्रसन्न्ये तो उन्होंने इस व्रतकरके शिवको पाया और इसी व्रतका कृष्णजी के उपदेशसे युधिष्ठिर ने किया जिससे अपना राज्य पाया-

दूर्वागणपति व्रत- श्रावण वा कार्तिक सुदी ४ को होता है इसमें गणेश की पूजा होतीहै इसमें सौभाग्य धन और सन्तान मिलताहै-इन्द्र और कुबेर ने अपनी अपनी स्त्रियों सहित इस व्रतको किया था-

दूर्वागणपतिव्रत इतवारकेदिन- हर महीने में जब इतवार को चतुर्थी शुक्लपक्षमें हो तब इस व्रतको करै और गणेशजी की पूजाकरै तो शोच और घबराहट का नाशहो और धन प्राप्तहो-कथा-एक समय शिवपार्वती पासा खेलनेमें उसी समय तिस नेम गणसे पूछा गया कि किसने जीता उसने कहा कि शिवने जीता इसपर पार्वती ने शापदिया जिससे वह मनुष्य योनि में उत्पन्न होकर मानसरन पर गया वहांपर अप्सराओं के उपदेशसे इस व्रतको किया और शापसेछुटकारा पाया-

विनायकव्रत-यह व्रत श्रावण, भादों, अगहन और माघवदी ४ को होता है

समय में किया जाताहै और पूजा इसमें गणेशजीकी होती है-
फल इसका कार्य सिद्धहोना और विजय है-श्रीकृष्ण के उपदेश
से इस व्रतको युधिष्ठिरने किया और कौरवों से विजय पाई-

चौथ-यह व्रत भादोंसुदी ४ को होताहै और गणेश की पूजा होतीहै-इसव्रत
के फलसे भादोंसुदी ४ के चन्द्रमादेखने का कलङ्क नाशहोता है-कथा-
एक समय ब्रह्माने गणेश की पूजाकी वहासे लौटते समय चन्द्रलोक में
गणेशजी गिरपड़े इसपर चन्द्रमा हँसे तब गणेशजी शापदिया कि तुम
को कोई देख न सके उसी समय से चन्द्रमा मानसर कमल में छिपे
परन्तु ब्रह्माके उपदेश से जब चन्द्रमा ने इस व्रतको किया तो गणेशजी
प्रसन्न हुये और कहा कि अच्छा तुमको शापोद्धार होगया परन्तु जो
कोई तुमको भाद्रपदसुदी ४ को देखेगा उसको कलङ्क लगेगा-इसीकारण
श्रीकृष्णको सत्राजित (क० दे०) मणिकी चोरी लगाई तब श्रीकृष्ण
ने नारदोपदेश से इस व्रतको किया और कलङ्क छूटा-

कपर्दकगणाधि- नायकव्रत- यह व्रतश्रावण सुदी ४ को होताहै और पूजा इसमें गणेश
की होती है इस व्रतसे कामना सिद्धहोती है-कथा-एकसमय
महादेव पार्वती पासा खेलते थे और महादेव अपना त्रिशूल
डमरू आदि हारगये महादेवने पार्वतीजी से कहा कि हमारा
शस्त्र दे देव पार्वतीजी ने क्रोधयुक्त कहा कि अब ??
दिनतक आपसे न बोलूँगी यह सुन महादेव अन्तर्धान हो
गये-इस विरह में पार्वतीजी शिवको ढूँढते ढूँढते एक वन
पहुँचीं और कुछ स्त्रियों को पूजाकरते देखा उन्हीं से इस
कपर्दक व्रतको सुनकर किया और महादेवजी प्रकटहुये-
इसी व्रतको स्मरण शिवने विष्णुको और विष्णुने ब्रह्माको

और ब्रह्माने इन्द्रको और इन्द्रने विक्रमादित्य को मालूकिया और इसी व्रतके फलसे विक्रमादित्य अपनी पुरीको आये और उनकी रानीने ऋषियों का दर्शन पाया जिससे रानी का रोगनिवारण हुआ -

करवाचौथ-यह व्रत कार्तिक वदी ४ को होताहै और पूजा इसमें शिवकी होतीहै और इससे सुहाग सन्तान और धन मिलता है-एक समय वेदधर्मा ब्राह्मणकी व या वीरावती नामीने इस व्रतको रक्खा था परन्तु जब भूखसे अचेत हो गिरपड़ी तो वायुआदि करके उसको सचेत किया और उसके भाई ने छिपकर एक वृक्षपर चढ़कर मशाल दिखाया उसको चन्द्रमा समझ उसकन्याने अर्घ दे दिया-इससे उसका व्रत भंगहुआ और उसका पति मरगया परन्तु इन्द्राणी के उपदेशसे उसनेइस व्रतको फिर विधिपूर्वक किया और उसकापति जी उठा-इसी व्रतको द्रुपदीने किया था जिसके प्रभाव से पाण्डवों की जीतहुई-

गौरीचतुर्थी-यह व्रत माघशुक्ल चतुर्थी को होताहै और ब्राह्मण और ब्राह्म णियोंकी पूजाकरके योगिनी और गउवों की पूजाकरे और भाईबन्धुके साथ भोजनकरै तो सुहागवृद्धि होतीहै-

ऋषिपञ्चमी-यह व्रत भादें सुदी ५ को होताहै और सप्तऋषियों की पूजा करना चाहिये-इसमें सब व्रतोंका फल रूप शोभा पुत्र पौत्र मिलते हैं-सुमित्रनामी ब्राह्मणने अपनी रजस्वला स्त्री को छूलिया था और उसकी स्त्री बरतनों को उसी समय में छुआ करती थी इस पाप से वह ब्राह्मण बैलहुआ और स्त्री कुतियाहुई परन्तु ऋषियों

के उपदेश से उनके बेटेने इस व्रतको किया जिससे यह दोनों देव लोकको प्राप्तहुये–

नागपञ्चमी–भादों सुदी ५ को होताहै इसमें नागकी पूजा होती इस व्रतको करने से सापसे काटेहुये को स्वर्ग मिलता है–

उपागलिताव्रत–यह व्रत कुआर सुदी ५ को होताहै इसमें देवीकी पूजा होती है इस व्रतके करने से धन सुहाग मिलता है–कथा इसकी योंहै कि दो भाई श्रीपति और गोपति नामी ब्राह्मणथे जब इनके पिता मरगये तब उनके चचाने सब धन लेलिया और वे दोनों भाई वहासे निकलगये वहाँपर एक ब्राह्मण को पूजन करते देखकर उसी पूजनको किया और बडे धनवान हुये छोटे भाईने पूजन को छोडदिया था इस कारण फिर दरिद्री हुआ और इसी पूजन के करने से फिर धनको प्राप्तहुआ–

ललिताव्रत–भादोंसुदी ६ को होताहै और देवी पूजनहोता है इसके करने से सुख और पुत्र मिलताहै–

कपिलाव्रत–भादोंबदी ६ व्यतीपात अथवा रोहिणी नक्षत्र मगलवार को यह व्रत होताहै पूजा इसमें सूर्य्यकी होतीहै–इसव्रतके करनेसे ब्रह्महत्या और महापाप नाश होताहै–स्कन्दजीने इसव्रतको शिवजीके उपदेश से कियाथा–

स्कन्द ६–हरएक षष्ठी मुख्यकर कार्त्तिक की ६ को यह व्रत होताहै और पूजा इस में कार्त्तिकेय की होतीहै–फल इसका गया हुआ सुख और धन फिर प्राप्त होताहै–

गगा७–बैशाखसुदी ७ को होताहै और इसमें गगाजीका पूजन होताहै–इस

व्रतके करनेसे २१ पीढ़ीकी मुक्तिहोती इसदिन गंगाजीका जन्म हुआथा यह व्रत स्त्रियोंका है–

शीतला७–श्रावणसुदी ७ को होताहै और शीतला देवीकी पूजा होतीहै–इस व्रतको करनेसे स्त्री विधवा नहीं होगी और पति वियोग नहीं होताहै–शुभ कारिणीनामी स्त्री ने इसव्रतको कियाथा जिससे उसका पति जिसको सापने काटाथा जीउठा–

मुक्ता भरण–यह व्रत भादोंसुदी ७ को होताहै और महादेव की पूजा होतीहै–इस व्रतके करने से सन्तान जीताहै–चन्द्रमुखी और भद्रमुखीने इस व्रतको करके सन्तान पाई और देवकी ने इस व्रतको करके श्रीकृष्णपुत्रपाया–

रथसप्तमी–माघसुदी ७ को होताहै और सूर्यकी पूजा होतीहै–इस व्रतको करने से राजा चक्रवर्ती होताहै और नीरोग होताहै–यशवर्मा राजाने इसव्रतको रखकर माधाता पुत्रपाया जो चक्रवर्ती हुआ–

अचलाव्रत–माघसुदी ७ को होताहै और सूर्य की पूजा होतीहै इससे कामना रूप और सुहाग मिलता है सगरराजा की वेश्या इन्दुमती ने इस व्रतको वशिष्ठ की आज्ञासे किया और उसकी कामना पूर्णहुई–

पुत्रसप्तमी–माघसुदी ७ को होताहै और सूर्यकी पूजा होतीहै–इससे सुन्दर पुत्र प्राप्तहोताहै–

भुधाष्टमी–माघसुदी ८ दिनबुध को यह व्रत होताहै पूजा इसमें बुधकी होती है–इससे विपत्ति और पाप नाश होता है–इसी दिन बुधजीरूप सुद्युम्न पर मोहितहुये और इसी दिन इसव्रत की उत्पत्ति हुई–यमराजकी स्त्री श्यामला की माताने अपने पुत्रों हेतु किसी ब्राह्मण का गेहूं चुराया जिस्से वह नरकगामी हुई परन्तु श्यामलाने अपने

सफल होतेहैं और मुक्ति मिलतीहै—इसी तिथिको रामजन्म हुआथा—

देवीप्रजाव्रत—फाल्गुनी ८ को होताहै पूजा इसमें देवीकी होतीहै—इससे सर्व पाप नाश होताहै और सब प्रकार का फल मिलताहै—

आशादशमीव्रत प्रत्येक मासकी सुदी १० को कियाजाता है और दिक्पालों की पूजा इसमें होती है इससे परदेशीपति से मिलन आदि सब मनोरथ पूरे होते हैं इस व्रतको स्त्री करती है—

दशहरा—ज्येष्ठसुदी १० को होताहै और गंगाजीका व्रतहै इससे दशपाप नष्ट होतेहैं—इसी तिथिको हस्तनक्षत्र में श्रीगंगाजीका जन्म हुआहै—

दशअवतारव्रत भाद्रोंसुदी १० को विष्णुके मुख्य दश अवतारों की पूजा होती है इसमें पुत्रदेनेकी है इसव्रतको स्त्री और पुरुष दोनों करतेहैं॥

विजयदशमी—यह व्रत क्वारसुदी १० तारा उदय के समय होताहै पूजा इसमें अजयादेवी की होतीहै इससे लड़ाई में विजय होतीहै और धन लाभ होताहै—इस तिथिको प्रस्थान करना उचित है—

एकादशी—प्रत्येक मास की एकादशी को होताहै यह व्रत नारायण काहै इससे मुक्ति मिलती है—कथा—जब सब देवता मुर राक्षस से हारगये—तो विष्णुने उससे युद्धकिया परन्तु हारगये और एक गुफामें जा छिपकर सोगये मुर वहां भी पहुंचा उस समय विष्णुके अंगसे एक माया एकादशी नामी उत्पन्न होकर राक्षस को मारा

एकादशियों के नाम नीचे लिखेहैं ॥

नाम महीना	कृष्णपक्षकी एकादशी	शुक्लपक्षकी एकादशी—
चैत्र	पापमोचनी	कामदा
बैशाख	वरूथिनी	मोहनी

स्नानिकव्रत–आषाढ़ से फागुन पर्यन्त होताहै और विष्णु पूजाहै इसमें विधुन न होताहै यह पूजा करनाटक देशमें होताहै–

वरलक्ष्मीव्रत–श्रावण के अन्त में शुक्रवार को यह व्रत लक्ष्मीका होताहै इससे धन मिलता है एक समय महादेव पार्वती पासा खेलतेथे महादेव जी जीते परन्तु इस समय विवाद हुआ और चित्रनियम से पूछा गया कि किसने जीता उसने कहा कि महादेव जीते इससे पार्वती के शापसे उसको कुष्ठरोग होगया परन्तु अप्सरा के उपदेश से उसने इस व्रतको किया और कुष्ठरोग जातारहा–इसी व्रतको नन्दीश्वरने भी हेतु किया तभीसे यहव्रत इसलोक में होनेलगा–

दानफलव्रत–कार्तक प्रथम रविवार से माघसुदी ७ तक यह व्रत होताहै–सूर्य की पूजा होतीहै इससे सर्वदानका फल होताहै–पद्मावती और दमयन्ती रानियोंने देवता की स्त्रियोंके उपदेश से इसव्रतको किया था जिससे उनके बिछुड़े हुये पतिमिले–

धारणपारणव्रत चतुर्मास वर्षामें यहव्रत लक्ष्मीनारायण का होताहै इससे भाई बन्धों के मारडालने का पाप नाश होताहै–इसव्रत को सुग्रीवने किया क्योंकि उन्होंने अपने भाई बालिको मरवाया था और नारदने इसव्रत को इन्द्रजीत होनेके हेतु कियाथा और श्रीकृष्ण उपदेश से युधिष्ठिरने इसीव्रत को किया–

मासउपवास–भादसुदी ११ से मासके अन्ततक होताहै इससे सब तीर्थों और यज्ञोंका फल और विष्णुलोक मिलताहै–

मलमासव्रत–अधिक मासमें यह व्रत होताहै यह व्रत सूर्य काहै इससे पाप नाश होताहै और सुख मिलताहै–नहुषराजाने साप तनमें (न

उत्तरायण की सक्रान्ति मे घृत स्नान व्रत होताहै ॥

कौशल्या ॥

पिता-राजा कोशल- पति-राजा दशरथ- पुत्र-रामचन्द्र-

जब रावणने सुना कि मेरा वध कौशल्या के पुत्रसे होगा उसने कौशल्या को बालकपन में मञ्जूषा में बन्दकरके राक्षस मदकी के सिपुर्दकिया तथा रावण का रक्षक राक्षस ने मञ्जूषा मगलाये और जगलमें छोडदिया उसको सुमत (राजा दशरथ के मन्त्री) ने पाया और कोशलराजा को पहुचाया-कोशलराजने उसका विवाह दशरथ के साथकिया—

शुकदेवजी ॥

दादा-पराशर- पिता-व्यासजी- माता-घृताची अप्सरा-

जन्मकथा-एक समय महादेवजी पार्वती जी को अमर करने हेतु योगमन्त्र सुनाने लगे तो वहासे सब जीवजन्तु को भगादिया परन्तु एक सुवे का अण्डा जो नहीं भाग सक्ताथा किसी वृक्षके खोखले मे पडारहा जब मन्त्र सुनाते २ बारहवर्ष व्यतीत होगये तब पार्वतीजी सोगई और वह सुवे का बच्चा हुकार भरतागया-जब योगमन्त्र पूर्णहुआ-महादेवने पार्वती जी से कुछ मन्त्र योगमन्त्रमें किया जब वह न बतलासकीं तो समझ लिया कि यह सोगई थी और कोई दूसराही हुकार भरता था सो यदुक्त त्रिशूलको उठाया वह सुआ भागता २ व्यासजीकी स्त्रीके गर्भ में घुसगया तब महादेव उस जीवको मारनेपर उतारूहुये परन्तु व्यास जी की प्रार्थनासे नहीं मारा वह पुत्र होकर शुकाचार्य के नामसे प्रसिद्धहुये सात वर्षकी अवस्था में दिगम्बर वेषमें वनको चलेगये फिर लौट कर व्यासजी से श्रीमद्भागवत पढा और यही भागवत

इसी मालाको ऋषिने ऐरावत के मस्तकपर रखदिया वहमाला ऐरावत से भूमि पर गिरपड़ी ऋषिने समझा कि इन्द्रने निरादर से मालेको फेंकदिया और इन्द्र को शापदिया कि तुम्हारे राज्यका नाशहोजाय—इस कारण देवताओं की हानि और राक्षसों की वृद्धिहोनेलगी—देवताओंने भगवान् की आज्ञानुसार मन्दराचल की मथानी और वासुकि नागकी रस्सीबना समुद्रको मथा उसमेंसे १४ रत्न पैदा हुये जिनमें अमृत भी था जिनके पीने से देवता अमर हुये और राक्षसों को परास्त किया—

रत्नोंकेनाम—लक्ष्मी, मणि, रम्भा, वारुणी, अमृत, शंख, ऐरावत, कल्पवृक्ष, चन्द्रमा, कामधेनु, धनुष, धन्वन्तरि, विष, बाजि—

अवतार—जानकी, रुक्मिणी, पद्मा आदि— वाहन—कमल—

बलरामजी ॥

नाम—हलधर, रेवतीरमण—

माता—रोहिणी—पिता—वसुदेव—भाई—कृष्णजी—स्त्री—रेवती (राजारेवतकी कन्या यह कन्या सत्ययुग की थी और २१ हाथ लम्बी थी—बलराम जीने उसको हलाकर छोटी करली) पुत्र—नाम्रकेतु, दत्तवान्, बलरामजी लक्ष्मणजी अथवा शेषजी के अवतार हैं—यह देवकी के सातवें गर्भ में थे परन्तु मायाने इनको निकाल कर रोहिणी के गर्भमें कर दियाथा जिससे कमसे बचे—

अस्त्र—हल और मूसल—

बलरामजी ने कंसके पठाये हुये राक्षस धेनुक नामीको मारा—एक समय म दिरा पानकर मत्तहुये और स्नान करनेहेतु यमुनाजी को बुलाया जब नहीं आई तो हलमूसल से खींचलिया तबसे यमुना उसस्थान पर टेढ़ीहोगई—श्रीकृष्णकी आज्ञानुसार कुछ दिन गोकुल में रहे—पश्चात् कुछदिन जनक राजाके यहांरहे

कुटुंब हुआ और तभी उनके आश्रय से बहुत मुनि यहां आकर रहे एक समय अहल्या किसी मुनिस्त्री पर जल्लेने के कारण क्रोध किया-तब दूसरे मुनियोंने गणेशजी से प्रार्थना किया गणेशजी एक वृद्धा गायका रूप धारण कर खेत चरने लगे गौतमजीने हांका वह गिरकर मरगई इस हत्यासे मुनि वहां से निकाल दिये गये तदनन्तर उपरान्त शुद्धहोकर गौतमजी ने शिवका तप किया जिससे गौतमी गंगा उत्पन्न हुई और वहींपर त्र्यम्बक नाम लिङ्ग शिवका स्थापित हुआ-गौतमके शापसे दण्डकवन मरूभूमि होगया और तभी उसका नाम जनस्थान होगया दूसरी कथा यों है कि राजा दण्डने अपने गुरु भृगुकी कन्याके संग किया भृगुके शाप से वह देश मरुस्थल होकर जनस्थान प्रसिद्ध हुआ-

विश्वामित्र ॥

दूसरेनाम-कौशिक, गाधिसुवन-

पिता-गाधिराजा (चन्द्रके वंशमें) स्त्री-सुरभुमती-

पुत्र-सौथे उनमें ५० के नाम मधुछन्दा थे और ब्रहपति (शिवका अवतार) और गालव्य-

भांजा-शुनशेफ (अजीगर्तका पुत्र) जिसको अपना बेटा मानकर देवरात नामरक्खा था- अपने पहिले पचास पुत्रोंसे कहा कि इसको अपना बड़ाभाई मानो परन्तु उन्होंने नहीं अंगीकार किया और शापित हो कर म्लेच्छहुये-और दूसरे ५० पुत्रोंने अंगीकार कर लिया जिसम उ नकी सन्तान वढी और कौशिकगोत्री कहलाये जब विश्वामित्र वनको तप करने चलेगये तो उनकी स्त्री अपने पुत्रका गला बांधकर बेचने गई परन्तु सत्यव्रत राजाने उसको छुड़ालिया और उसका नाम गालव रक्खा जिससे गालव्य गोत्रचला सात पुत्र और थे जो पहिले

जन्ममें भरद्वाजके पुत्र थे फिर विश्वामित्र के यहा जन्मलिये इसजन्म में इन्होंने अपने गुरुकी गायको मारडाला जिस कारण व्याधके यहाँ जन्मलिया और उनके नाम यह थे-नरवीर, निवृत्ति, शान्ति, निर्भीति, ऋजु, शशि, मानवती फिर कालंजर में हरिण होकर जन्मलिया जि-नके नाम नित्य, अमित, उन्मुन, रुचिर, भद्र नेत्र और नाम्मिय थे-इस जन्ममें तप किया तो चक्रवाकहुये और फिर मरे तो हमहोकर मानसरोवर में रहने लगे-फिर जन्मे तो गजाहुये-

जब विश्वामित्र वनमें तप करते थे और यज्ञकरते थे तो सुबाहु आदि राक्षस के कारण यज्ञनहीं करने पातेथे जब रामचन्द्र और लक्ष्मण को राजा दशरथसे मांगलाये तो यज्ञ पूराकिया और राक्षस मारेगये इस्के बाद राम चन्द्रजी जनकपुरमें धनुषयज्ञ देखने गये और धनुषको तोड़ सीताजी को वरी-

ताड़का ॥

पिता-सुकेतु-पुत्र-सुबाहु और मारीच-

यह राक्षसी थी और विश्वामित्र की तपस्या और यज्ञमें विघ्नकरती थी इस कारण रामने इसको वधकिया और उसका पुत्र सुबाहुभी मारागया केवल मारीच बच गयाथा जिसको रावणने मृगरूप कर राम को भुलाया और जानकीजी को हर ले गया-

शबरी अर्थात् भिलनी ॥

एक भीलनी थी रामभक्त थी जब इसके गुरु परम पद को जानेलगे तो इसने भी मरनेको कहा परन्तु गुरुने कहा कि तू अभी ठहर तुझको रामचन्द्र का दर्शन होगा तभीसे यह प्रेमपूर्वक प्रतिदिन पर जोता फल लगाकर

आज्ञा देवाकरे और रात्रिमें नहीफल खाकर सोरहे इसप्रकार दशसहस्र वर्षके उपरान्त दर्शन पाकर वह परमधाम कोगई–

ध्रुव ॥

दादा–स्वायम्भुवमनु–पिता–उत्तानपाद–माता–सुनीति–
सौतेलीमाता–सुरुचि–स्त्री–इला–पुत्र–उत्कल (इलासे) और वत्सर
(दूसरीस्त्रीसे)–

एक समय उत्तानपाद राजा अपनी छोटी रानीके पास बैठेथे और ध्रुवको गोदमें बैठालिया रानीने ध्रुवको गोदसे निरादर पूर्वक उतारदिया–ध्रुव ग्लानि युक्त अपनी माताके पासगये और माताको सब वृत्तान्त सुनाकर वनको चले गये और नारदमुनि को अपना गुरु बनाया और मथुराजीमें यमुना तटपर ऐसा तप किया कि वायु चलना बन्दहोगया नारायणने दर्शन दिया उनकी आज्ञा नुसार घर जाकर ३६ सहस्रवर्ष पर्यन्त राज्यकिया और सब भाई इनकी सेवा में रहे इन्होंने अपने सौतेले भाई उत्तम को अपना मंत्री बनाया–एक समय उत्तम कुबेरके विहारस्थल में अहेर खेलने गये वहां पर एक यक्षने उत्तम को मारडाला इस कारण ध्रुवने कुबेर से युद्ध किया पश्चात् मेलहोगया–कुछ दिन उपरान्त उत्कल को राज्यदे बदरिकाश्रम को गये और माता सहित स्वर्गलोक को सिधारे–

हिरण्यकशिपु ॥

भाई–कनककशिपु–पिता–कश्यप–माता–दिति–स्त्री–कयाधु–पुत्र–
प्रह्लाद, संह्लाद, आह्लाद–कन्या–सिंहिका–बहिन–होली, पूर्व
जन्म–जय(हरिका द्वारपाल) दूसराजन्म–रावण–पौत्र–पंचजन
(संह्लादसे) महिषासुर और वाष्कल (आह्लाद से)–

सके साथ इसकन्याका विवाह करूंगा ऋचीकने वरुणकी तपस्या करके घोडों को पाया और राजाको दिया और विवाह हुआ ऋचीकने पुत्रहेतु हवि बनाकर दो भागकिया और कहा कि जो एकभाग को खाय उसके तेजस्वी पुत्रहोगा और जो दूसरे भागको खाय उसके ब्राह्मण पैदाहोगा–हवि देकर ऋचीक वनको चले गये और सत्यवती के उसी हविके प्रभावसे जमदग्नि ऋषि पैदा हुये–

जमदग्नि ने रेणुकासे विवाह किया और स्त्री सहित वन चलगये उसस्त्रीसे पांचपुत्र हुये पांचवें पुत्र परशुराम (नारायण के अवतार) थे–

एक समय रेणुका नहाने गई वहांपर मृतिकावती के राजा चित्ररथको अपनीस्त्री के साथ जलक्रीड़ा करते देख आसक्त हुई जब आश्रमपर आई तब मुनि उसका रूप बिगड़ा देखक्रोधितहुये और उसकेपुत्र (जो वनमें फल तोडनें गयेथे क्योंकि फलाहारही करतेथे) वनसे लौटे मुनिने कहा तुम्हारी माताने पापकियाहै इनको मारडालो चारपुत्रोंने प्रेमवश नहीं मारा और पिता के शापसे मूर्खहोगये परन्तु परशुरामने मारडाला और मुनिने परशुराम की प्रार्थनासे रेणुकाको जिला लिया और चारोंपुत्रों की मूर्खताको मिटादिया–और परशुरामको अजय किया–

किसी समय कार्तवीर्य (सहस्रार्जुन) ऋषिके यहां गये उस समय ऋषि और उनके पुत्र न थे–रेणुकाने उनका बड़ा सन्मान किया कार्तवीर्य मुनिकी कामधेनु चुरालेगये परशुरामने जाकर कार्तवीर्य को मारकर कामधेनुको छीनलिया इस कारण कार्तवीर्य के पुत्रोंने जमदग्नि को मारा और फिर परशुरामने कार्तवीर्य के पुत्रोंको मारा और इसी विरोध से पृथ्वी को २१ बार क्षत्रियों से हीनकरदिया परन्तु परशुराम की आशिषसे कार्तवीर्य की विधवा बहुओं से पुत्रहुये जिनसे फिर क्षत्रियों का वंशचला–

जब रामचन्द्रने जनकपुर में शङ्करका धनुष तोड़ाथा तो परशुरामने बड़ा कोप कियाथा और वहीं वार्तालाप के उपरान्त परशुरामने कहा कि मेरा धनुष (विष्णु

एक समय इनकी माता और इनकी सौतेली माताके होड़ लगीथी जिसकी की कथा कश्यप की कथामें देखो-

एक समय गरुड़ चन्द्रमा को चुरालाये और युद्धमें देवतों को परास्त किया परन्तु जब नारायणने गरुड़को अपना वाहन बनाया तो युद्ध निवारण होगया

जब लक्ष्मणजीको मेघनादने और रावणने रामचन्द्रको नागफास में बांधा था तो गरुड़ने उस बंधन से छुड़ाया और इस कारण सन्देह किया कि रामचन्द्र जो नारायण के अवतार होते तो बंधन में न आते यह सन्देह उस समय निवृत्त हुआ जब गरुड़ नारद के उपदेश से काकभुशुण्डि के पासगये और उनसे ज्ञान सीखा-इसप्रकार गरुड़ के उस अभिमानका भंगहुआ जो उस समय में हुआथा कि जब रामचन्द्र बाल्यावस्था में पूरीखाते थे और काकभुशुण्डि पूरी छीनकर भगेथे और रामचन्द्र की आज्ञानुसार गरुड़ने उनका पीछाकरके हरायाथा-

अम्बरीष ॥

यह राजा श्राद्धदेव के पुत्र सर्याति के वंशमें था-यह और इनकी स्त्री परमेश्वर के बड़े भक्तथे यह राजा एकादशी व्रतका प्रचारक था एकादशीव्रत करके द्वादशी में ब्राह्मणको भोजन कराकर तब आप पारण करताथा एक समय द्वादशी के दिन दुर्वासा अट्ठासी सहस्र ऋषियों को साथलेकर परीक्षा हेतु राजाके पास आये राजाने ऋषि से कहा कि भोजन करलीजिये दुर्वासाने कहा कि स्नानकर आवें तो भोजन करें वहांपर जानबूझकर देरी की जब द्वादशी व्यतीत होनेलगी तो राजाने ब्राह्मणों की आज्ञासे चरणामृत लेकर पारणकिया और दुर्वासा लौटे तो राजासे कहा कि तुमने बिना हमारे भोजनकिये पारण क्यों करलिया यह कहकर अपनी जटामें एक बालतोड़ा उससे कृत्या नाम राक्षसी उत्पन्न हुई और राजाको मारनेगई परन्तु सुदर्शनचक्रने राजाको बचाया जब वह भागगई तो

चक्रने दुर्वासा का पीछाकिया अन्तमें नारायण के उपदेश से दुर्वासामुनि राजाके पास गये तो चक्रने उनका पीछा छोड़ा—दुर्वासा का पीछा एक वर्षतक चक्रने कियाथा जब लौटे तो वही भोजन खाया और तबतक राजा वैसही खड़ेथे और भोजन नियड़ा नहीं इसके पीछे राजा अपने छोटे पुत्र को राज्यदे विरक्तहोगये—

वरुण ॥

दूसरेनाम प्रचेता, जलपति, पाशपति, अम्बुराज, पाशी— पिता—कश्यप— माता—अदिति— स्त्री—वारुणी, भार्गवी और चर्षणी (जिससे वाल्मीक्यादि ऋषीश्वर उत्पन्न हुये—

वर्ण—श्वेत— वाहन—मकर (जन्तु जिसका रूप ऐसाहै कि शिर और टाँगें मृग की भांति और शरीर व पूछ मछली की भांति) अस्त्र— फाँसी (दाहिने हाथमें)—

पुत्र—अगस्त्य मुनि (एक उर्वशी से) और वशिष्ठ—

सभासद—समुद्र, गंगाजी, भील और तालावआदि—इनको सूर्यका अवतार भी कहते हैं इनका वास पवन और जलमेंहै और जलके देवताभीहैं अर्थात् दिक्पालहैं—

राजा हरिश्चन्द्र के पुत्र न होतेथे सो राजाने वरुणकी सेवाकी जिससे पुत्रहुआ परन्तु राजाने यह वचनदिया था कि इस पुत्रको बलि करेंगे जब नहीं किया तो राजा के जलोदररोग होगया पश्चात् एक ब्राह्मण के लड़के को मोललेकर बलि कियाचाहा तो वह लड़काभी बचालिया गया और राजाका रोगभीगया—

एक समय रावण हिमालय से महादेव के दोलिंग लकाको लिये जाताथा देवताओंने विचार किया जो लङ्कामें शिवकी पूजा होगी तो राक्षस अजित होजायँगे और उन लिंगोंमें यह गुणथा कि पहिले पहिल जहाँपर पृथ्वीमें छूजायँ वहा से

फिर न हटे वरुण आकर रावण के शरीर में घुसगये और क्लेश उत्पन्न किया कि रावण व्याकुल होगया और इन्द्रने लिंगको पकड़लिया और वहींपर रखदिया लिंग वहींपर घुसगया और वैद्यनाथके नाम प्रसिद्ध हुआ जो वीरभूमि (चिता भूमि) में है जब वरुण रावणके शरीरसे निकले तब एक नदी कुरम्नासा नामी उत्पन्नहुई उसका जल हिन्दू नहीं पीते-

शिवपुराण में लिखाहै कि जब रावण लिंगोंको काँवरि में लिये जाताथा उसको मूत्रकी वेगहुई उसने काँवरि बैजू अहीर नामी चरवाहे के कंधेपर रक्खी परन्तु वह भार न सहसका और काँवरि को पृथ्वीपर रखदिया जिससे एक लिंग गोकर्णनेत्र में स्थापित हुआ जिसको चन्द्रभाल लिंग कहते हैं और पीछेवाला लिंग वीरभूमि में स्थापित होगया जिसको वैद्यनाथ कहते हैं पीछे बैजूने बड़ी सेवा की जिससे नाम पलटकर बैजनाथ होगया-

कपिलमुनि वा देव ॥

एकमुनिकानामहै-शाङ्ख्यशास्त्रके बनानेवाले और विष्णु के अवतार हैं-

पिता-कर्दमऋषि- माता-देवहूती (प्रियव्रत की कन्या)—

जन्म होने उपरान्त इनके पिता वनको चलेगये और इन्होंने अपनी माताको सांख्यशास्त्र सिखाया और आप गंगासागर को चलेगये और बहां पर मुनियोंको ज्ञानसिखाया उनका दर्शनकरने अबभी लोग गंगासागर को जातेहैं-इन्होंके शाप से सगर के पुत्र भस्म होगये-

कर्दमऋषि ॥

ब्रह्माके पुत्र इन्होंने दश सहस्र वर्ष तपस्या की तो नारायणने दर्शनदिया और कहा कि आजके तीसरे दिन राजा स्वायम्भुवमनु अपनी कन्या देवहूती तुम को देंगे तुम उसके साथ विवाह करलेना जब नारायणने सोचा कि इन्होंने त्रि

वाह के हेतु स्नन करलिया तो रोदिया और जो आँसू गिरा उसीसे विदुसर तीर्थ कुरुक्षेत्र के पासहुआ–

पुत्र–वर्णनदेव–

पुत्री–१ कला (पति–मरीचि) २ अनुसूया (पति–अत्रि), ३ श्रद्धा (पति–अंगिरा), ४ हवि (पति–पुलस्त्य), ५ गति (पति–पुलह), ६ योग्य (पति–क्रतु), ७ ख्याति (पति–भृगु), ८अरुन्धती (पति–वशिष्ट), ९ शान्ति (पति–अथर्वण) पश्चात् बनमें तपकरके तन त्यागकिया–

कश्यपमुनि ॥

पिता–ब्रह्मा–वंशावली–ब्रह्माकी कथामें देखो–

स्त्री–१७ थीं जो दक्षकी कन्याथीं और उनके नाम दक्षकी कथा में देखो उनमें मुख्ययह थीं–

१ आदिति–(जिससे बारह आदित्य उत्पनहुये जिनके नाम विष्णु, शक्र, अर्यमा, धृति, त्वष्टा, पूषा, विवस्वन, सविता, मित्र, वरुण, अंश, भग)—

२ दिति–(जिससे दो पुत्र हिरण्यकशिपु और हिरण्याक्ष)–

३ पुलोमा–(जिससे पुलोमादि दानवहुये)–

४ कालिका–(जिससे काले दैत्यहुये)–

५ विनता–(जिससे गरुड अथवा अरुण हुये)–

एक समय कश्यप और अदिति ने बडातप करके विष्णु से वरमागा कि जब जब अवतार लेवो तब तब हमहीं आपके माता पिताहोवें–

एकपुत्र बज्रंग था जिसकी वरांगीसी से तारक असुर पैदा हुआ जिसने देवतों को परास्त किया (तारकको कथा देखो)–

एक समय दोनोंस्त्रिया कद्रू और विनताने आपस में कहा कि जो सूर्य के घोड़ोंकी पूंछका रंग न बतलासके वह दासी होकररहे कद्रूने श्यामरंग कहा और विनताने कहा कि श्वेत रंग है पश्चात् दोनों देखने चलीं तो कद्रूके पुत्र सांप घोड़ोंकी पूंछमें लिपट कर श्याम बनादिया और विनता दासीवन रहने लगी कुछदिन उपरान्त जब गरुड़को यह जान पड़ा तब सब सांपों को खानेलगे तभी से गरुड़ और सर्पों में वैरचला-

सूर्य्य ॥

दूसरेनाम-दिनेश, दिवाकर, सविता, रवि, प्रभाकर, भास्कर, मिहिर, ग्रह पति, कर्मसाक्षी, मार्तण्ड, पूषण-

जब अस्तहोते हैं तो सविता कहलाते हैं और जब उदयहोते हैं तो सूर्य कहलाते हैं-

पिता, कश्यप, माता-अदिति, स्त्री-प्रभा या उषा, अस्त्र-किरण, वर्ण-लाल, नेत्र-तीन॰-

भुजा-चार हैं (दोहाथों में कमलके फूल एक हाथ से फलदेते हैं और एक हाथसे अपने उपासकको बढ़ातेहैं), आसन-लाल कमल-

स्त्री-संज्ञा अथवा सवर्णा (विश्वकर्मा की कन्या) जिससे तीनपुत्र हुये पीछे सूर्यका तेज न सहकर अपना रूप छाया में बदलकर बनको चलीगई- छायाने एक समय संज्ञा के पुत्र यमको शापदिया इस शापके लगने से सूर्यको आश्चर्य हुआ कि माताका शाप पुत्र को क्योंकर लगसक्ता है पीछे तपोबल से जानलिया कि संज्ञा वनमें घोड़ी का रूप धारण किया इससे आपने भी घोड़े का रूप धारण करके संज्ञा के साथ रहने लगे और सूर्यका तेज कमकरने के हेतु विश्वकर्मा ने उनको पत्थर पर चढ़ाया जिससे सूर्यका तेज अष्टांश रहगया और जो तेज रगड़ने से निकल गया

इससे यह वस्तु उत्पन्न हुई विष्णुका चक्र, इन्द्रका त्रिशूल, कार्तिकेयकी सांगी और कुवेरका अस्त्र-

सारथी-अरुण (कश्यप और अदितिका पुत्र)-

पुत्र-सुग्रीव (एक वन्दरमाताके), कर्ण (पृथा पाण्डुकी स्त्री से), अश्विन (अथवा विश्वकर्मा संज्ञासे जब घोड़ी के रूपमें थी जिन्हों ने च्यवनको शुद्ध तनकिया च्यवनकी कथादेखो), श्राद्धदेव, धर्मराज (संज्ञा से) शनैश्चर और सावर्णि मनु (छायासे) कन्या-यमुना (संज्ञासे)-

दांत-अर्थरहित, मूर्ति-अष्टधातु गोल १२ अंगुल के व्यासकी होतीहै-

सूर्य पूषण रूप धारण करके दक्षकी यज्ञमें गये और जब महादेव ने वीरभद्र वाण चलाया था वह वाण वलिपशु के लगा उसी बलिपशुको पूषण ने खाया जिससे इनके दांत गिरपड़े और नपला होगये

वाहन-चारघोड़ेका रथ-और उच्चश्रवाघोड़ा-

एक समय शिवने सुमालीदैत्यको एकरथ बहुत वेगवान् और तेजस्वी दिया उसपर चढ़कर वह सूर्यके पीछे पीछे चलताथा और जहांपर रात्रिहो वहांपर उसरथके प्रकाश से दिनहोजाय-इसकारण सूर्य ने उस दैत्य को मारगिराया इसपर महादेव सूर्यके पीछे दौड़े और रथका दंडाला वह रथ काशी में गिरा वहीं पर लोलार्क तीर्थहुआ-

अवतार १२ हैं-सूर्य, वरुण, वेदाङ्ग, रवि भानु, गभस्ति, विष्णु दिवाकर, मित्र, यम, निर्ऋति, आदित्य-

शिवजी की आज्ञानुसार जो रूप धारण करके दिवोदासका धर्म नष्ट किया वह यह है-

१ लोलार्क-असिसङ्गम, २ उत्तरार्क-विश्वनाथभवन के स्थानपर जहां पर एक ब्रह्मणी राजाकी कन्या होकर मुक्तिपाई, ३ आदित्य-

साम्बपुरमें जहांपर साम्बका कुष्ठ दूरहुआ, ४ मयूखादित्य-जो शिवके नेत्रहुये, ५ खखोल्कादित्य-विनताने उत्पन्न किया, ६ अरुणादित्य-विनताके पुत्र, ७ वृद्धादित्य-इनकी सेवामे हारीतमुनि युवावस्थाको प्राप्तहुये, ८ केशवादित्य-९ विमलादित्य-हरिकेशने वनमें स्थापितकिया, १० कनकादित्य-११ यमादित्य-जहांपर यमराजने तपकिया था-

जानकी अथवा सीता ॥

पिता-जनक राजा, भाई-लक्ष्मीनिधि, बहिन-उर्मिला (सुनैनाकी), माता-पृथ्वी-

एक समय जनकपुरमें अकाल पडा और अनावृष्टि हुई तो मुनियों ने कहा कि राजा हल जोतें तो वृष्टिहो राजाने ऐसाही किया हलका फाल एक घडे में (जो रावणने गाडा था उसमें मुनियों का मासथा और मुनियोंने यह मास रावणको कर दिया था और कहाथा कि हे रावण ! इसी माससे तुम्हारा नाश होगा इससे रावण ने उस घडेको दूरदेश में गाडा था) लगा और उसमें जानकी उत्पन्नहुई-

एक समय जानकीजी गिरिजापूजन जातीथी नारद मिले उन्होंने कहा कि तेरा पति इसी वाटिका में मिलेगा जब उस पुरुष को देखकर इस वाटिका में तेरा मन मोहितहो तो जानलेना कि यही मेरा पति है-

एक समय अयोध्याजी में एक राक्षस उत्पन्न होकर महाउपद्रव करनेलगा वशिष्ठजीने कहा कि जो जानकी अपने हाथमे दीपककी बत्ती उसको देवें तो इस राक्षस का नाशहो परन्तु ऐसे समयमें भी कौशल्याजीने [illegible] नहीं [illegible]-

लौटआये और अयोध्या की गद्दीपर रामचन्द्र की पादुकाको स्थापित करके आप नन्दिग्राम अरथात् भरतकुण्ड में विरक्त होकर रहे और रामचन्द्रके वनसे लौटने पर अयोध्याजी को गये-रामचन्द्रकी आज्ञानुसार कश्मीर देशको जीता और पुष्करावती का राज्य पुष्करको और तक्षशिला का राज्य तक्षको दिया-

गालव ॥

पिता विश्वामित्र-

जब राजा गालव विश्वामित्र से विद्या पढ़चुके तो कहा कि मुझसे दक्षिणा लीजिये विश्वामित्र ने न अङ्गीकार किया परन्तु जब गालव बहुत हठवश हुये तो विश्वामित्र ने १००० श्यामकर्ण घोड़े मांगे गालवने तीन राजाओंसे यहा ६०० घोड़े पाये पर तु राजाओं ने कहा कि हमको पुत्रदो तो और भी घोड़े देवें-तब ययातिका क या (जिसमें इतना गुण था कि चाहे जितने पुत्र उससे उत्पन्न कर लेव परन्तु वह क्वारीही बनीरहै) लादिया और उन राजाओं से ६०० घोड़े और पाये और २०० घोड़ों के बदले में विश्वामित्र ने उस स्त्रीसे दो पुत्र उत्पन्न करलिये-

एक समय गालव की माता भूखसे व्यथित होकर गायत्र के गले में फांसी बांधकर बेंचने को निकली परन्तु राजा सत्यव्रत ने प्रतिदिन भोजन देनेका प्रण किया तब लड़के की फांसी छोड़ा तभीसे इस पुत्रका नाम गालव और गालवगोत्र हुआसे चला-

अत्रिमुनि ॥

पिता-ब्रह्मा (कानसे) कोई कोई कहते है कि स्वायम्भुव मनु पिता है-
स्त्री-अनसूया (जिन्होंने जानकीजी को चित्रकूट में पतिव्रत सिखाया)-
पुत्र-चन्द्रमामुनि (ब्रह्माके रूपहैं अत्रिके नेत्रसे) दत्तात्रेय (विष्णुकेरूप),
दुर्वासा (शिवके रूप)-

उनके दर्शन से तेरे पंख फिर उगेंगे केवल तू उनको सीताका

शत्रुहन अर्थात् शत्रुघ्न ॥

पिता–दशरथ, माता–सुमित्रा, भाई–रामचन्द्र, भरत लक्ष्मण
स्त्री–श्रुतिकीर्ति (राजा जनक के भाई श्रुतिकेतु की कन्या
पुत्र–सुबाहु और यूपकेतु–

जब रामचन्द्र वन जानेलगे उस समय शत्रुहन भरत के
थे वहासे लौटनेपर यह सुना कि मथरा चेरीने केकयीको सुबुद्धि
को बनवास कराया उसको बहुत मारपिटया परन्तु भरतजीने
साथ चित्रकूट को भी गये थे–कृष्णावतार में अनिरुद्धका अव

रामचन्द्रने इनको मथुरा का राज्य दिया था जब अयो या
तो यह मथुरा का राज्य सुबाहु को विदिशा का राज्य यूपकेतु
के पास चलेआये–

द्विविद और मैन्द कपि ॥

पिता–आश्विन, माता–[illegible]–

यह दोनों भाई थे और लंकाकी चढ़ाई में रामचन्द्र के साथ
द्विविद के १००० हाथीका बलथा और सुग्रीवका मित्र
यह किष्किन्धा में रहा जब इसका मित्र भौमासुर मारागया तो
आया और बलरामजीने इसका अनादरकर मारडाला–

सुषेणकपि ॥

कन्या–तारा (बालि की स्त्री)—

वरुणने इसको लंका में रामचन्द्र की सेना के साथ भेजाथा
सेन का सेनापतिथा–

गई तो यह वृत्तान्त सुनकर दोनों भाई रामचन्द्र पर १४००० सेना लेकर चढ़गये और युद्धकरके परलोकको सिधारे—

मारीच ॥

माता—ताड़का, भाई—सुबाहु—

जब रामचन्द्र विश्वामित्र के यज्ञकी रक्षा करनेगये तो यह दोनों लड़नेको आये सुबाहु मारागया और मारीच बाणके लगने से समुद्र तट पर जापड़ा और बहुत दिन वहीं पर रहा जब रामचन्द्र पंचवटी में थे तब रावणने मारीच को कपटमृग बनाकर रामचन्द्र के सम्मुख भेजा रामचन्द्र ने उसको सुवर्णरूप देखकर पीछा किया और सीताको उसी समय में रावण हरलेगया—

कबन्ध ॥

यह राक्षस पूर्वजन्म में गन्धर्व था किसी समय स्थूलशिरा ऋषि इसके शापसे अ... इसने ईसकिया मुनिने उसे शापदिया कि वह राक्षस होकर उपद्रव करने लगा तब इन्द्रने उसे वज्रमारा जिससे उसका शिर धड़में घुसगया इसीसे इसका नाम कबन्ध हुआ इसकी दोनों भुजा एक योजनकी थीं जिससे यह सब जीवों को पकड़ लेताथा जब रामचन्द्र जानकी की खोजमें चलेजातेथे यह उनको मिला और रामचन्द्रने उसका शिर काटडाला—

सुरसा ॥

यह स्वर्गलोकवासिनी राक्षसी थी जब हनुमानजी सीताकी खोजमें लङ्का जातेथे तो यह जानेनहीं देतीथी हनुमानजीने कहा मैं रामचन्द्रका काम करआऊं तो मुझे खाना परन्तु इसने नहीं माना मुख फैलाकर खड़ीहोगई जितना मुख वह फैलाती उसका दूना भारी शरीर हनुमानजी धारण करतेथे पश्चात् हनुमानजी सूक्ष्मरूप धारण

पुत्र–असमञ्जस (केशिनी से) और ६०००० पुत्र (सुमति से)–
पौत्र–अंशुमान्, प्रपौत्र दिलीप, महाप्रपौत्र–भगीरथ–

राजा बाहुक जब वनको गये तो उनकी गर्भिणी स्त्रीको जिसको उसकी सवतिने विष देदियाथा उनके साथ गई वह सातवर्षतक गर्भसेरही जब राजाका देहान्त हुआ और वह सती होनेचली तो और्व्वमुनिने रोकलिया और उसके पुत्रहुआ जिसका नाम मुनिने सगर (स+गर=विष सहित) रक्खा–

राजासगर महाप्रतापी था उसने बहुत से अश्वमेधयज्ञकिये इन्द्र डरकर यज्ञ के घोडेको चुरालेगया और पाताल में कपिलमुनि के पीछे बांधआया राजाके ६० सहस्रपुत्र घोडेको ढूंढते २ वहां गये और मुनिको लातमारा जब मुनिने क्रोध युक्त आंख खोली सबके सब भस्म होगये तदनन्तर सगरने अंशुमान् को भेजा वह मुनिसे घोडेको लाये और मुनिने कहा कि यदि गंगाजी पृथ्वीतलमें आवें तो तुम्हारे पुरषेतरें–राजासगरने तीनलाखवर्ष गंगाहेतु तपकिया परन्तु मनोरथ पूर्ण न हुआ–अंशुमान्ने भी वैसाही तपकिया और मरगये तब दिलीपने तपकिया और मनोरथहीन मरगये पश्चात् भगीरथ ने यह कार्य्य पूराकिया–जब ब्रह्मा ने अपने कमण्डलु से गंगाजी को दिया तो शिवने अपने जटामें रोकलिया बड़ी तपस्या से शिवने छोडा आगे बढ़ी तो रास्ते में जह्नुमुनिने पानकरलिया बड़ी प्रार्थना से उन्होंने छोडा और गंगाका नाम जाह्नवी हुआ–ब्रह्माने कहाथा कि यह तेरी पुत्रीहै और भागीरथी कहलावेगी–

असमञ्जस पूर्व जन्म में योगी होनेके कारण प्रजा को बहुत दुःख देताथा इस से राजाने उसको देशसे निकालदियाथा–

वेन ॥

पिता–अंग, माता–सुनीथा–

इसके वंशमें कई पीढ़ीके पीछे अंग राजाहुये बड़ी तपस्या के उपरान्त पुत्र

मृकण्ड पुत्रहीन थे देवताओं के वरसे उनके पुत्र हुआ परन्तु उसकी आयु १२ वर्षकी थी १२ वर्ष उपरान्त वे जी पुष्प होनेलगे यह वृत्तान्त सुनकर मार्कण्डेय ने छ मन्वन्तर तप करके अपनी आयु बढ़ाया और फिर भी दुखी-फिर तप किया तो नारायण ने उनको महाप्रलय दिखाया परन्तु उनको नारायण नहीं-उनको व्यासजी ने वेदोंका सार पढ़ाया और उस पुराणका नाम मार्कण्डेय पुराण हुआ-

षष्ठीदेवी ॥

वाहन-बिल्ली, स्वरूप-स्यामा और बालक गोदमें-

विवाही स्त्री इनकी पुकारती हैं लड़के का बाप बालकके उत्पन्न होने के छः दिन पीछे और माता पन्द्रहवें दिन पूजती है-

निमि ॥

पिता-इक्ष्वाकु-

एक समय राजाने वशिष्ठको यज्ञ करवाने के लिये बुलाया परन्तु वशिष्ठ इन्द्रके यहां यज्ञ कराने चलेगये तब राजाने गौतम से यज्ञ करालिया वशिष्ठने शापदिया कि तेरा नाश होजाय तब राजाने वशिष्ठको भी शापदिया जिससे उन्होंने मित्रावरुणके यहां जन्मलिया और राजाको वरमिला कि तेरा वास मनुष्य और जीवोंके पलकपरहै-राजाके शरीरसे मुनियोंने राजा मिथिलको उत्पन्न किया जो जनक के पुरुषाओं में है और उन्हों ने मिथिलापुरी बसाई-

बाणासुर ॥

पिता-बलि, पितामह-विरोचन, प्रपितामह-प्रह्लाद भाई सौ थे, स्त्री-कन्दला, पुत्र-[illegible], कन्या-ऊषा, राजधानी-शोणितपुर, मन्त्री-कूष्माण्ड और कुम्भकर्ण-

बाणासुरने शिवका तपकर सहस्र भुजा पाई तब शिवसे लडने चला महा देवने कहा तुझसे लडनेवाला उत्पन्न होगा और एक शल्याका देकर कहा कि इसको अपने मकान के ऊपर खडा करलेव जब यह गिरपडे तो जानलेना कि तेरा वैरी उत्पन्न हुआ उसने वैसेही किया -उसकी कन्या उषा पार्वतीजी से विद्या पढने जाया करती थी शिव पार्वती को विहार करते देख इसको भी पति की इच्छा हुई तब पार्वतीने जानलिया और कहा कि तेरापति तुझको स्वप्नमें मिलेगा उसको ढूंढ़वालेना कहीं न उपरान्त ऐसेही हुआ और उसकी सखी चित्ररेखा ने उसको ढूँढा और हरलेआई यह पुरुष श्रीकृष्ण का पोता अनि-रुद्ध नाम था जब अनिरुद्ध यहां आया तो यह शिवकी गाडीहुई शल्याका गिरगई बाणासुर ने अनिरुद्ध का पता पाकर उसको कैद में डाल रक्खा यह वृत्तान्त सुनकर कृष्ण और बलराम प्रद्युम्न आदि चढ़ आये और बाणासुर को हरा उषा सहित अनिरुद्ध को लेगये इसयुद्ध में शिवजी बाणासुर की सहायता को आये थे पश्चात् बाणासुर ने शिवकी बहुत सेवाकी जिससे वह शिवका गण-राज हुआ और उसका नाम महाकाल हुआ

मनु अथवा स्वायम्भुवमनु ॥

पिता-ब्रह्मा के दाहिने हाथसे, स्त्री-शतरूपा (ब्रह्मा के बायें हाथ से)

पुत्र-उत्तानपाद, प्रियव्रत, कन्या-देवहूती (कर्दमकी स्त्री), आकूती (रुचि प्रजापतिकी स्त्री), प्रसूती (दक्षप्रजापतिकी स्त्री)

मनु और शतरूपाने बड़ा तपकिया इससे नारायणने उनकी कन्या देवहूती के यहां जन्मलिया और कपिलदेव कहलाये-

इन्द्र ॥

पिता-आकाश, माता-पृथ्वी, स्त्री-इन्द्राणी अर्थात् शची और पुलोमा,

पुत्र-जयन्त आदि तीन पुत्र (पुलोमासे), चित्रगुप्त (गऊ से)—
पुत्री-जयन्ती (ऋषभदेवकी स्त्री), गुरु-बृहस्पति, वाहन-बादल,
घोड़ा-गैजयंत, राजधानी-अमरावती, सारथी-मातलि,
मंत्री-यमराज, कोषाध्यक्ष-कुबेर,
भुजा-चार (दोहार्थों में सागी एकमें वज्र और एक खाली)—
घोड़ा-उच्चैःश्रवा, हाथी-ऐरावत (समुद्रसे उत्पन्न हुआ)—
आश्रम-मेरुपर्वत (विश्वकर्मा का बनाया), वन-नन्दन-
दूसरेनाम-शक्र, वगलाजन, देवपति, वृत्रहा, वज्री, मरुत्वान्, मघवा,
विडौजा, शुनासीर, पुरहूत, पुरन्दर, मेघवाहन, महेन्द्र, शतमन्यु,
दिवस्पति, सुत्रामा, वासव, वृषा, सुरपति, वलाराति, जम्भभेदी,
नमुचिसूदन, सहस्राक्ष, ऋभुक्षा-

इन्द्रने एक समय वृत्रासुर को युद्ध में मारा-मेघनाद और इन्द्र से युद्धहुआ मेघनाद इन्द्रको पकड़ रक्खा था तब ब्रह्माने उसे वरदेकर इन्द्रको छुड़ाया-

इन्द्रने किसी समयमें गौतमकी स्त्री अहल्यासे भोगकिया और मुनिके शापसे इन्द्र के सहस्र भगहोगये परन्तु बृहस्पति की कृपासे वे भग नेत्र होगये और तभी से इन्द्र सहस्रनयन कहलाये-

एक समय देवताओं और असुरों में संग्राम हुआ ब्रह्माने कहा कि राजा रजि जिसकी सहायता करेंगे उसकी विजय होगी प्रथम असुर रजिके पासगये रजिने कहा कि यदि इन्द्रासन हमको देव तो हम तुम्हारी सहायता करें असुरों ने नहीं माना पश्चात् देवतोंने यह बात अङ्गीकार की और राजाकी सहायतासे विजयपाई इन्द्रने राजा से बड़ी प्रार्थनाकी तो राजाने फिर इन्द्रासन इन्द्रहीको दे दिया राजाके देहान्त उपरान्त उनके पुत्रोंने देवतों से युद्धकिया परन्तु बृहस्पति ने कोई यत्न किया कि जिससे राजा के पुत्र भ्रष्टहोकर इन्द्र करके मारेगये-

इन्द्रासन पान के हेतु जब राजाओंने यज्ञाग्निकी तभी २ इन्द्र उनके यज्ञादि भ्रष्ट करने का उपाय करताथा

जब मोहिनी भगवान्ने अमृत देवतों को पिलादिया तो बड़ाभारी देवासुर संग्रामहुआ जिसमें वरिंशि सहायता को नमुचि और पाकराक्षस आये और मारेगये इसी से इन्द्रका पाकरिपु भी नामहै—

बृहस्पति ॥

पिता-अंगिरसऋषि वर्ण-ब्राह्मण, मूर्ति-कमलाकार,
पत्नि-अश्व थ- स्त्री-तारा—

पुत्र१-कच (शुक्रका चेला और शुक्रकी कन्या देवयानी इनसे विवाह करना चाहा परन्तु कचने गुरुभगिनी जानकर नहीं अंगीकार किया और उसके शापसे इनकी सब विद्या भूलगई और इनके शापसे देवयानीका विवाह ब्राह्मण से नहीं हुआ किन्तु राजा ययाति के साथहुआ)—

पुत्र२-राहु (सिंहिका गर्भसंभव)—

भाई-उतथ्य (जिसकी स्त्री ममता से बृहस्पतिने भोगकिया और ममताने उस गर्भको गिरवाया जिससे भरद्वाजऋषि और भरद्वाज को राजा भरत (दुष्यन्तके पुत्र)के यहां पहुंचाया उन्होंने इसका नाम वितथ रक्खा—

एक समय चन्द्रमा बृहस्पति की स्त्री ताराको हरलेगये इस कारण देवताओं (बृहस्पति की ओरसे) और दानवों (चन्द्रमा की ओरसे) में संग्रामहुआ चन्द्रमाने हारमानकर ताराको देदिया परन्तु बृहस्पतिने उसको गर्भिणी जानकर नहीं अंगीकार किया जब पुत्र उत्पन्नहुआ उसने माता से अपने पिताका नाम पूछा लज्जावश उसने नहीं बतलाया तो पुत्रने शापदिया कि स्त्रिया झूठ होनेवाली-ब्रह्माके पूछने से उसने बतलाया कि चन्द्रमाका पुत्रहै यह सुनकर वह

चन्द्रमा के पास चलागया और चन्द्रमाने उसकी तीव्रबुद्धि देखकर उसका नाम
बुध रक्खा—बृहस्पति देवताओं के गुरु और नवग्रहों में एक ग्रह हैं—

विश्वकर्म्मा (त्वष्ट) ॥

पिता—कश्यप, माता—अदिति, कोई कोई कहते हैं कि इनके पिता ब्रह्मा हैं—
स्त्री—जया (एक दैत्यकी कन्या) पुत्र—विश्वरूप और नल (मन्दरी से)—
वर्ण—श्वेत, नेत्र—तीन, अस्त्र—लकुट, भूषण—सोनेका हार और कंकण—

विश्वकर्म्मा देवतों के राजगीर हैं इन्होंने अनेक प्रकार के अस्त्र और वाहन और
देवलोक और जगन्नाथ की मूर्ति और मन्दिर बनाया—पहिले कारीगर इनका
पूजन करते थे परन्तु अब उनके बदले अपने २ अस्त्रोंकी पूजा करते हैं—

नल और नील भाईथे बाल्यावस्था में समुद्र तटपर खेलाकरै और किसी
मुनिकी मूर्त्तियोंको समुद्रमें फेंक दियाकरें मुनिने शापदिया कि तुम्हारा फेंकाहुआ
पत्थर पानीमें नहीं डूबेगा—इसी कारण समुद्र में सेतु इन्होंने बांधा—

विश्वरूप को इन्द्रने अपना पुरोहित बनाया परन्तु यह दैत्यों से मिलगया तब
इन्द्रने इसको मारडाला तब विश्वकर्मा ने मन्त्र पढकर वृत्रासुर को उत्पन्नकिया
जब उसको भी इन्द्रने मारा तो विश्वकर्मा ने युद्धकिया और इन्द्रने विश्वकर्म्मा
को वध किया—विश्वरूप के तीन शिर थे जब इन्द्रने इसके शिरकाटे तो एक
शिरसे कबूतर, दूसरे से भैंवरा और तीतर तीसरे शिरसे उत्पन्नहुये—

भृगुमुनि ॥

पिता—ब्रह्माकी त्वचासे, पुत्र—शुक्र, ऋचीक, कन्या—धाता, विधाता, श्री,
स्त्री—ख्याति—

एकसमय देवासुरसंग्राम हुआ परन्तु शुक्रकी मायाके कारण देवतों की विजय

नहा होतीथी तब विष्णुने अपने चक्रसे उस स्त्रीका शिरकाटलिया इस अनीतिपर मुनिके शापसे विष्णुको ७ वार पृथ्वीपर अवतार लेनापडा–

एक समय सरस्वती के तीर मुनिमण्डली में यह बातचली कि तीन देवों अर्थात् ब्रह्मा विष्णु महेश में कौन श्रेष्ठहै इस बातकी परीक्षा को भृगुजी पहिले ब्रह्माके पासगये और विना प्रणामकिये बैठगये तो ब्रह्मा बहुत क्रोधितहुये भृगुने जानलिया कि ब्रह्मा रजोगुणीहैं फिर महादेव के पासगये जब वे मिलने को उठे तो मुनिने अपना मुह फेरलिया महादेव त्रिशूललेकर मारने दौडे पार्वतीने रोंक लिया भृगुमुनिने उनको तमोगुणीजाना फिर वहासे नारायण के पासगये और उनको शयन करतेदेख उनकी छातीमें एक लातमारी नारायण जागपडे और भृगुसे प्रार्थनाकी कि मेरी छाती की चोट आपके चरणों में लगीहोगी भृगुने उनको सतोगुणी समझा–वही भृगुलता का चिह्न नारायण की छाती में सदाके लिये बनगया–

जब दक्षने अपने यज्ञ में महादेव का भाग नहीं लगाया उस समय भृगुमुनि उनके पुरोहितथे इसकारण इनकी दाढ़ी उखाड़ीगई–

जब राजा नहुषको इन्द्रासन मिलाया उस समय भृगुने अगस्त्य मुनिकी जटा में घुसकर राजाको शाप दियाथा जिससे राजा सर्प होगयाथा–

एक समय पुलोमा नामी स्त्री के साथ जो एक असुरकी मांगी थी भृगुने विवाहकरलिया वह असुर उस स्त्रीको छीनलेगया और अग्निने उस असुर की सहायता कीथी इस कारण मुनिने अग्नि को शापदिया कि तू सर्वभक्षीहो परन्तु पीछेसे दयाकरके कहा कि जो वस्तु तू खायगा अर्थात् जो वस्तु तुझमें जलेगी वह पवित्र होजायगी–

एक समय काशीके राजाभियोग्यासने वितहव्य से पराजितहो भरद्वाजके यज्ञ कराया तो राजाके प्रतर्दन नामी पुत्रहुआ उसके डरसे वितहव्य भृगुमुनिके पास

भागगया मर्दननें यहांभी पीछाकिया भृगुमुनिने कहा कि यह कोई क्षत्रिय नहीं है यह तो ब्राह्मणहै इससे वितहव्य केशोधारण करनेवाला ब्राह्मणऋषिहुआ—

भृगुमुनि की आशिष से सगर की एक स्त्रीके एक पुत्र और दूसरी स्त्रीके साठ सहस्र पुत्रहुये—

वामन अवतार ॥

पिता—कश्यप— माता—अदिति—

स्त्री—कमला (जो कमलसे उत्पन्न हुईथी) और कीर्ति—

पुत्र—सुभग (कीर्तिसे)—

यह अवतार त्रेतायुगमें हुआथा—जब समुद्र मथागया था और विष्णुने मोहनी रूप धारणकर अमृत देवतों को पिलादिया तो बलिने देवतों को भगादिया और इन्द्रासन जीतलिया—इन्द्रने मयूरका रूप धारण करके और कुबेर गिरगिटकारूप धारण करके रहे पश्चात् अदितिने तपकिया जिससे नारायण ने वामनरूप होकर उनके यहां जन्मलिया और राजाबलि को छलकर सब लेलिया (बलि की कथा देखो)—

मत्स्य अवतार ॥

यह भगवान् का अवतार सत्ययुग में हुआ—महाप्रलयके अन्तमें जब ब्रह्मा सोनेलगे तो हयग्रीव नामी राक्षस वेदों को चुरालेगया—इस कारण नारायणने मत्स्यरूप (शफरी मछली का रूप) धारणकिया—

द्राविड़ देशके राजा सत्यव्रत (जिसको नारायणने पीछेसे मनुका अधिकार देकर श्राद्धदेव नाम रक्खा) एकसमय कीर्तिमाला नदी में अर्घ देनेगया ज्योंही जल हाथमें लिया त्योंही वह मछली हाथमें आई राजाने फिर उसको जलही में डालदिया मछली बोली हे राजन ! मुझको इस जलसे निकालले नहीं तो मुझे

ने देवतों से कहा कि मन्दराचल को मथनी और वासुकी की रस्सी बना समुद्र मथो तो जो १४ रत्न उसमें निकलेंगे (दे० रत्न) उनमें से अमृत तुमको पिलाऊंगा जिससे तुम अमर होकर अजय होजावोगे (देखो मोहनी अवतार) मन्दराचलका भार सँभाल्ने के हेतु उस समय भगवान्ने कच्छप अवतार लिया और इनकी पीठपर पर्वत को रखकर समुद्र को मथा—

जरासंध ॥

पद्मावली—चन्द्रवंशावली में देखो—

पिता—बृहद्रथ- माता—दो थीं, भाई—सत्यजित् (सौतेली माता से)—
पुत्र—सहदेव जिसके वंशमें देवापी राजा हुआ जो उत्तरासढ में तप करते हैं और
कलियुग के अन्त में उनसे चन्द्रवंशी राजा उत्पन्न होंगे—
कन्या—अस्ति और प्राप्ति जो कंसको व्याही थीं—

बृहद्रथ की यहां रानीके पुत्र न होनेसे एकमुनिने एक आम देकर कहा कि इसके खानेसे पुत्र होगा दोनों रानियोंने आधा २ करके खालिया जिससे उनके आधा २ पुत्र पैदाहुआ जरा नामी राक्षसीने इन दो भागों को जोड़कर एक बालक करदिया—इस कारण उसका नाम जरासंध हुआ-

जब श्रीकृष्णने कंसको वधकिया तब जरासंध तेईस २ अक्षौहिणी दल लेकर १७ बार लडने को आया परन्तु हारगया अठारहवींवार काबुल के राजा कालयवन को साथ लेकर लडनेआया तब श्रीकृष्ण गन्धमादनपर्वतपर भागगये जहां पर राजामुचुकुन्द (मुचुकुन्द की कथा देखो) सोते थे कालयवन भी चलागया राजा जागपड़े और उनकी दृष्टि कालयवनपर पड़ी और वह भस्म होगया—और जगमध यदुवंशियों से लड़तारहा श्रीकृष्ण और बलराम पर्वतपर भागगये उसने आग लगादिया श्रीकृष्णने उस अग्नि को बुझाया और द्वारकाजी को चलेगये—

सारिपुत्र कात्यायन और मौदगल्यायन हैं विहारमें राजाको उसके पुत्रने मार-डाला। तब बौद्धजी वहा से सरावस्ती को चलेगये–वहाके राजाप्रसेनने बौद्धमत को अंगीकारकिया वहासे लौटते समय राजमहल और वैसली होतेहुये कुशि-नगर में पहुँचकर प्राण त्याग किया–

कल्की अवतार ॥

जब मगधदेश में विरवासफाटिक राजा होगा वह सब क्षत्रियों को नाशकर और २ जातियों को राज्यदेगा तब नारायण सभल में एक ब्राह्मण के यहा कल्की नाम से अवतारलेंगे और सब म्लेच्छों का नाशकरेंगे–

रूप–श्वेतवर्ण, वाहन–अश्व, अस्त्र–खड्ग–

जगन्नाथ ॥

राजा इन्द्रद्युम्न (सूर्यवंश पुत्र) को तपकरने की इच्छाहुई तो मुनियोंने कहा कि जो श्रीकृष्ण को जब व्याधने मारा है उनकी अस्थि जो पड़ीहै उसकी मूर्ति बनवाकर उड़ीसा में स्थापित कराइये तो आपको मुक्ति होगी इन्द्रद्युम्न के प्रार्थना करनेपर विश्वकर्माने मन्दिर और मूर्ति बनाना अंगीकारकिया परन्तु यह कहा कि मेरा भेद न खुलनेपावे राजाने कहा कि मैं चौकसी करूंगा–विश्वकर्माने एक रात्रिमें तो मन्दिर बनाया फिर उसी मन्दिर में बैठकर मूर्ति बनानेलगे जब पन्द्रह दिन व्यतीत होगये तो राजाको सन्देह हुआ और विश्वकर्मा को देखनेगये यह जानकर विश्वकर्मा चलेगये और मूर्ति अध बनी रहगई इसपर राजाको खेद हुआ और ब्रह्माके पास गये और कहा कि महाराज इस मूर्तिको विख्यात कीजिये ब्रह्मा सब देवताओं को अपने साथ लेकर पुरीमें आये इस स्थापन में ब्रह्मा पुजारीबने और मूर्तिका नाम जगनाथजी प्रसिद्धकिया–

दूसरी कथा इसप्रकार है कि नारायण लक्ष्मी सहित उड़ीसा के नीलगिरि

पर्वतपर रहतेथे और नीलमाधवके नामसे प्रसिद्धथे और उस भूमिको मोक्षक्षेत्र कहतेथे इन्द्रद्युम्नने दर्शन की अभिलाषाकी और अपने पुरोहित के भाई विद्यापति को राह देखने के लिये भेजा जब वह रास्ता देखआये तो राजाने कुटुम्ब समेत नीलमाधवके दर्शनको प्रस्थान किया परन्तु नीलमाधव अन्तर्द्धान होगये राजा निराश होगया तब आकाशवाणी हुई कि तुमको नीलमाधव का दर्शन नहीं होगा लकड़ी की मूर्ति स्थापित करो–नारायणने आपही विश्वकर्मा का रूप धारणकर उस मन्दिर और मूर्तिको बनाया और जगन्नाथ नाम रक्खा–

मरीचिऋषि ॥

पिता–ब्रह्माके मनसे, स्त्री– कला (कर्दममुनिकी कन्या)–
पुत्र–कश्यप, कृश–

परीक्षित ॥

दादा–अर्जुन, पिता–अभिमन्यु (सुभद्रासे)
माता–उत्तरा (राजा विराट्की कन्या)–
स्त्री–राजाविराट्की पोती, पुत्र–जनमेजय आदि ४ पुत्र–

जब राजा परीक्षित गर्भमें थे और युधिष्ठिर गद्दीपरथे तो अश्वत्थामाने युधिष्ठिर आदि पाँचों भाइयोंपर ब्रह्मास्त्र चलाया उसीमें से एक अग्नि निकली और उत्तराके उदर में घुसगई परन्तु श्रीकृष्णने गर्भकी रक्षाकी–महाभारत के अन्तमें जब कौरव पाण्डव नाशहोगया तो यहाराज राजा परीक्षित बैठे। इनके समयमें कलियुग आया राजा कलियुगको मारनेलगे परन्तु उसने राजाको समझालिया तब राजाने उसको रहा कि तू हिंसा, वेश्याके घर, जुआ, चोरी, झूठ और सोने में रह–एक समय राजा अहेर खेलनेगये और हिरनकिया कलियुग को साथ लिनी राजा प्यासेहुए और शमीक अथवा लिमांशऋषिके निकट पानी मांगनेगये

परन्तु उस समय मुनि ध्यान में थे इस कारण सुध न हुई राजा मुनिके गले में मरा सांप डालकर चलेगये मुनिके पुत्र शृंगीऋषिने राजाको शाप दिया कि आज के सातवें दिन यही सांप मुझको डसेगा-तब शमीकमुनिने अपने शिष्य कुमुक को राजाके पास भेजा उसने राजासे शापका वृत्तान्त कहा राजा विरक्त होकर गगातीरपर शुकदेवजी से श्रीमद्भागवत सुनकर मुक्तहुये उनके पीछे उनका पुत्र राजा हुआ-

परीक्षितने एक सारस्वत ब्राह्मण को गुरु बनाकर अश्वमेधयज्ञ किया था-

धृतराष्ट्र ॥

पिता-व्यासजी, माता-अम्बिका-

स्त्री-गान्धारी अथवा सौबाली (गंधारदेशके राजा सुबल की कन्या)-

उत्पत्ति की कथा-शन्तनु राजाकी कथामें देखो-किन्तु धृतराष्ट्र के पिता अपनी मांसे साथ सुंदर भोग किया इस कारण धृतराष्ट्र अंधे उत्पन्न हुये-

जब पाडु (धृतराष्ट्र के भाई) अहेर खेलनेगये तब व्यासजी आये और गा धारीने उनसे १०१ पुत्र मांगा व्यासने मांस मंगाया उसके १०१ टुकड़े किया और रानीको दिया जिससे दुर्योधन आदि १०० पुत्र और एक कन्या दुशाला हुई इसी धार्तराष्ट्रों का नाम कौरव हुआ-

जब युधिष्ठिर पांचों भाई वनसे लौटे तो दुर्योधन आदिने राज्य न छोड़ा इस से उनसे विरोध हुआ परन्तु धृतराष्ट्रने हस्तिनापुर का राज्य अपने पुत्रोंको दिया और खाण्डवप्रस्थका राज्य पाण्डवों को दिया-वहांपर उन्होंने इन्द्रप्रस्थ बसाया और रहनेलगे-

दक्षप्रजापति ॥

प्रथम जन्म की कथा- पिता-ब्रह्माके दाहने अंगूठे

५ विश्वा	विश्वेदेव	०
६ साध्या	साध्यगण	धर्थसिद्द
७ मृतवती	इन्द्र, उपेन्द्र	०
८ वसु	अष्टवसु	०
९ मुहूर्ता	मुहूर्ताके देवता	०
१० सङ्कल्पा	सङ्कल्प	काम

दो कन्या भूतको विवाह किया उसमें एक का नाम था सरूपा जिससे गरुड़ और ११ रुद्रहुये-

दो कन्या अंगिराको विवाह किया उसमें एकका नाम स्वधा था जिससे पितरहुये-

दो कन्या कृशाश्वप्रजापति को विवाह किया उसमें एक का नाम अरुचि था जिससे धूम्रकेश हुये-

सत्ताईस कन्या जिनको नक्षत्र कहते हैं (दे० नक्षत्र) चन्द्रमा को विवाह किया चन्द्रमाने कृत्तिका का निरादर किया इससे दक्षने चन्द्रमाको शापदिया जिससे चन्द्रमाको क्षयीरोग होगया और सब नक्षत्र निस्सन्तान रहीं-

सोलह कन्या कश्यपको विवाहदिया-

उनकेनाम-	उनकी सन्तान-
१ विनता	गरुड़, अरुण
२ कद्रू	सर्पादि
३ पतङ्गी	पक्षीआदि
४ यामिनी	टिड्डीआदि
५ तेमी	जलचर
६ सरमा	कुत्तेआदि चार सगके जीव

मित्र हसहुये और विश्वामित्र के शापसे वशिष्ठ भी पक्षीहुये और दोनों युद्ध करने लगे परन्तु ब्रह्माने निवारण किया–विश्वामित्र क्षत्रियसे ब्राह्मण होगये इस कारण और भी विरोध था–

वशिष्ठ राजा नारदसे भी पुरोहित थे–राजा श्राद्धदेवको वशिष्ठने पुत्रहेतु यज्ञ कराया था परन्तु रानी की इच्छानुसार उसके कन्या हुई तब राजाने कहा कि मेरी वाञ्छा तो पुत्रकी थी तब वशिष्ठने उस कन्याको पुत्र कर दिया–

वालि ॥

पिता–इन्द्र, राजधानी–किष्किन्धा, स्त्री–तारा, पुत्र–अङ्गद भाई–सुग्रीव–

ब्रह्माकी श्वाससे एक वानर उत्पन्न हुआ पीछे वह नारी होगया उसपर इन्द्र मोहितहुये और उनका वीर्य उस स्त्रीके बालपर पड़ा इसी से वालिहुये और सूर्य मोहितहुये और उनका वीर्य उस स्त्री के ग्रीवा ऊपर पड़ा उससे सुग्रीव हुये–

वालिने दशकंधर रावणको दबाया और इसको ब्रह्माने वरदियाथा कि जो तेरे सम्मुख लड़ने आवे उसका आधा बल तुझमें आजायगा इसी से रामचन्द्र ने वालिको वृक्षकी ओटसे मराया–

मतंगऋषिपर मतङ्गऋषिका आश्रम था वालिने दुन्दुभि राक्षस को उसी पर्वतपर पटककर मारा और उसका रुधिर मुनिके ऊपरपड़ा तब मुनिने शाप दिया कि जो तू इसपर्वत पर फिर आवेगा तो भस्म होजायगा इसी कारण वालि उस पर्वत पर नहीं जाता था और सुग्रीव वहींपर वालिके डरसे छिपे थे–

एक समय मायावी राक्षस किष्किन्धा नगर में आया वालि में बड़ा शब्द किया वालिने उसको खदेड़ा वह भागकर एक कन्दरा में घुसगया वालभी उस कन्दरा में घुसे और सुग्रीवको कन्दरा के द्वारपर रखगये थे और कहा कि जो पन्द्रह दिनमें मैं फिर न आऊं तो जानलेना कि असुरने मुझे मारडाला

सुग्रीव एक मास तक उस कन्दरा पर रहे जब रुधिर की धारा निकली तो निराशहोकर उस गुफाको एक पत्थरसे बन्दकरदिया और नगरको आये मंत्रियोंने सुग्रीव को गद्दीपर बैठालदिया जब बालि उस राक्षसको मारकर आया और सुग्रीवको गद्दीपर देखा तो सुग्रीवको निकालदिया और राज्य और उनकी स्त्री को हरलिया जब सुग्रीव और रामचन्द्र से मित्रताहुई तो रामने बालिको मारा और राज्य सुग्रीव को दे अंगदको युवराज किया–

बालिने एक राक्षस दुंदुभिको मारा (दुंदुभि क० दे०)जिसकी हड्डी कई कोसमें पड़ीथी–

एक समय बालि स्नान करने लगे और सात तालके फल भोजनार्थ रख दिया उसको एक सर्पने खालिया बालिके शापसे उस सर्पके तनसे सात ताल के वृक्ष उगे और रामचन्द्रने उन वृक्षोंको एकही बाणसे छेदा–

जडभरत ॥

पिता–ऋषभदेव, माता–जयन्ती (इन्द्रकी कन्या)–
स्त्री–पंचजनी (विश्वरूपकी कन्या) पुत्र–सुमत और धूम्रकेतुआदि ५ पुत्र–

राजाभरत दशसहस्र वर्ष राज्य करके तप हेतु पुलहाश्रमनदी पर जाबैठे अचानक एक सिंहने एक गर्भवती स्त्री का पीछा किया नदी पार होते समय उसके पेट से बच्चा गिरपड़ा तब राजाने उसको पाला एक दिन वह बालक भागकर बन को चलागया उसके शोच में राजाने तन त्याग किया और दूसरे जन्ममें हरिणहुये और उनको पिछले जन्मका वृत्तान्त नहीं भूला उसके पश्चात् एक ब्राह्मणके यहा जन्मलिया और वहा भी भरतनाम रक्खागया और औरढ रूपमें रहनेलगे उनके भाइयों ने उनको खेतकी रखवाली पर करदिया वहा से एक भील उनको भद्रकाली के बलि हेतु लेगया भद्रकाली ने हरिभक्त जान उस भीलका सिर काटडाला–

एक समय राजा रहूगण ने इनको अपनी शिबिकामें लगाया कुछ दूरजाने उपरान्त इन्हों ने रहूगण को ऐसा ज्ञान सिखाया कि वह बनको चलेगये- तदनन्तर भरतका अन्तकाल हुआ-उनके पीछे उनका पुत्र सुमन्त गद्दीपर बैठा और जैनमतका प्रचार किया-इनके पीछे प्रतिहार आदि राजाहुये-

राजा शन्तनु ॥

पिता-प्रतीप (राजाभरतकी चाईसवीं सन्तान हैं और राजाभरत पुरुकी सोलहवीं सन्तान हैं) स्त्री-१ गंगा, २ सत्यवती (मत्स्योदरी)- पुत्र-भीष्मपितामह (गंगासे) विचित्रवीर्य्य और चित्रांगद (सत्यवती से)-

जब सत्यवती क्वांरी थी तब पाराशरमुनि के संयोग से व्यासजी हुये-सत्यवती की माता अद्रिका अप्सरा थी-एक समय अद्रिका मछली के रूपमें थी उसी समयमें सत्यवती का जन्म हुआ जिससे उसका नाम मत्स्योदरी हुआ-

इन पुत्रों में भीष्म तो ब्रह्मचारी होगये और चित्रांगद को इसी नाम के एक गन्धर्व ने मारडाला और व्यासजी तप करनेलगे जब विचित्रवीर्य्य निस्सन्तान मरे तो व्यास ने अपनी माताकी आज्ञानुसार उनकी विधवा स्त्रियों (काशी नरेशकी कन्यायों) से विवाह किया सो अम्बिका से धृतराष्ट्र (अंधे) और अम्बालिका से पांडु (रोगी) पुत्रहुये तब सत्यवती ने चाहा कि अच्छ पुत्र उत्पन्न करो-अम्बिकाने अपनी चेरी विलग को अपने रूपमें व्यासके पास भेजा जिससे विदुर हुये पश्चात् व्यास बन को चलेगये-

तदनन्तर भीष्म इन लड़कों के नामसे राज्यको सम्भाला जब सियाने हुये तो धृतराष्ट्र तो अंधे थे और विदुर चेरीपुत्र थे इनको राज्य नहीं दिया पांडु को राज्य दियागया-

पाण्डु ॥

दादा-शन्तनु, पिता-व्यासजी, माता-अम्बालिका,

स्त्री—पृथा (कुन्ती) और माद्री—

पृथा कुन्तिभोजके पासरहैथी इससे इसका नाम कुन्ती हुआ उसको दुर्वासा ने वरदिया था कि वह चाहे जिस देवता से पुत्र उत्पन्न करालै उसने सूर्यको स्मरणकिया और पुत्र हुआ उस पुत्रको नदीमें फेंकदिया अधीरत सारथी की स्त्री राधाने उसका पालन किया और उस लड़के का नाम वासुसेन वा राध्ये हुआ परन्तु उसको महाबली करके उसका नाम कर्ण रक्खा दूसरानाम वैकर्तन अर्थात् विकर्तन (सूर्य) के पुत्र कर्णने भीमसेन के पुत्रको मारा परन्तु पश्चात् इस को अर्जुनने मारडाला—

माद्री माद्रदेश के राजा शल्यकी कन्याथी एक समय पाडु अपना राज्य अ पने भाइ भीष्म और धृतराष्ट्र को सौंप स्त्री सहित वनमें अहेर खेलने गये वहापर एक हरिण के जोडेको (जो मुनिथे) मारा उनका शापहुआ कि तुमभी अपनी स्त्रीकी गोदमें मारेजावोगे—इस कारण पाडु ब्रह्मचारी होगये तब पृथाने धर्मराज को स्मरण किया जिससे युधिष्ठिरहुये और वायुको स्मरण किया जिससे भीम और इन्द्रसे अर्जुनहुये—और माद्रीके अश्विनीकुमारों से दो युगलपुत्र नकुल और सहदेवहुये तदनन्तर पाडु मुनिके शापको भूलकर माद्रीकेपासगये और उसकीगोद में मरगय—तब पाण्डों भाइयों ने वनसे आकर अपना राज्य धृतराष्ट्र से लेलिया—इसीसे धृतराष्ट्रके सौ पुत्रोंसे शत्रुताहुई और अन्तमें महाभारतका महायुद्धहुआ—

पुत्र—१ युधिष्ठिर (जिसका पुत्र देवक पौरवीसे) २ भीमसेन (जिसका पुत्र घटो त्कच हिडिम्बा स्त्री से) ३ सहदेव (जिसका पुत्र विजय सहोत्रास)—
४ नकुल (जिसका पुत्र निरमित्र कर्णमतीसे) ५ अर्जुन (जिसका पुत्र अभिमन्यु सुभद्रासे और बभ्रुवाहन और ईरावत अन्तेवासे)—

अभिमन्युके परीक्षित हुये और ईरावत को उनके नाना (मनीपुरके राजा) ने गोदलिया था—

द्रोणाचार्य ॥

स्त्री–कृपी,   पुत्र–अश्वत्थामा–

एक ब्राह्मण थे इन्होंने कौरव और पाण्डवको युद्धविद्या सिखाई महाभारतमें द्रुपदके पुत्र धृष्टद्युम्न के हाथसे मारेगये–

जब सब कौरव मारेगये और दुर्योधन भागगये तो अश्वत्थामा ने कृपाचार्य और कृतवर्माको फाटक पर छोड़ा और पाण्डवदल में घुसकर सबको मार केवल पांचोंभाई पाण्डव और श्रीकृष्णबचे अश्वत्थामा शिवके अवतार हैं द्रोणाचार्य ने तप करके यह अमर और पाण्डवों का मारनेवाला पुत्र पाया था महाभारत के अन्तमें अश्वत्थामा ने उत्तरा (अर्जुन की बहू) के गर्भमें अस्त्र चलाया परन्तु श्रीकृष्णके चक्रने निवारण किया–

भीम अथवा भीमसेन ॥

माता–पृथा (पाण्डुकी स्त्री)   पिता–वायुदेवता (पाण्डुक० दे०)

स्त्री–द्रौपदी (द्रुपदकी कन्या) और हिडिम्बा (हिडिम्बराक्षसकी कन्या)–

भीमसेन महाबली थे इनके मारने को अनेक यत्न कौरवने किया–एकसमय विषदेकर समुद्र में फेंकदिया–वह विष नागोंने हरलिया और नागोंने उसको दश सहस्र हाथी का बलदिया–

एक समय कौरव ने उस घर में जिसमें यह रहतेथे आग लगादिया परन्तु अपने भाइयों और माता सहित भाग बचे और बनको चलेगये–वहांपर हिडिम्ब राक्षसको मार उसकी कन्या से विवाह किया–वहांसे व्यास की आज्ञानुसार अभ्यागत का रूपधर एकचक्रनगरको गये और वहांपर बकराक्षसको मारा–

अर्जुन ॥

माता–पृथा (पाण्डुकी स्त्री)   पिता–इन्द्र (पाण्डुक० दे०)

जब विष्णुने शालिग्रामरूप धारण किया तो शनिने वज्रकीट (कीड़ा) का रूप धारण कर शालिग्रामको बारह वर्षतक दुःख दिया—

समुद्र ॥

पिता—सगरके पुत्र, उत्पत्ति—सगर कृ० दे०
पुत्र—जलधर (गंगा के संयोगसे), कमल, चन्द्रमा, शंख, धन्वन्तरि, बाजि, ऐरावत, धनुष, कल्पद्रुम, मूंगा (दे० रत्न)—।
पुत्री—लक्ष्मी, वारुणी, अप्सरा, सीप (दे० रत्न)—

जलधरराक्षस ॥

पिता—समुद्र, माता—गंगाजी, स्थान—जम्बूद्वीप, (जालधरनगर), स्त्री—वृन्दा (स्वर्ण अप्सराकी कन्या)—

इन्द्रने शिवका तप किया शिवने उसको महाबली करदिया तब वह शिवसे लड़ने चला—शिवने समुद्र को आज्ञादी कि तू गंगासे संयोगकर उनदोनों के योगसे जलधर (शिवअवतार) का जन्महुआ कुछदिन उपरान्त जलधरने इन्द्र को सन्देशा भेजा कि तुम अपना राज्यआदि छोड़ दो जब इन्द्रने राज्य नहीं छोड़ा तो दोनों में युद्धहुआ और देवतों की सहायता को विष्णु आये बड़ा युद्धहोने उपरान्त दैत्योंने रुद्र को बन्दि में कर लिया कुवेर गदाके लगने से व्याकुलहुये—इन्द्रने बलिको मार उसके शरीरको टुकड़े २ करडाला—

जलधर ने राहु को शिव के पास भेजा कि उनसे कहे कि अपनी स्त्री हम को देदें शिवने नहीं दिया और युद्ध होनेलगा जलधर ने शिवका रूप धर पार्वतीजी को छलना चाहा परन्तु निराशहुआ—उसी समय में विष्णुने ब्राह्मण का रूप धर वृन्दाको स्वप्न दिखाया कि जलधर मारागया जब उसको विश्वास न हुआ तो विष्णु ने जलधर का रूप धारण किया और कुछ दिन वृन्दा के

साप रहे यह बात ज्ञात होनेपर वृन्दा ने विष्णुको शाप दिया और आप वनमें जाकर भस्म होगई तबसे उस वन का नाम वृन्दावन हुआ—यह वृत्तान्त सुन कर जलधर ने शिव से युद्ध किया परन्तु शिवने उसका शिर काटडाला—

और्व मुनि ॥

कार्तवीर्य भृगुवंशियों पर इतनी कृपा करता था कि कुछ दिनमें भृगुलोग धनी होगये और राजा की सन्तान कंगाल होगई—एक समय राजाने भृगुवंशियों से सहायता चाही उन्होंने कुछ न किया तब कार्तवीर्य्य क्रोधयुक्त भृगुवंशियोंको ढूंढ२ मरवानेलगा एक स्त्रीने अपने बालक को अपनी जांघ (ऊरू) में छिपा लिया था—कार्तवीर्य्य इसका पता पागया और उस बालक को मारनेगया तब बालक अपनी माताकी जांघसे निकलपड़ा उसके तेजसे कार्तवीर्य अंधा होगया किंतु वह बालक ऊरू अर्थात् जांघसे उत्पन्न हुआथा उसका नाम और्व रक्खागया—

मनसा देवी ॥

भाई—वासुकि (नागोंका राजा) पति—जरत्कारुमुनि, पुत्र—आस्तिक—

जरत्कारुमुनि घूमते २ वहां पहुँचे जहांपर उनके पुरुषे टंगे हुये थे अपने मन में विचार किया कि इनको किसी भांति छुड़ाना चाहिये परन्तु सन्तान बिना यह कार्य्य नहीं होसक्ता इस कारण मुनि ने मनसासे साथ विवाहकिया जिससे आस्तिक उत्पन्न हुये इन्होंने नागों को राजा जनमेजयसे बचाया क्यों कि यह नागों को ढूंढ २ नाश कररहे थे— इस देवीकी पूजा करने से सांपका विष नहीं लगता एक चांद साहूकार के छः पुत्र सांप के काटने से मरगये तो उसने अपने बड़े लड़के को लोहेके पींजरे में बन्द कर दिया उसके विवाह के दिन उसको सांपने काटा और वह मरगया तब साहूकार ने मनसाकी पूजा की और वह पुत्र जीउठा—

खट्वांग ॥

वंशावली सूर्यवंशकी देखो-

यह अयोध्या का राजा त्रेता के आदि में महाप्रतापी था उन्हीं दिनों में दैत्यों ने देवतों को इन्द्रलोक से निकाल दिया तब खट्वांग की सहायता से देवतों की विजय हुई-देवतोंने वर देना चाहा राजाने कहा हमारी आयु बतला दीजिये देवतों ने बतलाया की चार घड़ी है राजाने कहा हमको शीघ्र अयोध्या में पहुँचादो देवतों ने वैसाही किया-राजाने अपने पुत्रको राज्यदिया और राज्य तज कर बैठ योगाभ्यास से दो घड़ी में बैकुण्ठ को गये-

विदुर ॥

पिता-व्यास, माता-विचित्र अम्बालिकाकी चेरी जो पूर्वजन्ममें धर्मराजथी-
स्त्री-पारसवी (राजा देवककी कन्या) भाई-धृतराष्ट्र और पाण्डु-

जब कौरवने पाण्डवका राज्य लेलिया तो विदुरने धृतराष्ट्रको समझाया परन्तु न माना और दुर्योधनने विदुर को दासीपुत्र कहकर सभासे निकाल दिया तब तीर्थयात्रा को चले गये और लौटकर यमुना किनारे मैत्रेय ऋषि के आश्रम पर बहुत दिन रह गये-जब उद्धवजी बदरिकाश्रम को जाते थे उन्होंने विदुरसे कृष्णके अन्तर्धान होने और कौरवों के नाश होने का वृत्तान्त कहा उसको सुनकर विदुर को बड़ादुःख हुआ-और तब आकर धृतराष्ट्र और गान्धारीको ज्ञान सिखा कर लेगए और जब सब पाण्डव हिमालयमें गलगये तो विदुरने अपना शरीर प्रभासतीर्थ में त्याग किया-

श्रवण ॥

इनके माँ बाप दोनों अन्धे थे और इनके कंधे पर बोझ लिये रहते थे, बड़ा दुःख झेलते-अपने माता पिता को कांवड़ में बैठालकर और अपने कन्धे लिये हुए मैं

वनको चलेगये श्रवण अपने मातापिता के हेतु एक तालाव में जल लेनेगये ज्योंही लोटे को पानी में डुवोया उसका शब्द राजा दशरथ ने (जो अहेर खेलते थे) सुना और मृगा समझ बाण सधान किया और श्रवण को बाण लगा, जब राजा दशरथ श्रवण पास गये बड़ा शोच किया श्रवणने कहा तुम जाकर मेरे मातापिता को जलपिलाओ यह कहकर श्रवण ने तनत्याग किया जब राजा अन्धी अन्धे के पास गये उन्होंने राजा के शब्द से जानलिया कि यह हमारा पुत्र नहीं है पा नी को नहीं पिया और राजा को शापदिया कि तुम भी अपने पुत्र के शोक में तन त्याग करोगे और तन त्याग किया--

दुर्वासाऋषि ॥

पिता-अत्रिमुनि, माता-अनसूया,
भाई-विधु (ब्रह्मा के अशसे) दत्त (विष्णु के अंशसे)-

दुर्वासा ने राजा अम्बरीष को शाप देकर कृत्या को उत्पन्न किया और आज्ञा दी कि यह राजा को मारे (अम्बरीष क०दे०)

परीक्षा हेतु दुर्वासा ने काल को रामचन्द्र के पास भेजा उस ने जाकर रामचन्द्र से कहा कि मैं आपसे एकान्तमें बात चीत करना चाहताहूं परन्तु बात करने समय कोई दूसरा न आवे यदि आवे तो मारा जावे जब बात करनेका समय आया तो दुर्वासा पहुंचे और लक्ष्मण से कहा कि रामचन्द्र से कहाजावे कि दुर्वासा आये हैं जब लक्ष्मण गये तो रामचन्द्रकी प्रतिज्ञानुसार लक्ष्मण को घर छोड़ना पड़ा और सरयू तटपर जा तन त्याग किया-

दुर्वासा ने परीक्षा हेतु श्रीकृष्ण और रुक्मिणी से रथ खिंचवाया-

एक समय द्रौपदी तालाव में स्नान करतीथी और कुछ दूरपर दुर्वासा न्हारहेथे उनका कोपीन गिरपड़ा और बहगया द्रौपदी ने यह देख अपना वस्त्र फाड़कर

वज्रनाभ ॥

महाभारत के अन्त में वज्रनाभ राजा अकेले बचे थे जिसको युधिष्ठिर ने इन्द्रप्रस्थ और मथुराका राज्य सौंपाथा-

मरुतराजा ॥

इस राजा ने बहुत यज्ञकिया और प्रतिदिन ब्राह्मणों को नये बर्तनों में भोजन कराता था और पुराने बर्तनों को गढ़े में गढ़ा देताथा-

उद्धव ॥

पिता-देवभाग, वंश-यदु-

उद्धव बड़े ज्ञानी और निर्गुण उपासक साधु और श्रीकृष्ण के परममित्र थे और यदुवंश उनके साथ २ रहते थे श्रीकृष्ण ने इनको मथुरा से गोकुल में गोपियों को ज्ञान सिखाने भेजाथा गोपिया सगुण उपासक क्योंकर निर्गुण होतीं पश्चात् उद्धव लज्जितहो मथुरा को लौटगये और उनके ज्ञान का गर्व दूरहुआ-

जब महाभारत के अन्तमें श्रीकृष्ण अन्तर्धान हुये तो उद्धव बदरिकाश्रम को चलेगये और योगाभ्यास से तन त्याग किया-

सृष्टि ॥

महाप्रलयके अन्त में नारायण ने शेषनाग की छातीपर सो २ इच्छाकिया तो उनकी नाभि से कमल उत्पन्नहुआ-कमल से ब्रह्मा-ब्रह्मा से सनक सनन्दन सनत्कुमार और सनातन हुये-(ब्रह्मा दे० दे०)-

सनकादि ॥

ब्रह्माने सनक, सनन्दन, सनत्कुमार और सनातन को उत्पन्न करके कहा

प्रियव्रत ॥

पिता–स्वायम्भुव मनु, माता–शतरूपा–
स्त्री–बर्हिष्मती (विश्वकर्मा की कन्या)–और शान्तिनी (देवतों ने दिया)–
पुत्र–अग्नीध्र आदि १० पुत्र (बर्हिष्मती से) और उत्तम, तापस, रैवत (शान्तिनी से)–
कन्या–यशवती–(बर्हिष्मतीसे जो शुक्राचार्यको विवाहीगई जिससे देवयानीहुई)

राजाप्रियव्रत पहिले राज्यछोड़ तपको गयेथे परन्तु ब्रह्मादि के उपदेश से फिर राज्य करने लगे ये चक्रवर्ती राजाथे इन्होंने एक रथ बनवायाथा जिसका प्रकाश सूर्य के समानथा जिससे जहा २ ये जातेथे रात्रिका दिन होजाताथा–

इसी रथपरचढ़ पृथ्वीकी ७ बार परिक्रमा की जिसके पहिया से ७ द्वीप और ७ समुद्र उत्पन्नहुये (जिनके नाम द्वीप और समुद्रों में देखो)–

पश्चात् पिताके समझाने से रथ का चलाना बन्द करदिया और अग्नीध्र को जम्बूद्वीपका राज्यदे स्त्री सहित तपको चलेगये–

अग्नीध्र ॥

पिता–प्रियव्रत, माता–बर्हिष्मती, स्त्री–पूर्वचित्ती अप्सरा–
पुत्र– उत्तम, हिरण्मय, भद्राश्व, केतुमाल, इलावृत, नाभि, किम्पुरुष, भरत, नरहरि–

अग्नीध्र प्रथम राज्य छोड़ तपको गये और ऐसा तपकिया कि इन्द्रने पूर्वचित्ती अप्सराको राजाका तप भंग करने के हेतु भेजा राजा उसपर मोहित होगये और अपने राज्य में आय उसके साथ विवाह करलिया–१० सहस्र वर्ष राज्य करने उपरान्त जम्बूद्वीप का राज्य अपने ६ पुत्रोंको बांटदिया और इन्हीं पुत्रों के नाम से जम्बूद्वीप के ...खण्डआदि ६ खण्ड प्रसिद्ध हुये–और

जिनके नाम यह हैं-उत्कल, हिरण्मय, भद्राश्व, केतुमाल, इलावृत, नाभि, किम्पुरुष, नरहरि और रमणकखण्ड-

२ पाकरद्वीप-दो लाख योजनका है इसमें पाकरका वृक्ष है उसमें अमृत आदि ७ खण्ड हैं-

३ शाल्मलिद्वीप-४ लाख योजन का है इस में सेमरका वृक्ष और आठ पर्वत हैं और इसमें सूर्य नाम आदि ७ खण्ड हैं-

४ कुशद्वीप-आठ लाख योजनका है इसमें कुशका वृक्ष है और सकृत आदि सात खण्ड हैं-

५ क्रौंचद्वीप-सोलह लाख योजनका है इसमें क्रौंच पर्वत है और व्यास नाम आदि सात खण्ड हैं-

६ शाकद्वीप-३२ लाख योजन का है इसमें शाकका वृक्ष है और देवव्रिग नाम आदि ७ खण्ड हैं-

७ पुष्करद्वीप-६४ लाख योजन का है इसमें कमलका वृक्ष है और कुमरादि आदि ७ खण्ड हैं-

सात समुद्रों के नाम यह हैं ॥

१ क्षारसमुद्र-जम्बूद्वीप में
२ इक्षुरोदधि-पाकरद्वीप में
३ सुरोदधि-शाल्मलिद्वीप में
४ घृतोदधि-कुशद्वीप में
५ क्षीरोदधि-क्रौंचद्वीप में
६ मण्डोदधि-शाकद्वीप में
७ शुद्धोदकोदधि-पुष्करद्वीप में

पर्वतों के नाम ॥

१ सुमेरुपर्वत-सोनेका इलावृत खण्डमें है जिसकी उंचाई ६४ सहस्रकोश, लम्बाई ३२ सहस्रकोश, चौडाई १२८ सहस्रकोश है-इसपर्वतके चारों

थोर ४ पहाड़ मन्दर, मेरु, कुमुद औ सुपार्श्व हैं और ४ कुण्ड दूध, शहद, पानी और रसके हैं और ४ वाटिका कुवेर, इन्द्र, वरुण और महादेवकी हैं–पर्वतके शिखरपर ब्रह्मपुरी ४० सहस्रकोश लम्बी और उतनीही चौडी है और चारपुरी अर्थात् वरुणपुरी, यमपुरी, इन्द्र पुरी और कुवेरपुरी हैं–रातोदिनमें ह २ घटेके पोछे सूर्य्यका रथ इन पुरियों म पहुंचताहै–पार्वतीजी के शापसे देवतों को गर्भ रहा जिससे सुमेरु हुआ–

२ लोकालोकपर्व्वत–सातों द्वीपके बाहर है जहापर सूर्य्य और चन्द्रमा नहीं पहुंचते–५० सहस्रकोश पृथ्वी इसके नीचे दबीहै–

३ गंगोत्तरी–ब्रह्मपुरी से गगाजी निकलकर सुमेर पर्वतके नीचे गगोत्तरी पर गिरती है–

४ मन्दराचल–सुमेरु पर्वत के नीचे है–

५ नरनारायण–मन्दराचल और गगोत्तरी के बीचमें है–

६ चित्रकूट–जिला बान्दामें है जहापर वनजाते समय रामचन्द्र ठहरेथे इसको कामतानाथभी कहते हैं जिसकी लोग परिक्रमा करते हैं यहा पवित्र स्थान भरतकूप, पयस्विनी और अनसूयाश्रम है–

७ गोवर्द्धन–मथुरा में जिसको श्रीकृष्णजी ने अपनी अगुली पर रखलिया था और ग्वालों से उसकी पूजा कराई थी (कृष्ण व० २०)–

८ त्रिकूट–लङ्कामें है इसकी तीन चोटी सोनेकी हैं प्रकाश इसका सूर्य्य + समान है–यह २० सहस्र योजनका क्षीरसागरमें है–

९ मैनाक–समुद्र में छिपाया समुद्र ने इसको आज्ञा दी कि तू हनुमान्‌जी को (जब जानकी के खोज में जाते थे) विश्राम दे हनुमान् ने केवल स्पर्श करलिया था–

१० गन्धमादन–जहापर मुचुकुन्द सोते थे (मुचुकुन्द श० दे०)–
११ प्रवर्षण–जरासंधके डरसे श्रीकृष्ण और बलराम इसपर चढ़गये और जरासंध ने आग लगादी (जरासंध श० दे०)–इसीपर्वत पर वनजाने समय रामचन्द्र ठहरे थे यह किष्किंधानगरके निकट है–
१२ विंध्याचल अर्थात् विंध्य–भारतखण्डके मध्यमें पूर्व पश्चिम चलागयाहै–
१३ द्रोणाचल–क्षीरसागरमें है–
१४ देवकूट–मेरुके पूर्व व दक्षिण में कैलास और करीर आदि–उत्तर में त्रिशृंग और मकर–
१५ अर्बुद अर्थात् आबू–अजमेर में है–
१६ मेकलाचल–अर्थात् मनपुरा जिससे नर्मदा निकलती है–
१७ नीलगिरि–दक्षिणदेशमें है यहा पर काकभुशुण्डि रहतेथे यार दूसरा नील गिरि उड़ीसामें जहांपर नीलमाधव भगवान् का स्थान है–

नदियों के नाम ॥

जब नरनारायणने त्रिविक्रमरूप धारण किया तो जो उन का पद चरण ब्रह्म लोक में पहुचा उस को ब्रह्मा ने विष्णुपदी के जल से कमण्डलु में भरलिया जो जल कमण्डलु से गिरा उस से चार नदी निकलीं–
१ धारा–सुमेरुके पश्चिम से निकल समुद्र में मिल गई–
२ धारा–सुमेरु के दक्षिण से निकल समुद्रमें गिरी–
३ धारा–सुमेरु के उत्तर से निकल समुद्र मे मिली–
४ धारा–(गंगा) सुमेरुके पूर्वमे निकल समुद्र में मिली जिसको भागीरथी भी कहते हैं (गंगा श० दे०)
५ विरजा–सुमेरु पर्वत पर है—

६ कौशिकी अर्थात् कोसी–जहा पर राजा परीक्षित को शाप हुआ था (परीक्षित क०३०)
७ सरस्वती–एक सरस्वती तो गजरतानामें है और दूसरी प्रयाग में गंगा यमुना के संगम में है–
८ तमसा अर्थात् बिसुही–फैजाबाद और सुल्तापुर के बीचमें है यहा पर वन जाते समय रामचन्द्र का प्रथम वास हुआ––
९ कर्मनाशा–काशी के पूर्व में है (त्रिशंकु क०३०)
१० कीर्त्तिमाला–द्रविड़देश में है (मत्स्य क०३०)
११ गंडकी–तुलसी का अवतार है जिसमें शालिग्रामकी मूर्त्तिपाईजातीहैं–
१२ मणिकर्णिका–काशी में जहापर विश्वनाथ का स्थान है–
१३ वरुणा–काशी में है जिसपर गिरीश्वरनाथ व वारुणी का नहान होताहै–
१४ रेवा अर्थात् नर्मदा–दक्षिणमें है जहापर गिर के पत्थर से लिंग हैं– और इसके सब पत्थर शिवलिंग के तुल्यहैं इसको मेकलसुता भी कहते हैं–
१५ मंदाकिनी अर्थात् पयस्विनी–चित्रकूट में है (अत्रि क०३०)

नगरऔर देशोंकेनाम ॥

१ पंचवटी–दक्षिण देशमें है जिस में दण्डकवनहै वहापर वन जाते समय रामचन्द्र और जटायु से भेंट हुई–
२ पंपापुर–इसीको नासिक कहते हैं यहाँ पर सूर्पणखा की नाक कटीगई–
३ बदरीनाथ अथवा बदरिकाश्रम–हिमालयपर्वतपर है
४ शृंगबेरपुर–अर्थात् रामचौरा और सिंगरौर गंगातीरपर प्रयागकेपश्चिमहै–
५ कनखल–हरद्वार के पास है यहा पर दक्षने यज्ञ कियाथा–
६ हरद्वार–यहापर गंगाजी पर्वत से नीचे आई है–

७ थानेश्वर अर्थात् हरपुर–यहांपर विष्णु और दधीचि से क्षुपराजा के हेतु युद्धहुआ–महादेवका स्थानभी है––

८ काशी–दूसरेनाम–वाराणसी,आनन्दवन और महाश्मशान हैं–यह महादेव का मुख्य स्थान है–

९ द्रुपदपुरी–पश्चिम में है (द्रुपद क०दे०)

१० प्रतिष्ठानपुर–प्रयाग के निकट गंगातीरपर पूर्व के निकट है–

११ विदर्भनगर–दक्षिणदेशमें है–

१२ अवन्तीपुर–अर्थात् उज्जैन मालवदेशमें है–

१३ जनकपुर–नैपाल में है दूसरा नाम मिथिला (जनक क०दे०)

१४ पाटलीपुत्र–अर्थात् पटना–

१५ मृत्तिकावती–

१६ नन्दीग्राम अर्थात् भरतकुंड–फैजाबाद और सुल्तानपुरके बीचमें है–(भरत क०दे०)

१७ मगधदेश–दूसरा नाम बिहार है–

१८ पाञ्चालदेश–जिसको अब पंजाब कहते हैं–

वनोंके नाम ॥

१ दण्डकवन–पंचवटीके निकट–

२ आनन्दवन–काशी के निकट–

३ दारुकवन–जिसको अरब कहते हैं (दारुक क०दे०)

४ मधुवन–चित्रकूट में अत्रिके आश्रमके निकट–

५ कदलीवन–बंगाले में–

६ वृन्दावन–मथुराके निकट है (जलधर क०दे०)

७ सौगन्धिकवन–मन्दराचलपर्वत पर जहां पर मन्दार पुष्प होते हैं–

४ बुध-बुध का रथ मंगल के रथ से एकलाख योजन ऊंचे रहताहै-
५ बृहस्पति-इनका रथ बुधके रथसे एकलाख योजन ऊपर रहताहै-
६ शुक्र-इनका रथ बृहस्पति के रथसे एकलाख योजन ऊपर चलताहै-
७ शनैश्चर इनका रथ शुक्रके रथ से एकलाख योजन ऊपर चलताहै-
८ राहु-इनका रथ शनैश्चर के रथ से एकलाख योजन ऊपर चलताहै, रथ का विस्तार १७ लाखयोजनहै और जब सूर्य और चन्द्रमा के बराबर आजाता है तो ग्रहणहोताहै-
९ केतु-

राशि वा लग्न बारहहैं-उनके नाम यहहैं-

मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या तुला, वृश्चिक, धन, मकर, कुंभ और मीन-

ध्रुवतारा-ध्रुव भक्तको अचल स्थान मिला (ध्रुवक०दे०) और सदा उत्तर में दिखाई देताहै-इस तारेका आकार सुइसकासा है इससे दूसरा नाम शिशुमार है-

सप्तऋषीश्वर-तारारूप हैं और ध्रुवके आसपास घूमते हैं-उनके नाम यह हैं-वशिष्ठ, भृगु, कश्यप, अंगिरा, अगस्त्य, अत्रि, पुलह-

नक्षत्र-२७ हैं, और बिना आश्रय वायु के सहारे से ध्रुवके आसपास घूमते हैं-चन्द्रमा की स्त्री हैं और दक्ष की कन्या हैं (दक्षक०दे०)-इनके नाम यह हैं-अश्विनी, भरणी, कृत्तिका, रोहिणी, मृगशिरा, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा, मघा, पूर्वाफाल्गुनी, उत्तराफाल्गुनी, हस्त, चित्रा, स्वाती, विशाखा, अनुराधा ज्येष्ठा, मूल, पूर्वाषाढ़, उत्तराषाढ़, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिष, पूर्वभाद्रपद, उत्तरभाद्रपद, रेवती-

लोक ॥

लोक-१४ हैं इनमें सात ऊपर और सात नीचे हैं ऊपर के सात लोकों में

हरएक लोक १० कोटि योजन है और उनके नाम यह हैं–

१ भूलोक–जिसमें मनुष्यों का राज्य है–(भूलोक दे०)

२ भुवर्लोक–जिसमें ७ उपलोक हैं–पिशाचपुर, गुह्यकलोक, गन्धर्वलोक, विद्याधरलोक, सिद्धलोक, अप्सरलोक, राहुलोक–

३ स्वर्लोक–जिसमें यह उपलोक है–सूर्यलोक, चन्द्रलोक, ग्रहलोक, नक्षत्र लोक, ऋषिलोक, ध्रुवलोक–

४ महर्लोक–देवतों का राज्य है–

५ जनलोक–भृगुआदि मुनि यहां रहते हैं

६ तपलोक–तपस्वियों को तप उपरान्त यहां रहना होताहै–

७ सत्यलोक–ब्रह्मा और वेदपाठी और मकरस्नानकरनेवाले इसलोकमें रहतेहैं–

नीचे के सातलोक जिनमें हरएक का विस्तार १० सहस्र योजन है यहहैं–

१ अतल–इसमें मयदानवका राज्य है विद्या इसमें इन्द्रजाल है–

२ वितल–मयके बेटेका राज्य है विद्या इसमें भानमती है–वहींपर हाटकेश्वर हैं जिनके वीर्य से देवतों के लिये सोना उत्पन्न हुआ–

३ सुतल–राजाबलिका राज्यहै–

४ तलातल–त्रिपुर दानव राज्य करता है–

५ महातल–काली वा तक्षक या कद्रू आदि सर्पों का राज्य है–

६ रसातल विराट दानवका राज्य है–

७ पाताल–शेषनाग और वासुकिआदि नागोंका राज्य है–

नरक ॥

नरक सुमेरुपर्वत से ९९ योजन दक्षिणओर धरती के नीचे पानी के ऊपर है

पून, पृदि आदि चारों वर्णके पितर (कं०दे०) इनके द्वारेपर बैठकर अपने २ परिवार के लोगोंको दुःखोंसे रोका करते हैं-नरक २८ हैं परन्तु कोई २ कहते हैं कि इक्कीसही हैं अर्थात् अन्तके सात छोड़कर इनके नाम यह हैं-तामिस्र, लोहदण्ड, महाभैरव, शाल्मल, रौरव, कुमुद्गल, भीष्म, भयङ्कर, पूतरज, काल्सूत्र, सघात, तापन, कराल, सञीवन,महापथ, विचर्चित, अन्ध,कुम्भीपाक,असिपत्र, पतन, अग्निमथन, क्षारकर्दम गरलभोजन, शूलप्रोत, दण्डशूल, घोर, अवनिरोधन, सूचीमुख-

सविता देवता ॥

स्त्री-पृश्नी, पुत्र-अग्निहोत्रादि तीन, कन्या-सावित्री आदि तीन-

गजेन्द्र ॥

पूर्व जन्ममें यह इन्द्रद्युम्ननामी राजाथा इसके यहां अगस्त्यमुनि आये और इसने निरादर किया और उनके शापसे राजा हाथी होगया-

बल इसके एक सहस्र हाथीकाथा-स्थान रहने का त्रिकूटपर्वत है-

एक समय किसी तालाव में क्रुद्ध होकर जल पीनेको एक ग्राह ने पकड़ लिया बहुत यत्नकिया परन्तु उसकी दाल नहीं गली जब इसके कुटुम्बवाले भागगये तो इसने परमेश्वर का ध्यानकिया परमेश्वर ने हरिरूप धरकर ग्राह को मार इसका उद्धारकिया-ग्राह पीछे कि मैं पूर्वजन्ममें गन्धर्वथा देवलऋषिको स्नान करते समय मैंने ग्राहरूप धरकर खींचा और मुनिके शापसे मैं ग्राह होगया पीछे मुनिने दयाकरके आशीष दिया कि तू भगवद्दर्शन कर फिर गन्धर्व तन पावेगा-

मोहिनी अवतार ॥

जब देवासुर ने समुद्रमथनमें अमृतआदि १४ रत्न निकाले (कच्छप० ३०)

दक्षिण का राज्य में जिससे सूर्यवंशी राजाहुये—सुद्युम्न ने अपनी गद्दी पर पुरूरवाको बैठाला जिससे चन्द्रवंशी राजाहुये और आप विरक्तहो मुक्त हुआ श्राद्धदेवने कुछ दिन तप करके फिर १० पुत्र उत्पन्नकिये उनमें से—१ इक्ष्वाकु—२ पृषध्र जो वशिष्ट की गौवें चराता था एक दिन गायको बाघने पकड़ा इसने बाघको तलवार से मारा उस बाघका कान कटगया और उसी तलवार के लगने से वह गाय मरगई तब वशिष्ठ के शापसे वह अहीर के यहां जन्मे और वन में हरिभजन करके भस्महोगये—३ कवि यह परमहंसहोगये—४ करुष इनसे कारूषी क्षत्रिय हुये—५ दृष्टधृक जिससे धार्ष्ट क्षत्रीहुये और पीछे से वे लोग ब्राह्मण होगये—६ नृग इनके वंश में सुमन्तसे लेकर अग्नि तक क्षत्रियरहे पीछे अग्निकी सन्तान ब्राह्मण होगई—७ नभग इनसे धर्म्मात्मा सन्तानहुई इसके वंश में तृणबिन्दु की अलम्बुषा अप्सरा से इडविड़ा कन्याहुई जो विश्रवा को ब्याही गई जिससे कुबेरहुये और नभग के शाल पुत्रसे हेमचन्द्र, सोम आदिराजाहुये—८ शर्याति जिससे सुकन्या हुई और च्यवनमुनिको ब्याही गई—९ वह्निक ये विद्या पढ़ने चलेगये उसी समय में उनके भाइयों ने राज्य आपस में बांटलिया और वह्निक का भाग न लगाया तब पिताने कहा कि अंगिरसकी यज्ञ कराकर जो शेषधन बचे वह वह्निक को दियाजाय वह्निक चक्रवर्ती राजाहुआ—

जल ॥

दूसरेनाम—वारि, पय, नीर, तोय, पथ—
जलज—कमलको कहते हैं—
जलसुत—जोंक (जिसका भक्ष्य रुधिर है)—

दिक्पाल ॥

दिशा	हाथी	हाथियों की स्त्री	दिक्पाल
पूर्व	ऐरावत	[illegible]	इन्द्र
आग्नेयकोण	पुण्डरीक	कपिला	अग्नि
दक्षिण	वामन	पिङ्गला	यमराज
नैऋत्यकोण	कुमुद	अनुपमा	नैऋत्य
पश्चिम	अञ्जन	ताम्रकर्णी	वरुण
वायव्यकोण	पुष्पदन्त	शुभ्रदन्ता	पवन
उत्तर	सार्वभौम	अङ्गना	कुबेर
ईशानकोण	सुप्रतीक	अञ्जनावती	ईश

इन्द्रिय ॥

इन्द्रिय दशहैं पांच ज्ञानेन्द्रिय और पांच कर्मेन्द्रिय और १ अन्तर इन्द्रिय है पांचों ज्ञानेन्द्रियों के नाम यह है और क्रमसे उनके स्वामी भी लिखे हैं-

इन्द्रिय-१ चक्षु, २ श्रोत्र, ३ त्वचा, ४ रसना, ५ घ्राण-

स्वामी-१ सूर्य्य, २ दिशा, ३ पवन, ४ वरुण, ५ अश्विनी कुमार-

पांचकर्मेन्द्रिय के नाम और क्रमसे उनके देवता यह है-

इन्द्रिय-१ मुख, २ हाथ, ३ पांव, ४ गुदा, ५ लिंग

देवता-१ अग्नि, २ इन्द्र, ३ विष्णु, ४ मित्र, ५ ब्रह्मा

अन्तरइन्द्रिय-मनहै जिसका देवता चन्द्रमा है-

अवस्था ॥

अवस्था ४ हैं-१ जाग्रत, २ स्वप्न ३ सुषुप्ति ४ तुरीय-

अवस्था ३ हैं—बाल्यावस्था, युवावस्था और वृद्धावस्था—

दुर्गा ॥

दुर्गानवर्ग—काली, कात्यायनी, ईशानी, चामुण्डा, मुण्डमर्दिनी, भद्रकालिका भद्रा त्वरिता और वैष्णवी—

दुर्गा—नाम इसकारण हुआ कि इन्होंने दुर्गानन्द के पुत्र दुर्गको मारा जिसने ब्रह्माके वरसे इन्द्र और सूर्य आदि देवतों को जीतलियाथा—

दशभुजा—रूपधारणकरके शुम्भराक्षस और उसके सेनापति धूम्रलोचनको हना—

सिंहवाहिनी—(भुजा—चार, वाहन—सिंह) रूपधारणकरके चण्ड और मुण्ड राक्षसों को भक्षण करलिया—

महिषमर्दिनी—रूपसे महिषासुरको वधकिया—

जगधारिनि—रूपसे असुरदल संहार किया (भुजा—चार वाहन—सिंह, अस्त्र गदा और धनुषबाण)—

काली—रूपसे (चंडीदेवी की सहायतासे) रक्तबीज असुरको मारा जब रक्तबीजका रक्त पृथ्वीपर गिरताथा तो अनेक असुर उससे उत्पन्न होतेथे इसकारण काली ने उसका रक्त अपने मुखमें लेलिया और चण्डी ने उसको मारडाला—

मुक्तकेशी—रूपधारणकर असुर वधकिया— (भुजा—चार, अस्त्र—खड्ग, और शिवकी छातीपरखड़ी)—

तारा—रूपकर शुम्भदैत्यको मारा—

छिन्नमस्तका—रूपसे निशुम्भराक्षसकोमारा (वर्ण उनका गोरा और नंगी, बेशिर मुण्डोंकीमाला पहिनेहुये शिवकी छातीपर सवार हैं)—

जगद्गौरी—जब राक्षसों को मारचुकीतो शंख, चक्र, गदा और पद्म लियेहुये यह रूपधारणकिया और देवताओं ने उनकी स्तुतिकी—

१६ रामेश्वर–(दक्षिणमें)–
१७ जगन्नाथजी (उडीसा –
१८ अयोध्याजी–हनुमान् गढ़ी, सुग्रीवटीला जन्मस्थान नागेश्वरनाथ, लक्ष्मणकिला–

सूर्यवंश

नारायणकी नाभिमें–
|
कमल
|
ब्रह्मा
|
मनु
|
मरीचि
|
कश्यप
|
सूर्य
|
श्राद्धदेव (क॰ दे॰)
|
पुत्र–इक्ष्वाकु, नभग, धृष्टि, शर्याति, नरिष्यन्त, प्रांशु नृग, दिष्ट, करूष, पृषध्र–कन्या–इला। जो वशिष्ठकी आशिष से पुत्रहोगया उसका नाम सुद्युम्न हुआ–
(श्राद्धदेव क॰ दे॰)–

और कुछ हाथ नहीं लगता है आशा है कि सर्व महाशयजन अवश्यही इसको देखेंगे और इसकी एक २ प्रति खरीदकर अपने घरको सुशोभित करेंगे अधिकिमधिक वहुज्ञेष्विसलम् ॥

श्रीमद्भागवत भाषाटीका सयुक्त की० ७) पु०

इस ग्रन्थ के उत्तम होने में कदापि सन्देह नहीं है—इसका भाषा तिलक व्रज बोली में बहुतही प्याराहै आशय प्रत्येक श्लोकों का है क्यों न हो इसके तिलककार महात्मा व्रजवासी अङ्गदजी शास्त्री हैं- यह तिलक ऐसा सरलहै कि इसके द्वारा अल्पसंस्कृतज्ञ पुरुषों का पूरा कार्य निकल सक्ता है--संस्कृतपाठक भी इससे श्लोकों का पूरा आशय समझ सक्ते हैं इसवार यह ग्रन्थ टैपके अक्षरों में उम्दा कागज सफेद चिकना में छपा गया है और विशेष विद्वान शास्त्रियों के द्वारा शुद्ध कराया गया है जिससे बम्बई की छपीहुई पुस्तक से किसी काम में न्यून नहीं है उम्दा तसावीर भी प्रत्येक स्कन्ध में युक्त है—आशाहै कि इस अमूल्यग्रन्थ के लेने में महाशय लोग विलम्ब न करेंगे मूल्य भी इसका स्वल्प रक्खा गया है ॥